कुण्डली फलादेश

Sample Horoscope

यह मॉडल फलादेश एवं गणना का सबसे विस्तृत मॉडल है। 200 से अधिक पृष्ठों की यह लम्बी जन्मपत्रिका सर्वश्रेष्ठ एवं सम्पूर्ण मॉडल है जिसमें वैदिक ज्योतिष के साथ-साथ अंकशास्त्र, लाल किताब, एस्ट्रोग्राफ एवं योगों की चर्चा की गई है। पराशर पत्रिका में पराशर, जैमिनी एवं के.पी पद्धतियों के अनुसार गणना की गई है जिसमें विंशोत्तरी एवं योगिनी दशा की गणना सूक्ष्म स्तर तक की गई है। इसमें रत्न, रुद्राक्ष, मंत्र एवं दान जैसे उपायों का भी विवरण है। इसमें पितृदोष, साढ़े साती एवं कालसर्प दोष की भी चर्चा इनके उपायों सहित की गई है।

इसमें आने वाले 10 वर्षों का फलादेश महादशा एवं अन्तर्दशा के फल के साथ किया गया है साथ ही इसमें 1 वर्ष की अवधि का मासिक फलादेश भी दिया गया है। जिसमें जीवन के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे स्वास्थ्य, वित्त, आजीविका, परिवार इत्यादि शामिल हैं।

SrNo: 101-111-105-1030 / 276 Date: 18/04/2017

Sample Horoscope

28 Dec 1987

10:30 AM

Delhi

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। लियो स्टार द्वारा बनाए जाने वाले जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

फ्यूचर पॉइंट कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए फ्यूचर पॉइंट उत्तरदायी नहीं है।

Sample Horoscope

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**28/12/1987**
दिन	सोमवार
जन्म समय	**10:30:00 घंटे**
इष्ट	08:13:11 घटी
स्थान	**Delhi**
देश	India

अक्षांश	28:39:00 उत्तर
रेखांश	77:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	10:08:52 घंटे
वेलान्तर	-00:01:15 घंटे
साम्पातिक काल	16:33:25 घंटे
सूर्योदय	07:12:43 घंटे
सूर्यास्त	17:32:13 घंटे
दिनमान	10:19:30 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	12:13:20 धनु
लग्न के अंश	06:10:31 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**रेवती - 2**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	परिघ
करण	बालव
गण	देव
योनि	गज
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	पूर्व
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दो-दौलत
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	पौष	7
पंजाबी	संवत : 2044	पौष	13
बंगाली	सन् : 1394	पौष	12
तमिल	संवत : 2044	मार्गड़ी	13
केरल	कोल्लम : 1163	धनु	13
नेपाली	संवत : 2044	पौष	13
चैत्रादि	संवत : 2044	पौष	शुक्ल 9
कार्तिकादि	संवत : 2044	पौष	शुक्ल 9

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 9
तिथि समाप्ति काल _____: 26:15:07
जन्म तिथि _____: 9
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 24:38:22 घंटे
जन्म योग _____: रेवती
सूर्योदय कालीन योग _____: परिघ
योग समाप्ति काल _____: 25:29:53 घंटे
जन्म योग _____: परिघ
सूर्योदय कालीन करण _____: बालव
करण समाप्ति काल _____: 14:32:30 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 24:19:30
भभोग _____: 59:40:25
भोग्य दशा काल _____: बुध 10 वर्ष 0 मा 9 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरूड़
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

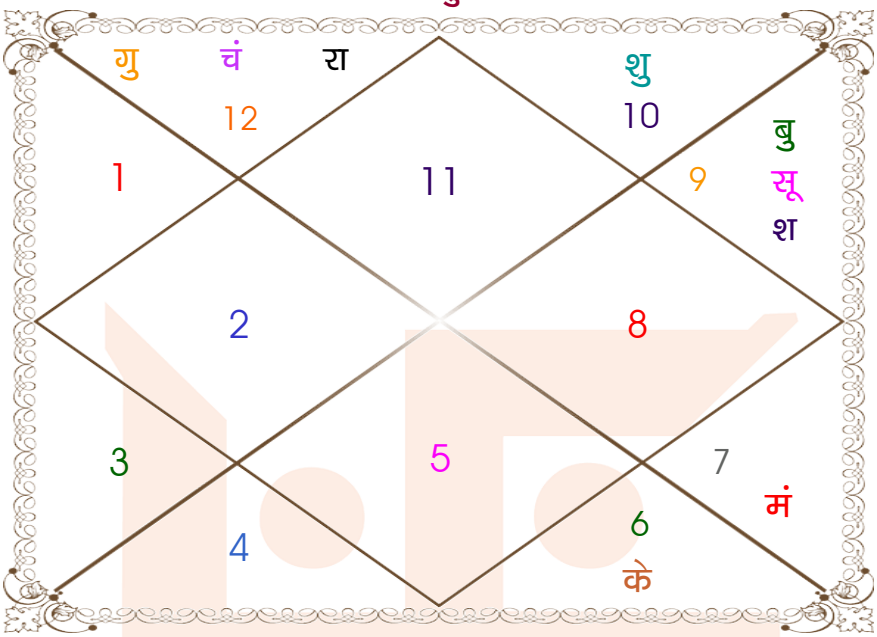

चन्द्र कुंडली

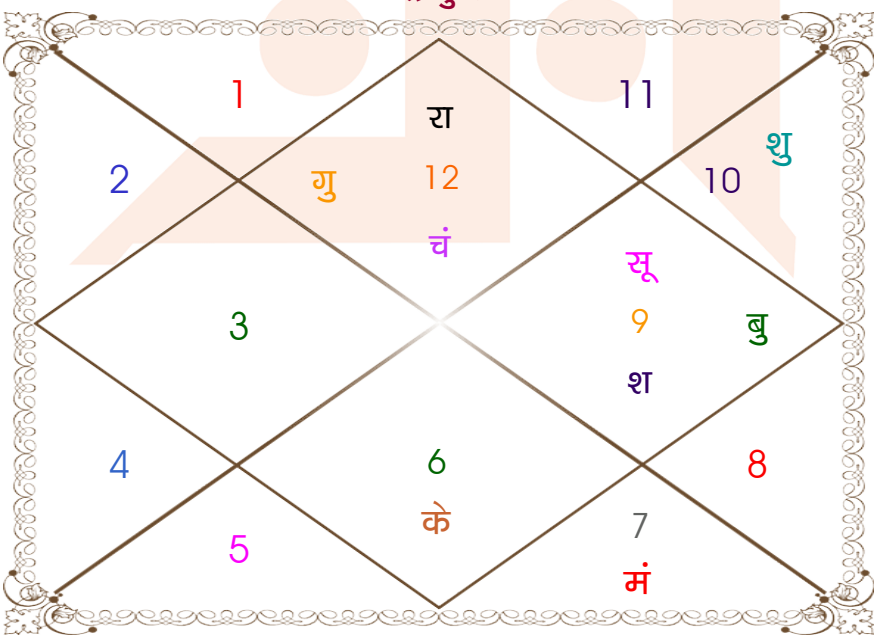

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

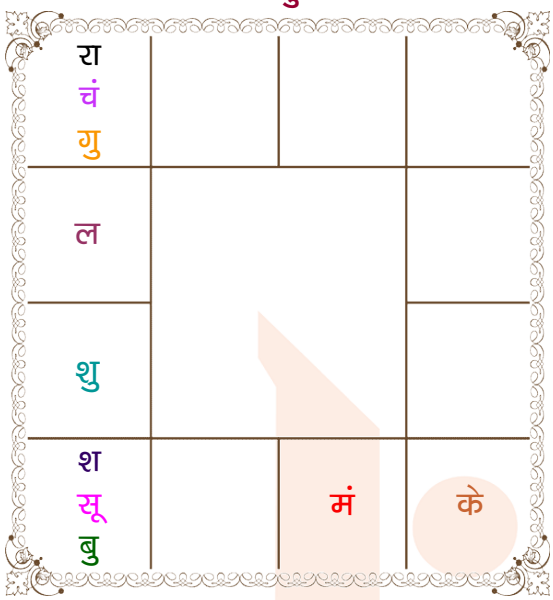

लग्न कुंडली

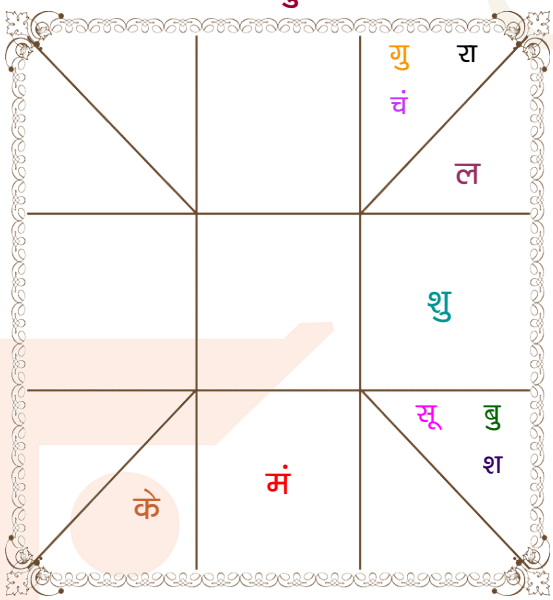

विंशोत्तरी
बुध 10वर्ष 0मा 9दि

बुध

28/12/1987

07/01/2101

बुध	06/01/1998
केतु	06/01/2005
शुक्र	06/01/2025
सूर्य	06/01/2031
चन्द्र	06/01/2041
मंगल	07/01/2048
राहु	06/01/2066
गुरु	06/01/2082
शनि	07/01/2101

योगिनी
उल्का 3वर्ष 6मा 14दि

भद्रिका

12/07/2016

12/07/2021

भद्रिका	22/03/2017
उल्का	21/01/2018
सिद्धा	11/01/2019
संकटा	21/02/2020
मंगला	11/04/2020
पिंगला	22/07/2020
धान्या	21/12/2020
भ्रामरी	12/07/2021

गणना

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है।

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग होती हैं। इन गणनाओं में सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण ज्योतिषीय गणनाएं जैसे ग्रहों के अंश, महत्वपूर्ण कुण्डलियां, ग्राफ और दशा गणना आदि शामिल हैं। प्रत्येक गणना के अपने सिद्धान्त व महत्व हैं। इन्हीं सटीक गणनाओं की सहायता से ही ज्योतिषी जातक के भूत, भविष्य व वर्तमान के बारे में सही अनुमान लगा पाता है।

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	06:10:31	478:59:00	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	---
सूर्य			धनु	12:13:20	01:01:08	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	मित्र राशि
चंद्र			मीन	22:08:09	13:25:52	रेवती	2	27	गुरु	बुध	सूर्य	सम राशि
मंगल			तुला	28:43:24	00:39:44	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	सम राशि
बुध		अ	धनु	15:02:15	01:36:22	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	सम राशि
गुरु			मीन	26:21:18	00:02:38	रेवती	3	27	गुरु	बुध	गुरु	स्वराशि
शुक्र			मक	13:38:47	01:14:02	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	राहु	मित्र राशि
शनि		अ	धनु	01:20:02	00:07:01	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	सम राशि
राहु	व		मीन	03:21:30	00:00:40	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
केतु	व		कन्या	03:21:30	00:00:40	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	03:44:47	00:03:36	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	---
नेप			धनु	13:57:11	00:02:16	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लूटो			तुला	18:12:32	00:01:38	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	चंद्र	---
दशम भाव			वृश्चि	16:18:18	--	अनुराधा	--	17	मंगल	शनि	गुरु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:41:22

लग्न-चलित

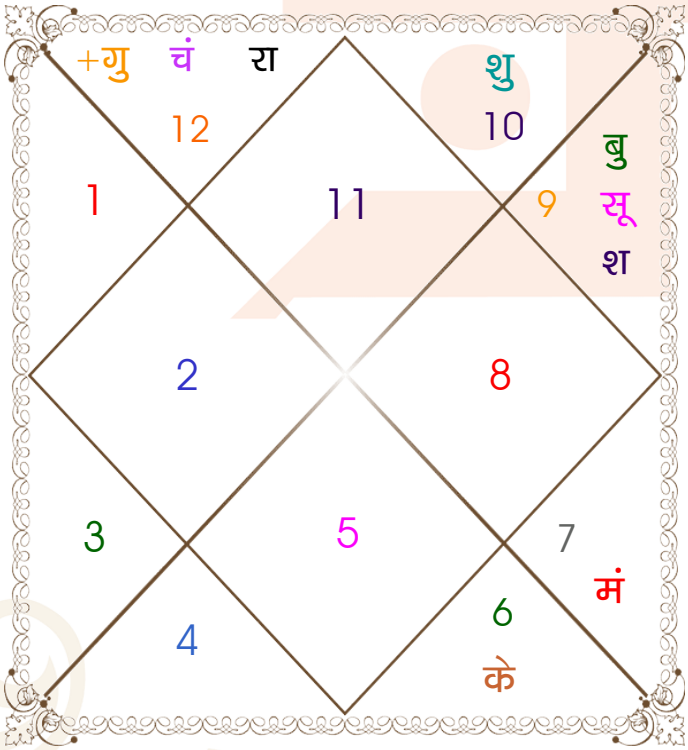

चन्द्र कुंडली

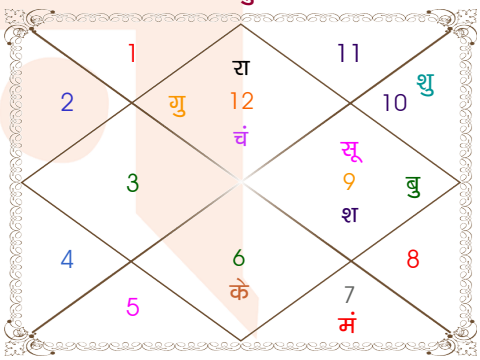

नवमांश कुंडली

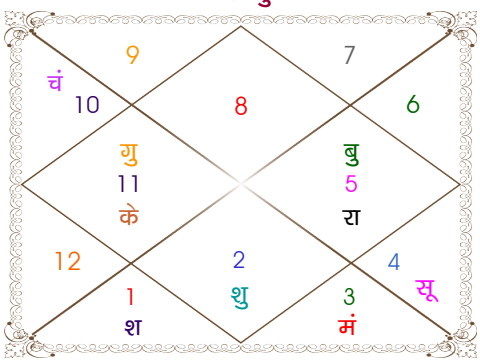

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मकर	22:51:48	कुम्भ	06:10:31
2	कुम्भ	22:51:48	मीन	09:33:06
3	मीन	26:14:24	मेष	12:55:42
4	मेष	29:37:00	वृष	16:18:18
5	वृष	29:37:00	मिथुन	12:55:42
6	मिथुन	26:14:24	कर्क	09:33:06
7	कर्क	22:51:48	सिंह	06:10:31
8	सिंह	22:51:48	कन्या	09:33:06
9	कन्या	26:14:24	तुला	12:55:42
10	तुला	29:37:00	वृश्चिक	16:18:18
11	वृश्चिक	29:37:00	धनु	12:55:42
12	धनु	26:14:24	मकर	09:33:06

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	06:10:31
2	मीन	17:05:45
3	मेष	20:07:35
4	वृष	16:18:18
5	मिथुन	09:47:41
6	कर्क	04:42:02
7	सिंह	06:10:31
8	कन्या	17:05:45
9	तुला	20:07:35
10	वृश्चिक	16:18:18
11	धनु	09:47:41
12	मकर	04:42:02

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली

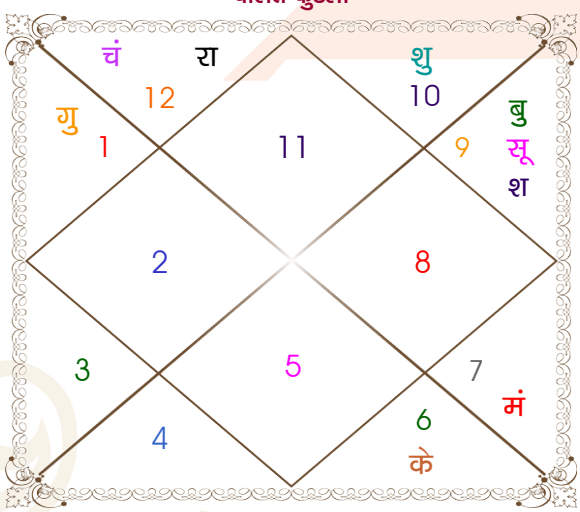

भाव कुंडली

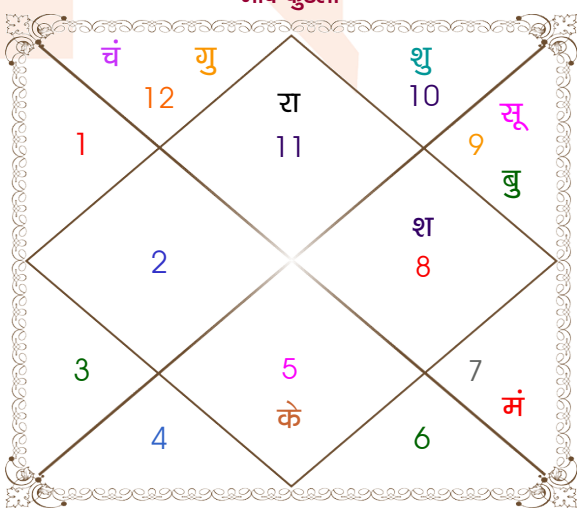

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	युवा	मुदित	उपवेशन	4.61	26 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	कुमार	शान्त	प्रकाश	3.48	35 %
मंगल	आत्मा	भ्रातृ	मृत	शान्त	नृत्यलिप्सा	3.02	28 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	युवा	विकल	उपवेशन	0.00	79 %
गुरु	अमात्य	धन	बाल	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	4.75	80 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	युवा	मुदित	नृत्यलिप्सा	6.32	22 %
शनि	कलत्र	आयु	बाल	विकल	कौतुक	4.62	56 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	शान्त	आगमन	0.00	37 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	37 %
कुल						**26.80**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद

चलित कुंडली

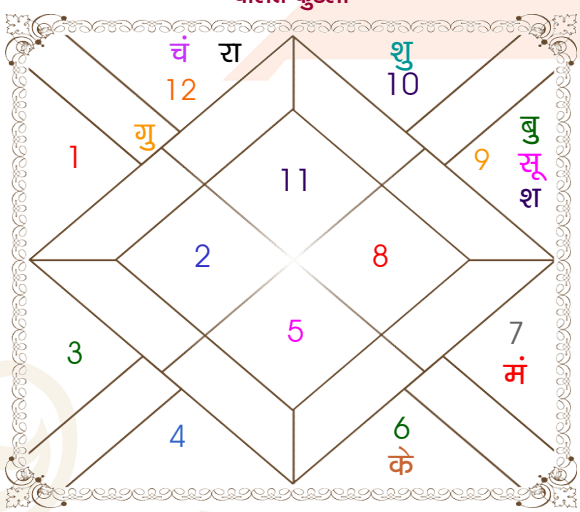

लग्न-चलित

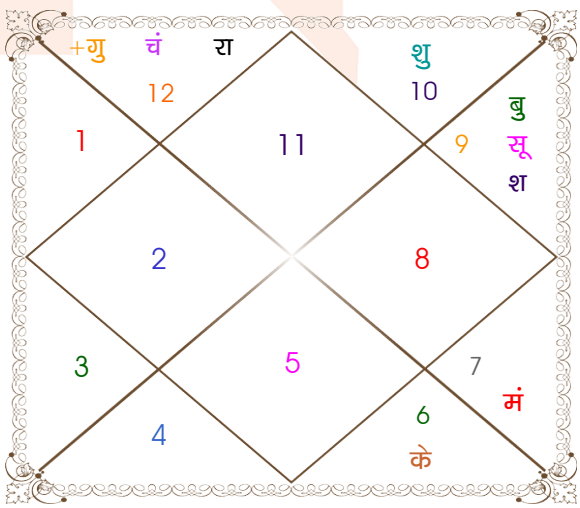

सुदर्शन चक्र

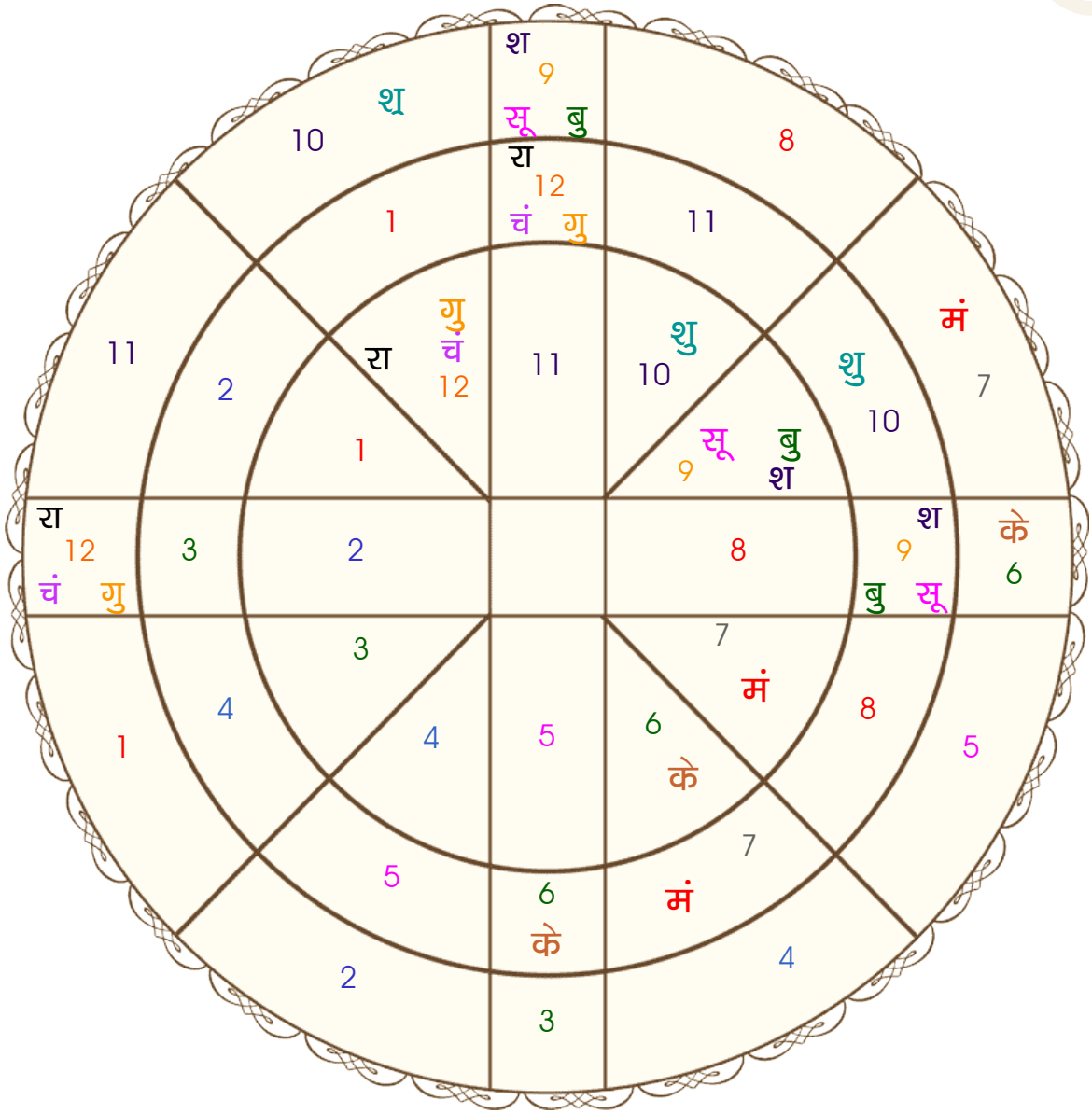

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

इन पृष्ठों में ज्योतिष की कृष्णमूर्ति पद्धति से संबंधित आपके सभी आवश्यक विवरण दिए गए हैं।

कृष्णमूर्ति पद्धति भारतीय ज्योतिष एवं पाश्चात्य ज्योतिष का मिश्रण है जिसमें ज्योतिष के सभी महत्वपूर्ण शाखाओं से महत्वपूर्ण सिद्धांत लिए गए हैं। वर्तमान समय में यह ज्योतिष की सर्वाधिक सटीक एवं विशुद्ध पद्धति मानी जाती है जिसे सीखना तथा लागू करना बेहद आसान है। हिंदू शास्त्रीय ज्योतिष के विपरीत कृष्णमूर्ति पद्धति क्रमबद्ध एवं अच्छी तरह से परिभाषित है। कृष्णमूर्ति पद्धति के लाभ हुइ समें इस पद्धति से संबंधित आंकड़े यथा कस्पल चार्ट, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप स्वामी, उप उप स्वामी सभी ग्रहों के दिए गए हैं साथ ही निरयण भाव, भावों के कारक, कारक ग्रह आदि भी सम्मिलित किए गए हैं। इतना ही नहीं, इसमें दृष्टि युति, भाव मध्य आदि भी शुद्ध गणना के साथ दिए गए हैं।

भोग्य दशा काल : बुध 9 वर्ष 10 मास 22 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		धनु	12:19:32	गुरु	केतु	बुध	चंद्र
चंद्र		मीन	22:14:22	गुरु	बुध	चंद्र	चंद्र
मंगल		तुला	28:49:36	शुक्र	गुरु	सूर्य	चंद्र
बुध		धनु	15:08:28	गुरु	शुक्र	शुक्र	बुध
गुरु		मीन	26:27:30	गुरु	बुध	गुरु	शनि
शुक्र		मक	13:44:59	शनि	चंद्र	राहु	चंद्र
शनि		धनु	01:26:14	गुरु	केतु	शुक्र	चंद्र
राहु	व	मीन	03:27:42	गुरु	शनि	शनि	शनि
केतु	व	कन्या	03:27:42	बुध	सूर्य	शनि	बुध
हर्ष		धनु	03:50:59	गुरु	केतु	चंद्र	राहु
नेप		धनु	14:03:23	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल
प्लूटो		तुला	18:18:45	शुक्र	राहु	चंद्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कुंभ	06:16:43	शनि	मंगल	चंद्र	बुध
2	मीन	17:11:58	गुरु	बुध	बुध	शुक्र
3	मेष	20:13:48	मंगल	शुक्र	गुरु	गुरु
4	वृष	16:24:31	शुक्र	चंद्र	शनि	केतु
5	मिथु	09:53:54	बुध	राहु	गुरु	सूर्य
6	कर्क	04:48:15	चंद्र	शनि	शनि	मंगल
7	सिंह	06:16:43	सूर्य	केतु	राहु	शनि
8	कन्या	17:11:58	बुध	चंद्र	शनि	राहु
9	तुला	20:13:48	शुक्र	गुरु	गुरु	गुरु
10	वृश्चि	16:24:31	मंगल	शनि	गुरु	राहु
11	धनु	09:53:54	गुरु	केतु	शनि	बुध
12	मक	04:48:15	शनि	सूर्य	शनि	राहु

के.पी. अयनांश : 23:35:10

फॉरच्युना : वृष 16:11:33

लग्न कुंडली

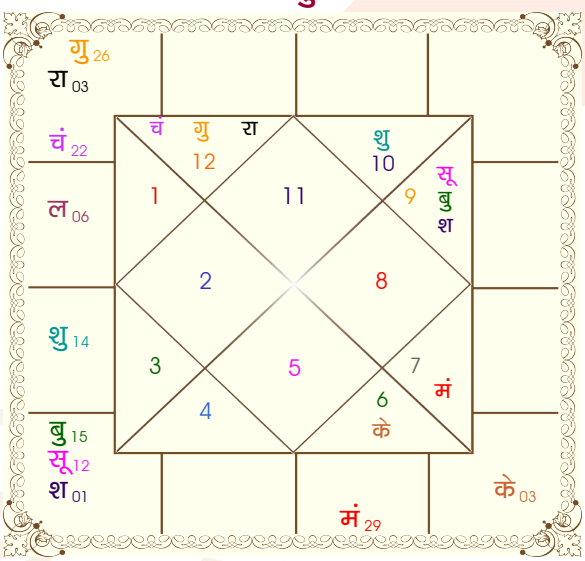

भाव कुंडली

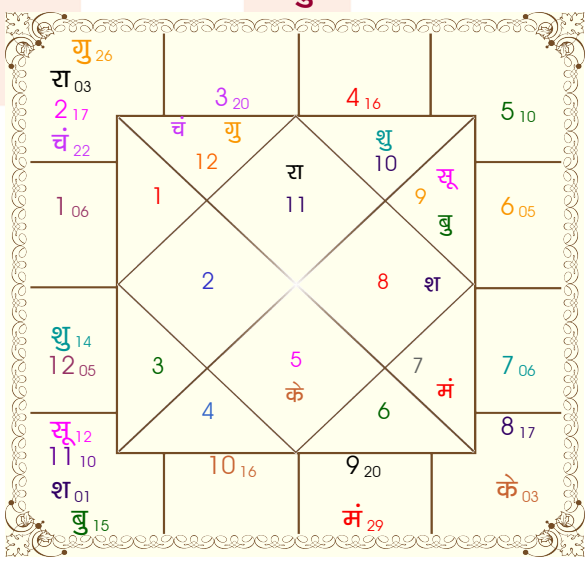

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	शनि- राहु+
2	चंद्र, मंगल+ गुरु, शुक्र,
3	मंगल-
4	बुध- शुक्र-
5	चंद्र- बुध- गुरु-
6	चंद्र- शुक्र-
7	सूर्य+ शनि, केतु+
8	चंद्र- बुध- गुरु-
9	मंगल, बुध- शुक्र-
10	मंगल- शनि, राहु,
11	सूर्य, चंद्र, मंगल- बुध, गुरु+ केतु,
12	बुध, शुक्र, शनि- राहु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	7+ 11,
चंद्र	2, 5- 6- 8- 11,
मंगल	2+ 3- 9, 10- 11-
बुध	4- 5- 8- 9- 11, 12,
गुरु	2, 5- 8- 11+
शुक्र	2, 4- 6- 9- 12,
शनि	1- 7, 10, 12-
राहु	1+ 10, 12-
केतु	7+ 11,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	चन्द्र
लग्न अन्तर स्वामी	चन्द्र
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

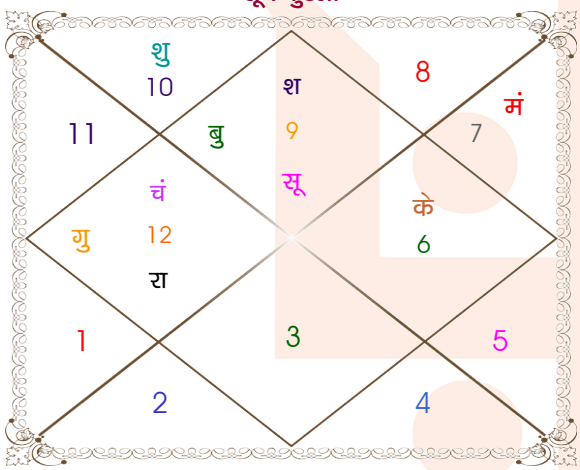

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

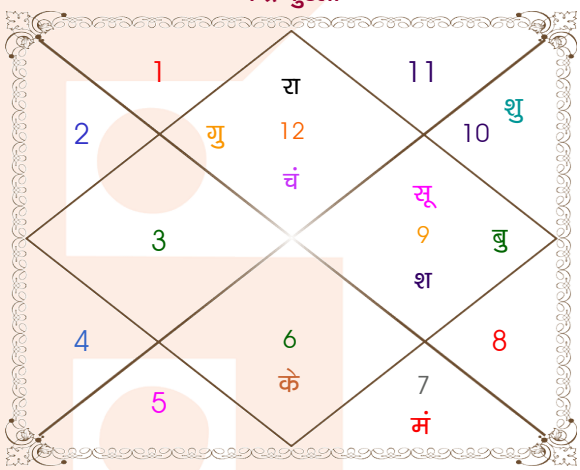

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

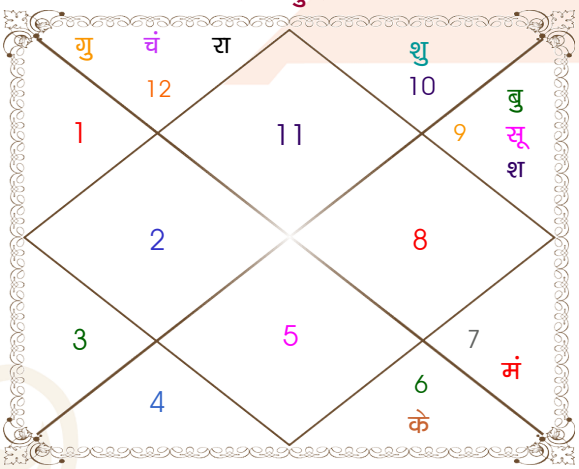

देह विचारः

होरा कुंडली

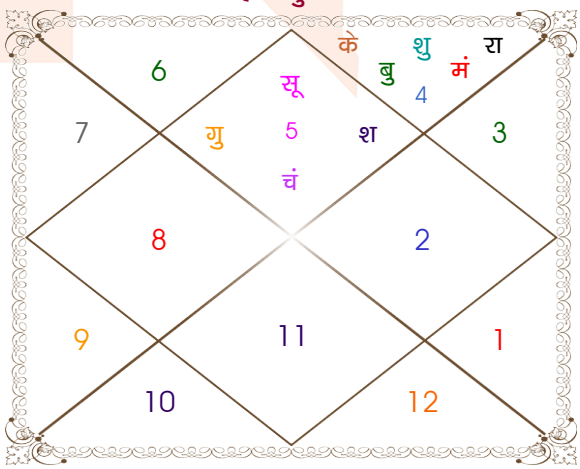

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

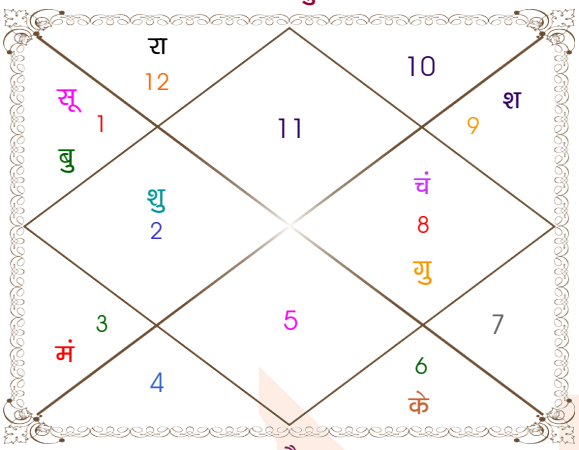

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

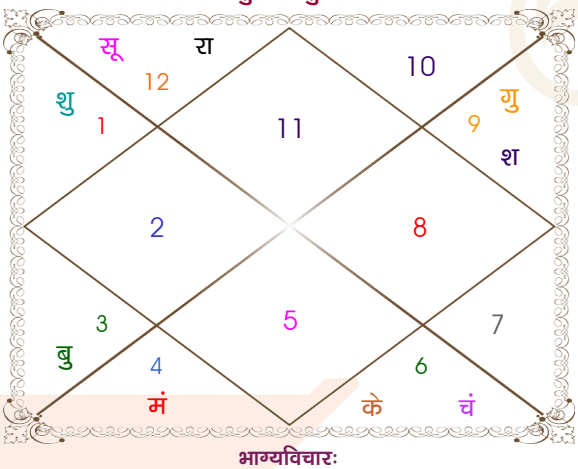

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

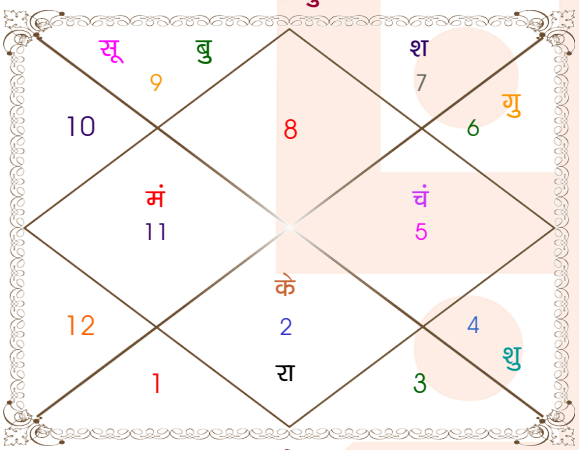

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

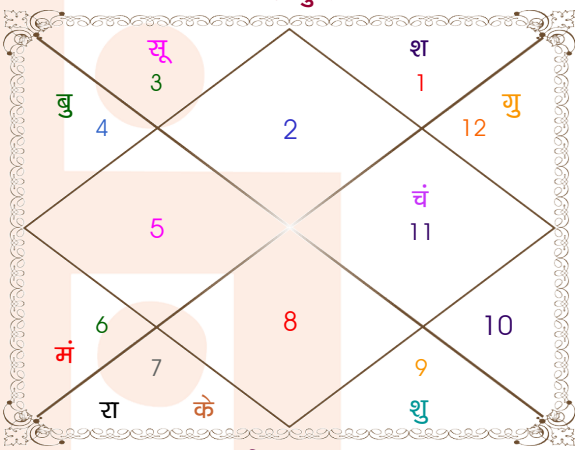

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

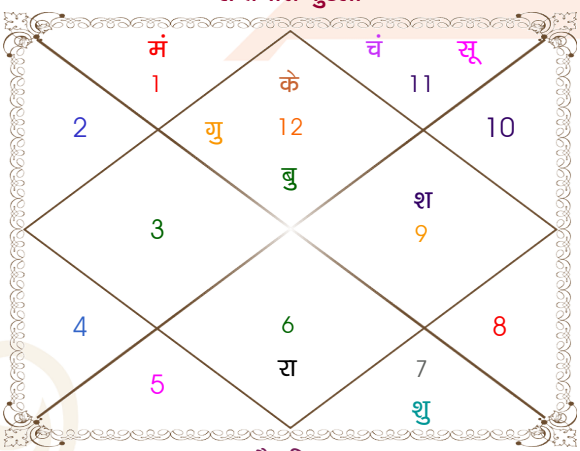

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

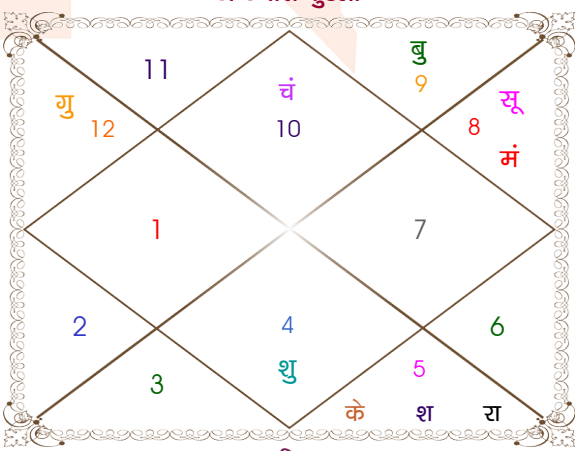

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

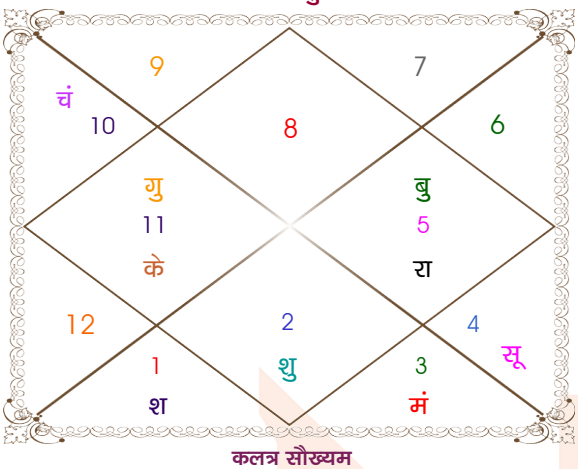

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

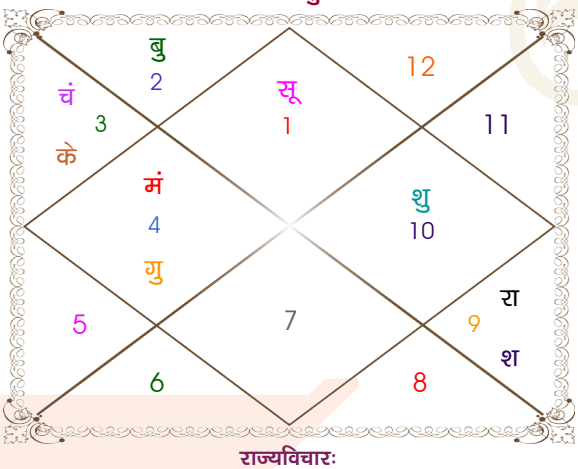

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

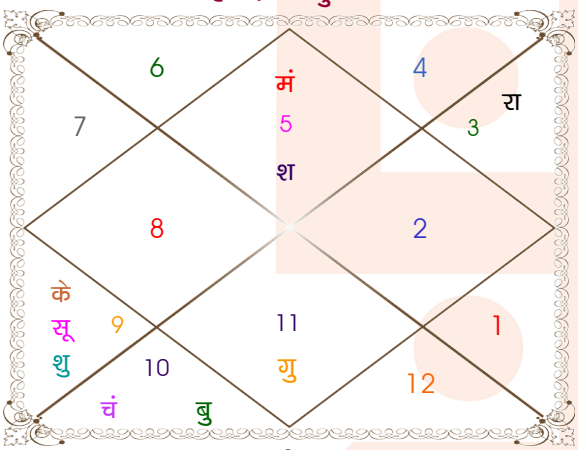

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

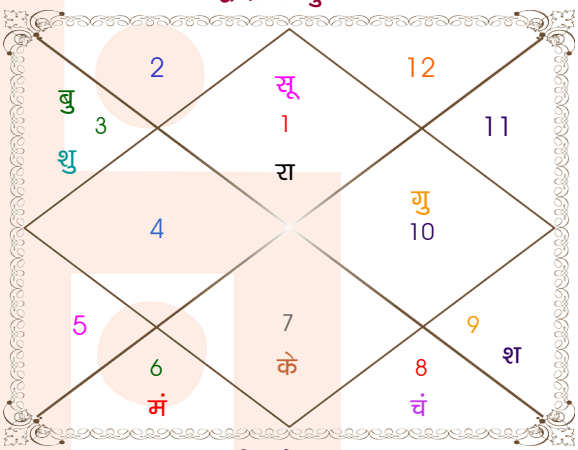

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

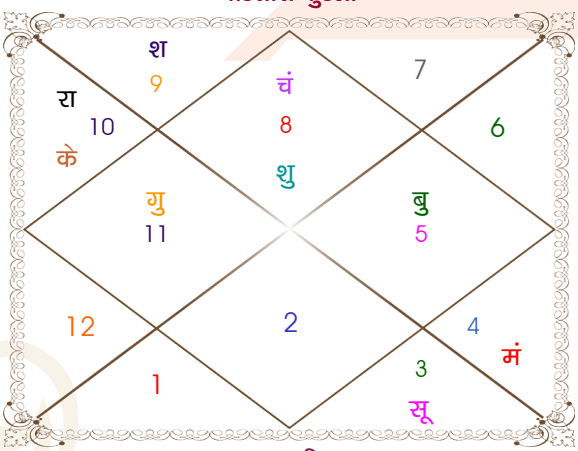

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

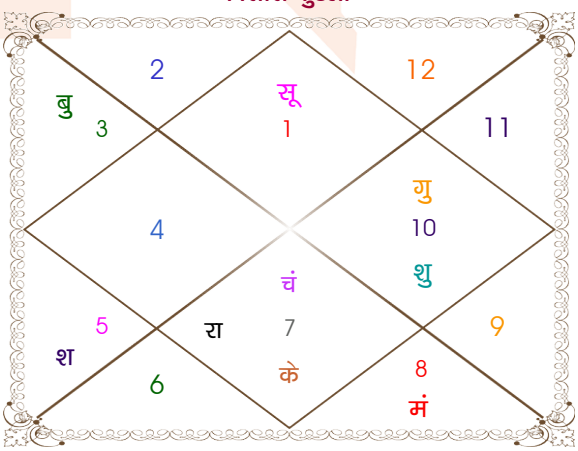

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

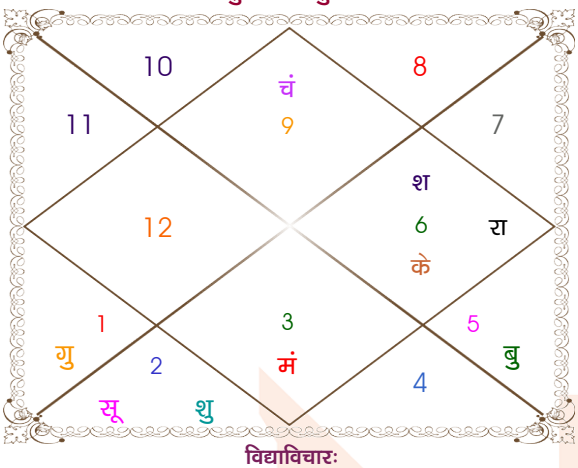

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

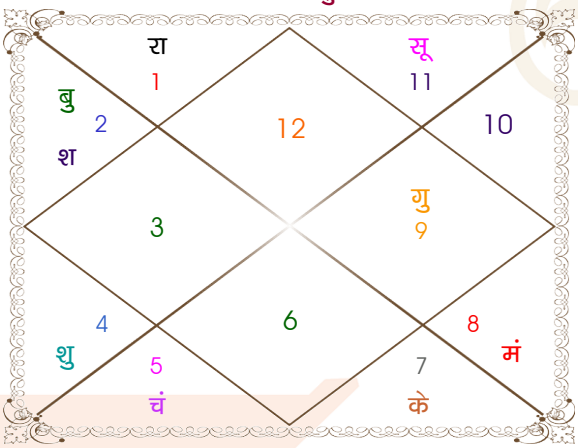

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

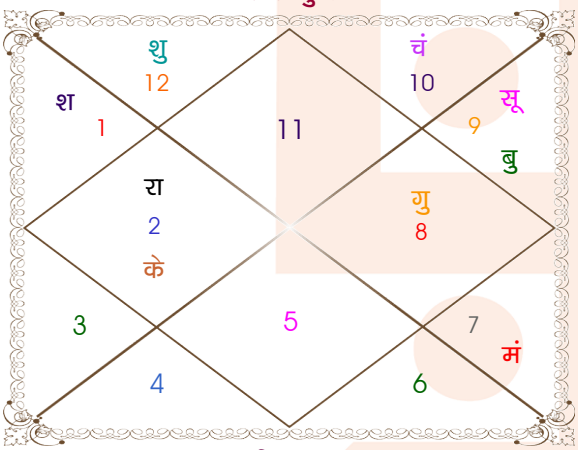

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

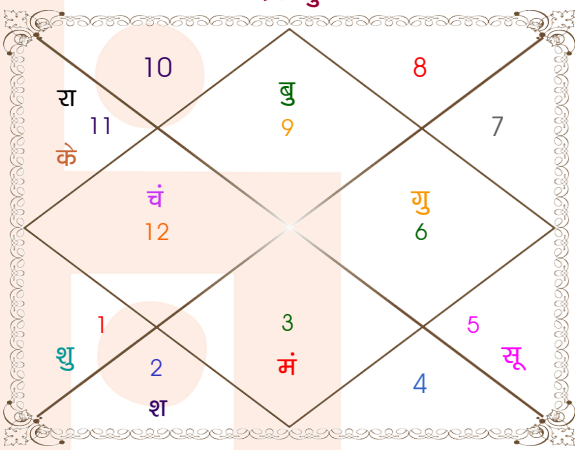

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

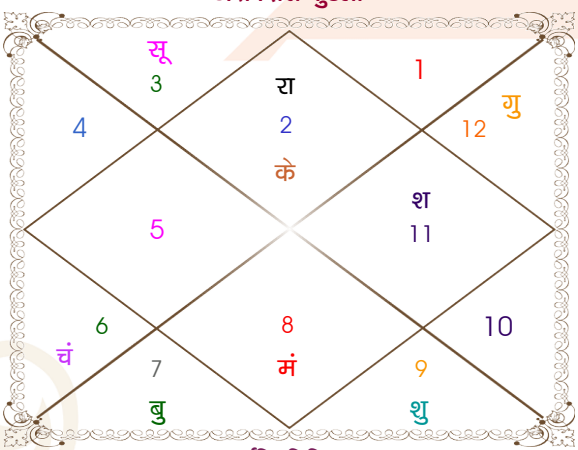

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

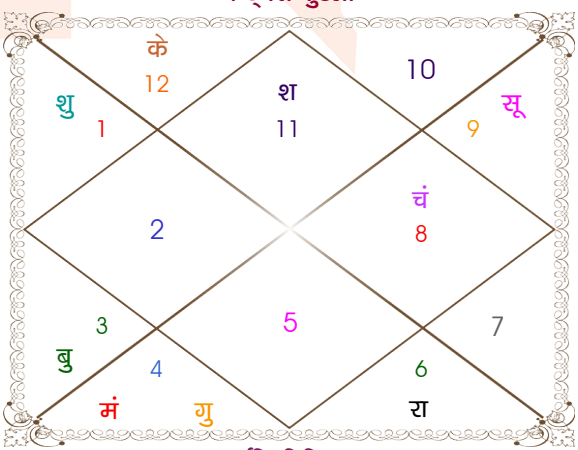

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कुंभ	धनु	मीन	तुला	धनु	मीन	मक	धनु	मीन	कन्या
होरा	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	कुंभ	मेष	वृश्चि	मिथु	मेष	वृश्चि	वृष	धनु	मीन	कन्या
चतुर्थांश	कुंभ	मीन	कन्या	कर्क	मिथु	धनु	मेष	धनु	मीन	कन्या
सप्तमांश	मीन	कुंभ	कुंभ	मेष	मीन	मीन	तुला	धनु	कन्या	मीन
नवमांश	वृश्चि	कर्क	मक	मिथु	सिंह	कुंभ	वृष	मेष	सिंह	कुंभ
दशमांश	मेष	मेष	मिथु	कर्क	वृष	कर्क	मक	धनु	धनु	मिथु
द्वादशांश	मेष	मेष	वृश्चि	कन्या	मिथु	मक	मिथु	धनु	मेष	तुला
षोडशांश	वृश्चि	मिथु	वृश्चि	कर्क	सिंह	कुंभ	वृश्चि	धनु	मक	मक
विंशांश	मेष	मेष	तुला	वृश्चि	मिथु	मक	मक	सिंह	तुला	तुला
चतुर्विंशांश	धनु	वृष	धनु	मिथु	सिंह	मेष	वृष	कन्या	कन्या	कन्या
सप्तविंशांश	मीन	कुंभ	सिंह	वृश्चि	वृष	धनु	कर्क	वृष	मेष	तुला
त्रिंशांश	कुंभ	धनु	मक	तुला	धनु	वृश्चि	मीन	मेष	वृष	वृष
खवेदांश	धनु	सिंह	मीन	मिथु	धनु	कन्या	मेष	वृष	कुंभ	कुंभ
अक्षवेदांश	वृष	मिथु	कन्या	वृश्चि	तुला	मीन	धनु	कुंभ	वृष	वृष
षष्ट्यंश	कुंभ	धनु	वृश्चि	कर्क	मिथु	कर्क	मेष	कुंभ	कन्या	मीन

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
चन्द्र	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
मंगल	0 ---	1 ---	1 ---	4 नागपुष्प
बुध	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
गुरु	1 ---	2 किंसुक	4 गोपुर	7 कल्पवृक्ष
शुक्र	3 व्यंजन	4 चामर	4 गोपुर	5 कन्दुक
शनि	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
राहु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
केतु	0 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	18.20	10.50	11.75	13.75	15.55	17.95	12.50	7.90	12.00
सप्तवर्ग	16.58	11.30	12.75	13.88	16.18	18.05	12.63	8.83	11.13
दशवर्ग	16.35	10.45	11.88	15.73	13.98	16.65	14.75	11.18	10.15
षोडशवर्ग	15.93	10.65	12.13	14.98	14.65	16.63	14.40	11.73	10.58

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	सम	सम
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	सम	सम	सम	---	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	---	अतिमित्र	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

षड्बल और अष्टकवर्ग

जन्मकुंडली में ग्रहों एवं भावों के बिल्कुल सही बल को जानें।

किसी भी ग्रह के सही बल का निर्धारण भचक्र में उस ग्रह की स्थिति का विश्लेषण कर किया जाता है। ग्रहों की भिन्न-भिन्न स्थिति षड्बल के अलग-अलग शक्तियों को दर्शाते हैं। किसी ग्रह का बल अथवा उसकी कमजोरी का पता उसके षड्बल पर निर्भर करता है। षड्बल एवं भावबल सारणी को देखकर आप पता कर सकते हैं कि कौन सा ग्रह आपकी कुंडली में कितना मजबूत है। भावबल के द्वारा जन्मकुंडली के सभी 12 भावों के बल का ज्ञान होता है। इससे साफ निर्देश मिल जाता है कि जीवन के किस क्षेत्र में आप बलशाली हैं अथवा जीवन के किस पहलू में आपकी कमजोरी एवं असफलता छिपी हुई है।

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	21	46	30	30	27	36	46
सप्तवर्गज बल	144	79	90	105	128	158	77
ओजयुग्मक बल	15	30	30	30	15	30	30
केन्द्र बल	30	30	15	30	30	15	30
द्रेष्काण बल	0	15	0	15	0	0	0
कुल स्थान बल	210	200	165	210	200	238	183
कुल दिग्बल	51	42	54	43	43	19	22
नतोन्नत बल	51	9	9	60	51	51	9
पक्ष बल	27	67	27	27	33	33	27
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	0	45	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	60	0	0	0	0
अयन बल	0	22	6	60	40	6	60
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	78	143	147	206	184	90	96
कुल चेष्टाबल	0	0	18	12	24	21	5
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	16	-25	23	15	-21	-7	20
कुल षट्बल	415	411	425	512	464	405	334
रूप षट्बल	6.9	6.9	7.1	8.5	7.7	6.7	5.6
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	1.1	1.4	1.2	1.2	1.2	1.1
संबंधित पद	2	6	1	4	5	3	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	6.39	39.30	23.11	18.59	25.31	27.41	14.52
कष्ट फल	47.73	19.07	35.49	38.14	34.58	30.83	27.64

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	334	464	425	405	512	411	415	512	405	425	464	334
भावदिग्बल	60	40	10	0	20	40	30	10	20	30	40	40
भावदृष्टि बल	-23	17	23	0	55	80	83	43	69	43	55	2
कुल भाव बल	371	521	458	405	587	532	528	565	494	498	559	377
रूप भाव बल	6.2	8.7	7.6	6.7	9.8	8.9	8.8	9.4	8.2	8.3	9.3	6.3
संबंधित पद	12	6	9	10	1	4	5	2	8	7	3	11

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

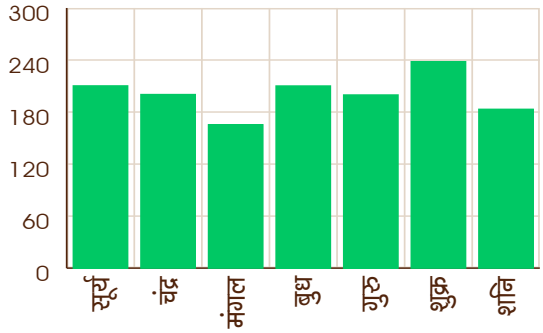

दिग्बल

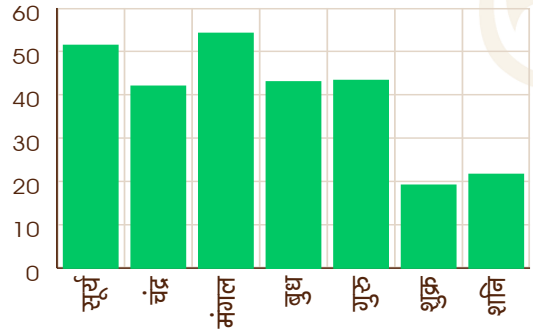

कालबल

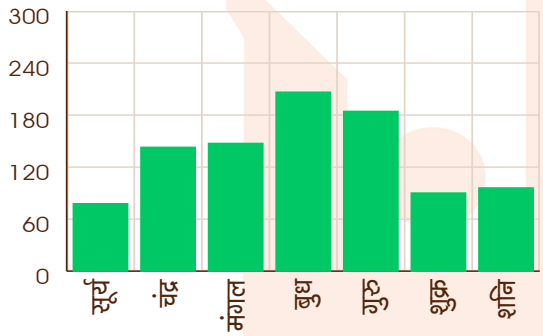

चेष्टाबल

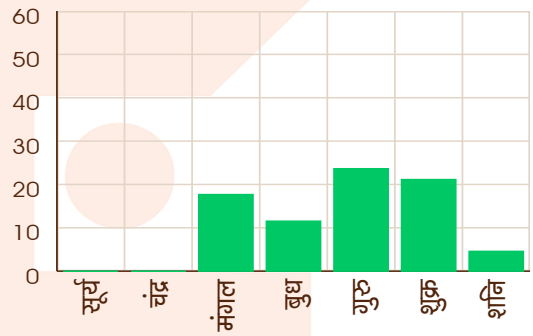

नैसर्गिक बल

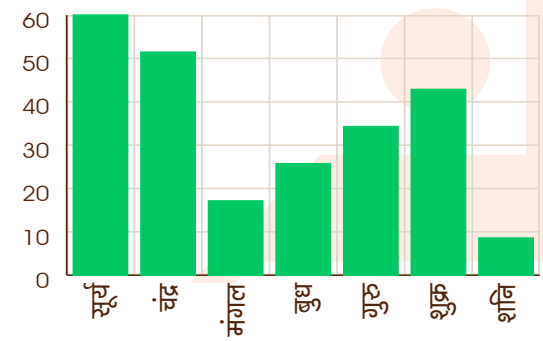

दृग्बल

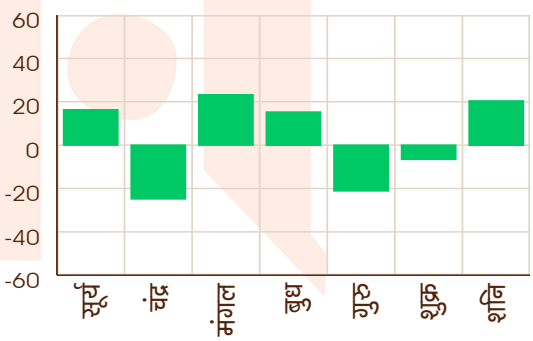

रूप षट्बल

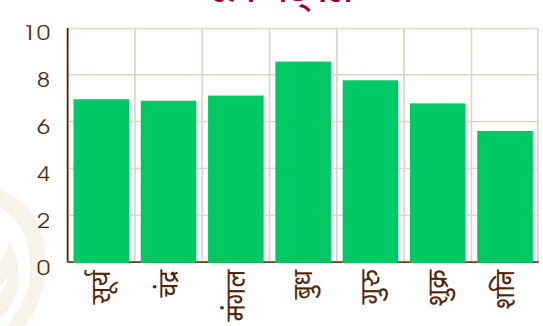

न्यूनतम षट्बल

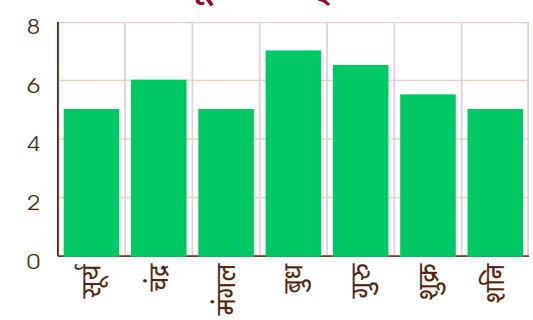

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

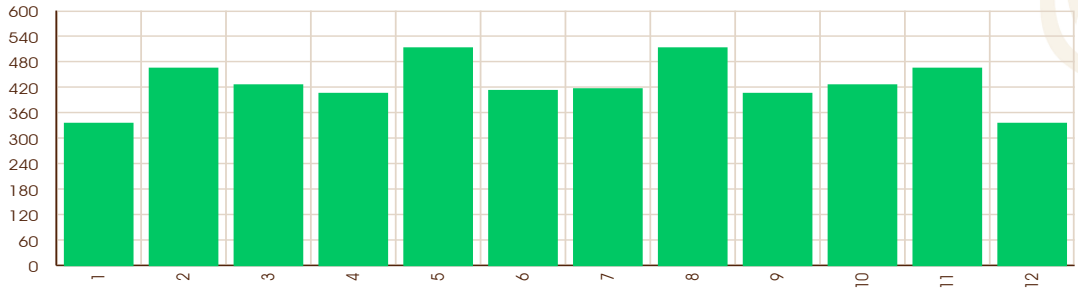

भावदिग्बल

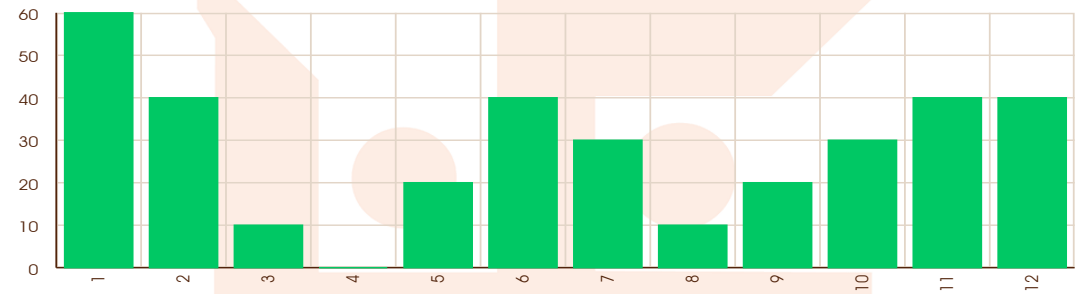

भावदृष्टि बल

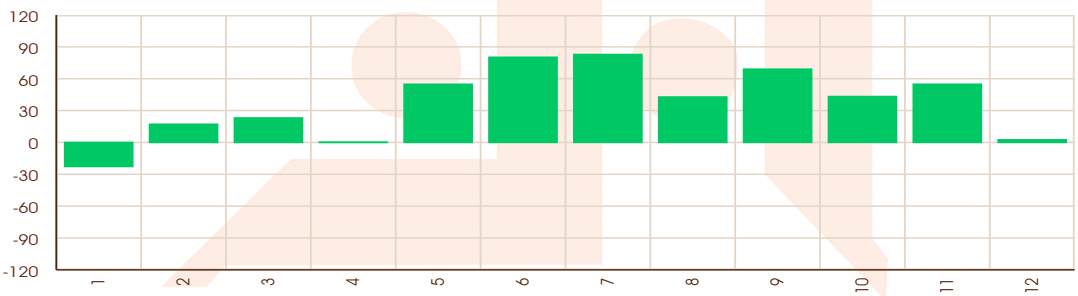

भाव बल

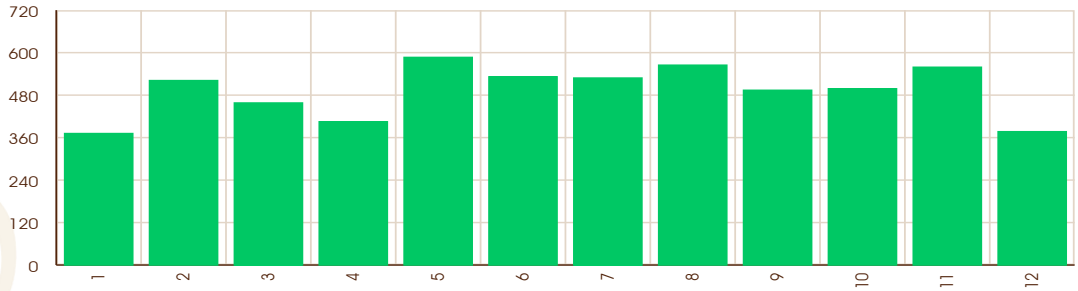

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

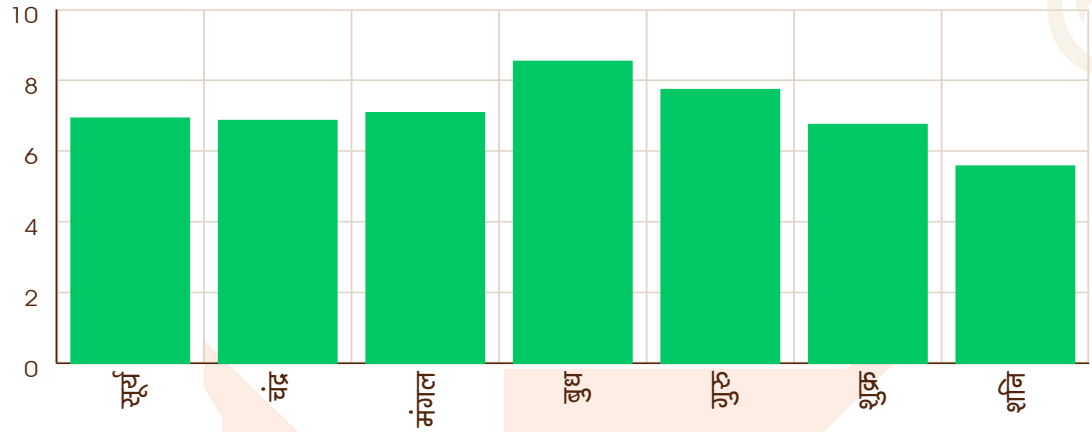

इष्ट - कष्ट फल

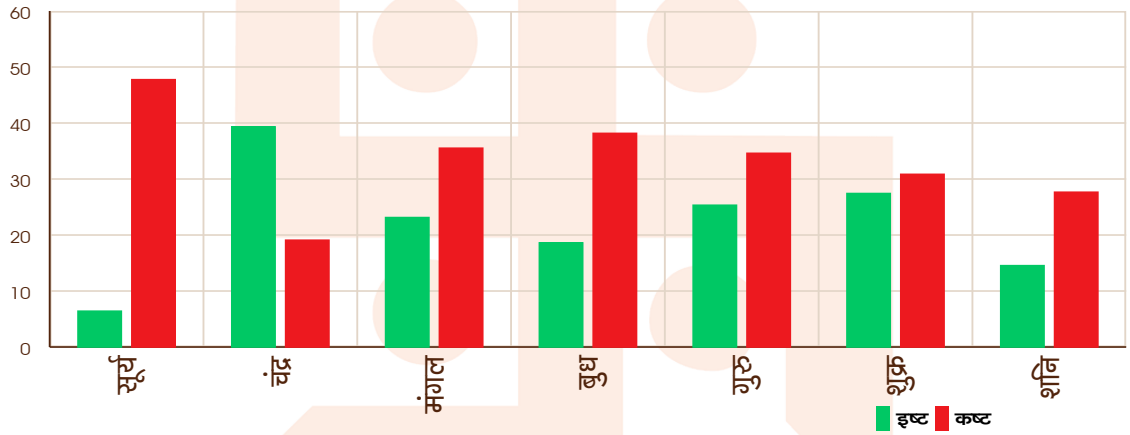

रूप भाव बल

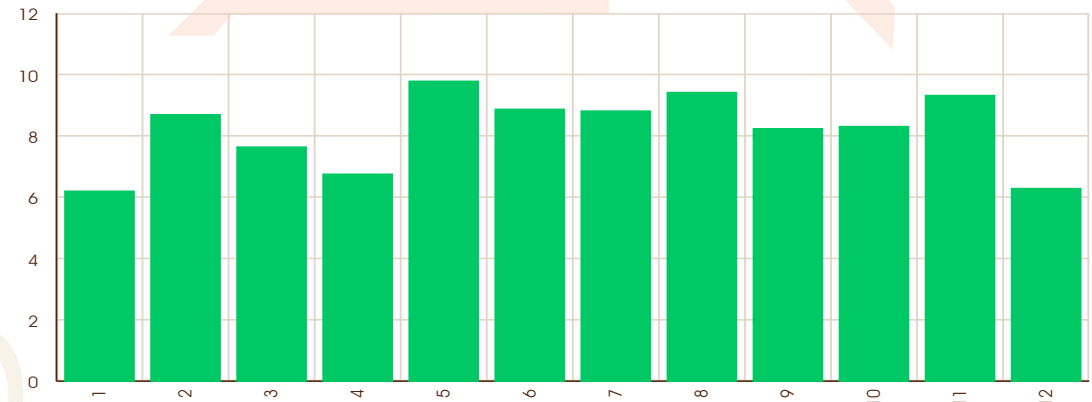

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कुंभ	06:10:31	--	--	धनिष्ठा	4	23
गुलिक	गु	वृष	05:20:32	--	--	कृतिका	3	3
काल	का	वृष	25:42:01	--	--	मृगशिरा	1	5
मृत्यु	मृ	मक	22:53:52	--	--	श्रवण	4	22
यमघंटक	यम	मीन	15:38:29	--	--	उ०भाद्रपद	4	26
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कुंभ	18:06:37	--	--	शतभिषा	4	24
धूम	धू	मेष	25:33:20	--	--	भरणी	4	2
व्यतिपात	व्य	मीन	04:26:40	--	--	उ०भाद्रपद	1	26
परिवेश	परि	कन्या	04:26:40	--	--	उ०फाल्गुनी	3	12
इन्द्रचाप	इ	तुला	25:33:20	--	--	विशाखा	2	16
उपकेतु	उप	वृश्चि	12:13:20	--	--	अनुराधा	3	17

प्राणपद	:	मक	08:35:11	कारकाँश लग्न	:	मिथु	18:30:33
भाव लग्न	:	कुंभ	01:32:25	होरा लग्न	:	मीन	20:51:31
घटी लग्न	:	सिंह	18:48:47	वर्णद लग्न	:	मिथु	02:57:59

उपग्रह कुंडली

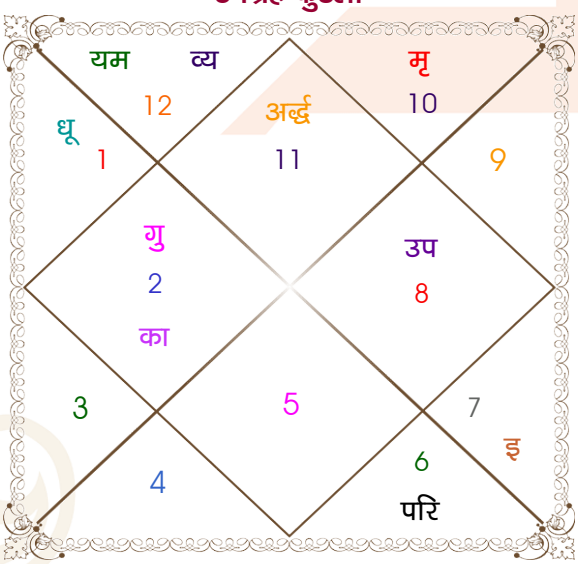

आरूढ़ कुंडली

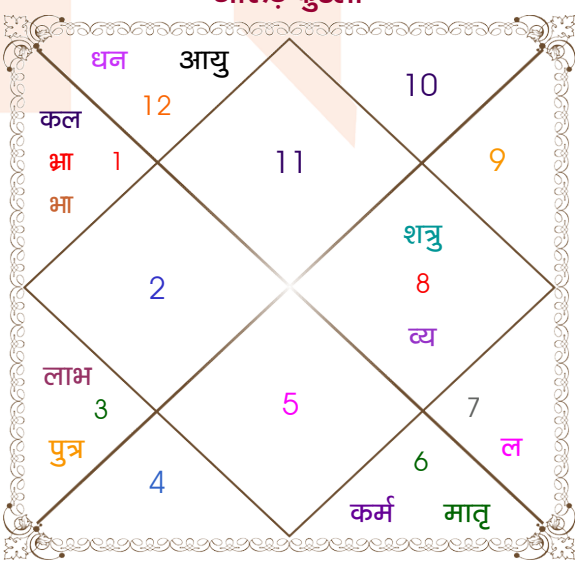

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	**5**	**6**	**1**	**2**	**3**	**4**	**4**	**6**	**6**	**3**	**4**	**4**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	6
सूर्य	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	6
शुक्र	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	7
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
कुल	**5**	**5**	**4**	**3**	**5**	**2**	**5**	**5**	**4**	**5**	**2**	**4**	**49**

मंगल का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
कुल	**4**	**3**	**4**	**3**	**4**	**1**	**4**	**4**	**2**	**3**	**5**	**2**	**39**

बुध का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
मंगल	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
कुल	**4**	**5**	**4**	**3**	**5**	**5**	**3**	**3**	**7**	**4**	**6**	**5**	**54**

गुरु का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	9
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	8
चंद्र	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
कुल	**4**	**5**	**6**	**4**	**4**	**4**	**5**	**6**	**5**	**4**	**5**	**4**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	5
चंद्र	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	9
लग्न	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
कुल	**4**	**5**	**5**	**5**	**4**	**3**	**4**	**4**	**4**	**7**	**4**	**3**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
चंद्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	**4**	**3**	**4**	**2**	**2**	**4**	**2**	**5**	**4**	**3**	**3**	**3**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
मंगल	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
सूर्य	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**4**	**6**	**3**	**5**	**1**	**4**	**4**	**5**	**4**	**3**	**6**	**4**	**49**

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	4	2	5	4	3	3	3	4	3	4	2	39
गुरु	5	6	4	4	4	5	6	5	4	5	4	4	56
मंगल	4	4	2	3	5	2	4	3	4	3	4	1	39
सूर्य	3	4	4	6	6	3	4	4	5	6	1	2	48
शुक्र	5	4	3	4	4	4	7	4	3	4	5	5	52
बुध	5	5	3	3	7	4	6	5	4	5	4	3	54
चंद्र	5	4	3	5	2	5	5	4	5	2	4	5	49
बिन्दु	29	31	21	30	32	26	35	28	29	28	26	22	337
रेखा	27	25	35	26	24	30	21	28	27	28	30	34	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	3	2	0	1	1	2	0	2	0	12
गुरु	1	1	0	0	0	0	2	1	0	0	0	0	5
मंगल	0	2	0	2	1	0	2	2	0	1	2	0	12
सूर्य	0	1	3	4	3	0	3	2	2	3	0	0	21
शुक्र	2	0	0	0	1	0	4	0	0	0	2	1	10
बुध	1	1	0	0	3	0	3	2	0	1	1	0	12
चंद्र	3	2	0	1	0	3	2	0	3	0	1	1	16
रेखा	7	8	3	10	10	3	17	8	7	5	8	2	88

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	3	2	0	1	1	2	0	2	0	11
गुरु	0	0	0	0	0	0	2	0	0	0	0	0	2
मंगल	0	0	0	2	1	0	2	2	0	1	1	0	9
सूर्य	0	0	3	4	3	0	3	2	2	3	0	0	20
शुक्र	2	0	0	0	1	0	4	0	0	0	2	1	10
बुध	1	0	0	0	3	0	3	1	0	1	0	0	9
चंद्र	3	0	0	1	0	3	2	0	3	0	1	1	14
रेखा	6	0	3	10	10	3	17	6	7	5	6	2	75

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	140	104	64	71	14	86	87
ग्रह पिंड	75	76	23	31	16	47	38
शोध्य पिंड	215	180	87	102	30	133	125

अष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

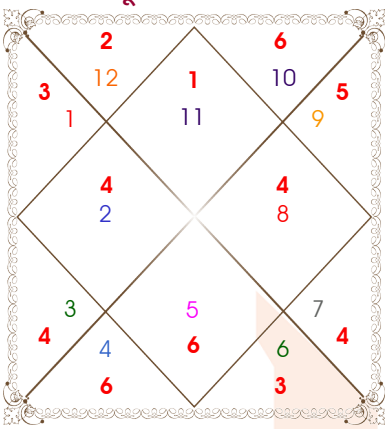

सर्वाष्टकवर्ग

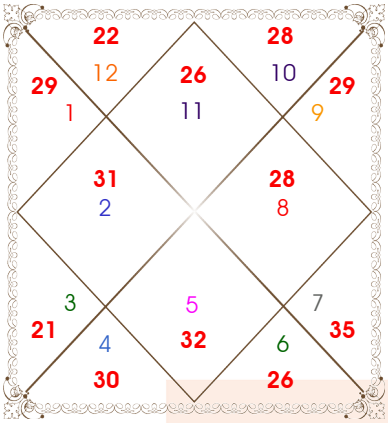

चंद्र का अष्टकवर्ग

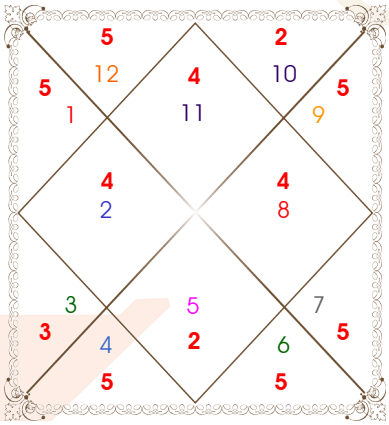

मंगल का अष्टकवर्ग

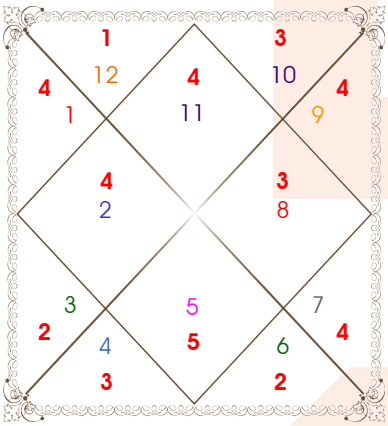

बुध का अष्टकवर्ग

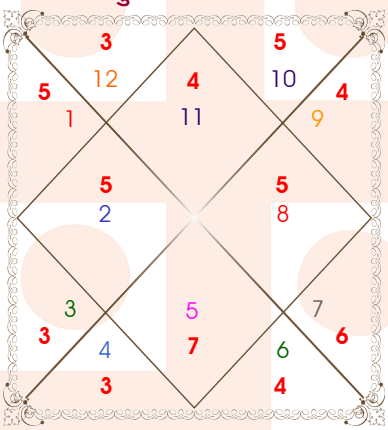

गुरु का अष्टकवर्ग

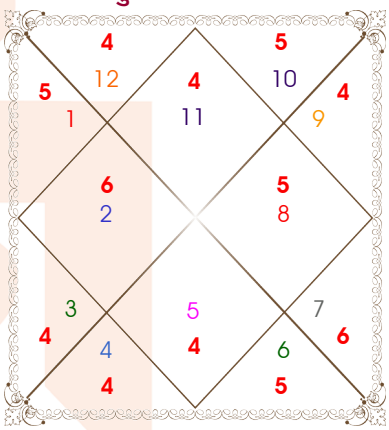

शुक्र का अष्टकवर्ग

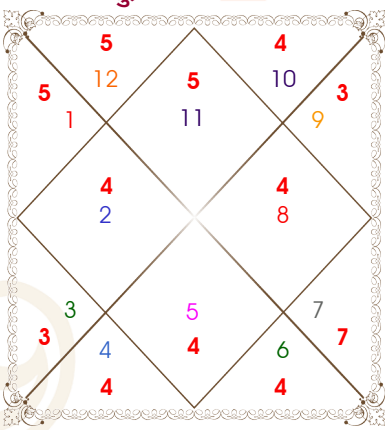

शनि का अष्टकवर्ग

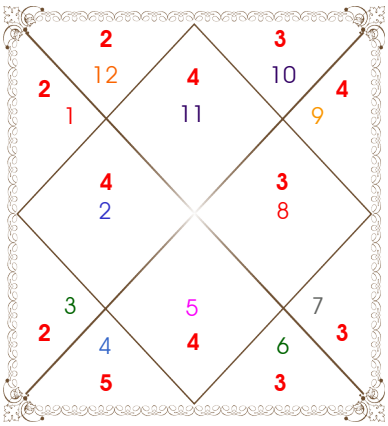

लग्न का अष्टकवर्ग

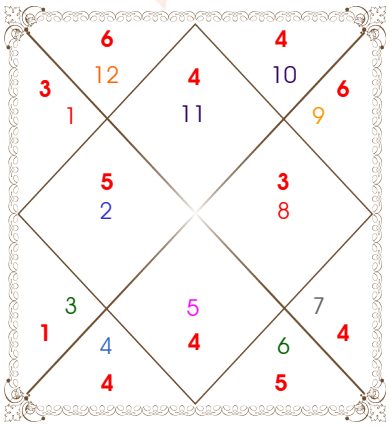

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

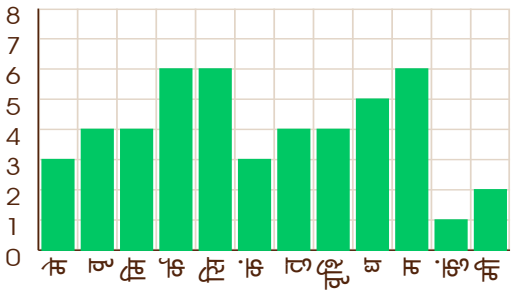

चन्द्र

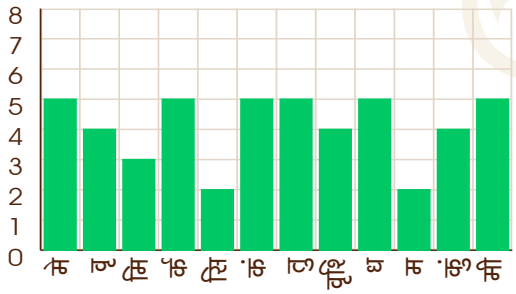

मंगल

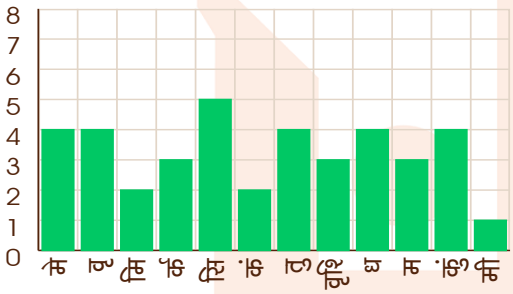

बुध

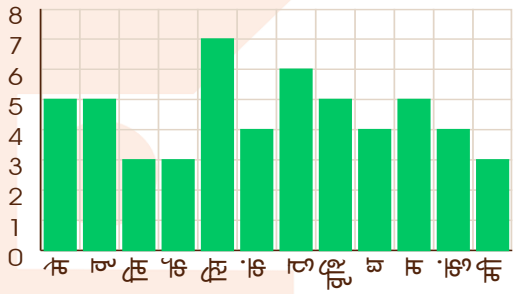

गुरु

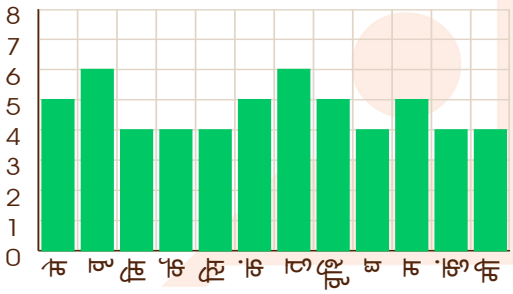

शुक्र

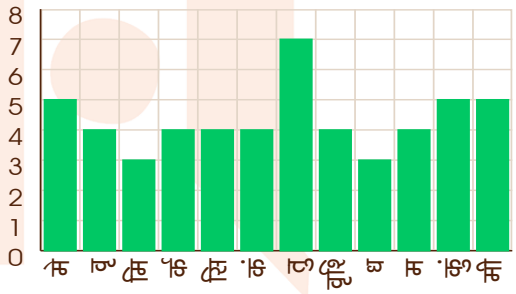

शनि

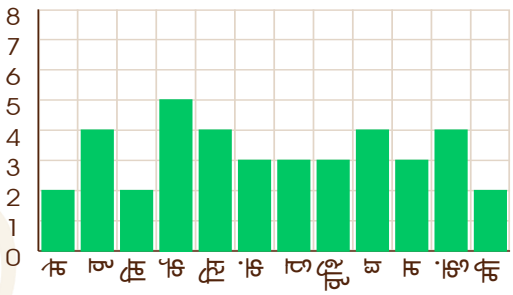

लग्न

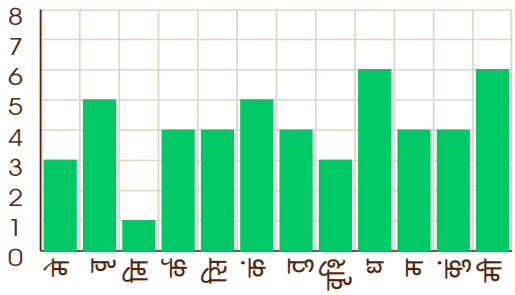

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

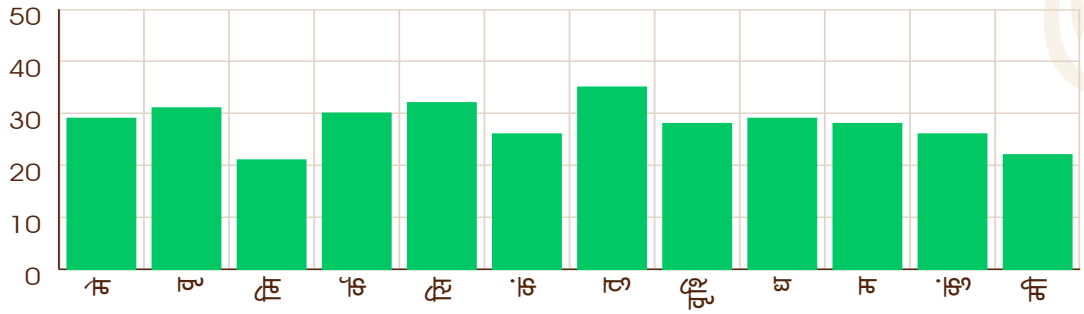

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

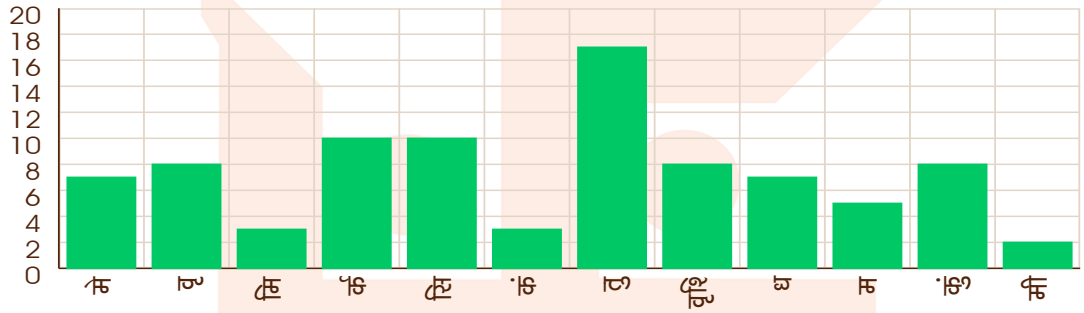

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

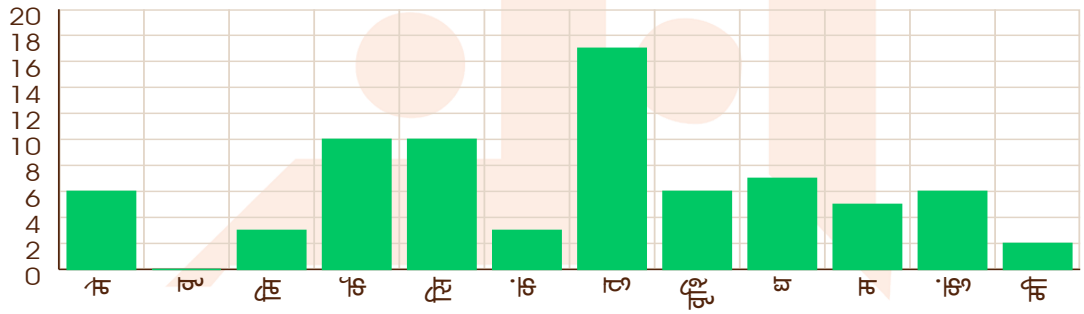

शोध्य पिंड

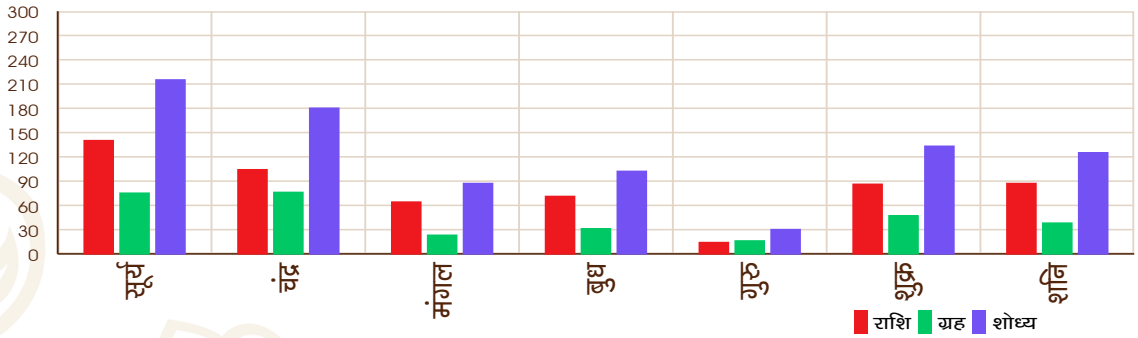

दशा

किसी जातक के अपरिवर्तनीय भूतकाल का परिणाम वर्तमान में चल रही अच्छी या बुरी दशाओं में प्रतिबिंबित होता है।

प्रत्येक जातक की कुंडली में उसके अच्छे-बुरे आने वाले कल का निर्देश होता है जिसका अनुभव आने वाले दशा-अन्तर्दशा काल में होता है। यदि किसी ग्रह की शुभ दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। इसके विपरीत यदि दशा अशुभ होती है तो अन्यान्य समस्याओं, पीड़ा जनित कष्ट, बाधा, असफलता आदि का सामना करना पड़ता है।

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 10 वर्ष 0 मास 9 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
28/12/1987		06/01/1998		06/01/2005		06/01/2025		06/01/2031	
06/01/1998		06/01/2005		06/01/2025		06/01/2031		06/01/2041	
	00/00/0000	केतु	04/06/1998	शुक्र	07/05/2008	सूर्य	25/04/2025	चंद्र	07/11/2031
	00/00/0000	शुक्र	04/08/1999	सूर्य	08/05/2009	चंद्र	25/10/2025	मंगल	07/06/2032
	28/12/1987	सूर्य	10/12/1999	चंद्र	06/01/2011	मंगल	02/03/2026	राहु	07/12/2033
सूर्य	06/02/1988	चंद्र	10/07/2000	मंगल	08/03/2012	राहु	25/01/2027	गुरु	08/04/2035
चंद्र	08/07/1989	मंगल	06/12/2000	राहु	08/03/2015	गुरु	13/11/2027	शनि	06/11/2036
मंगल	05/07/1990	राहु	25/12/2001	गुरु	06/11/2017	शनि	25/10/2028	बुध	07/04/2038
राहु	21/01/1993	गुरु	01/12/2002	शनि	06/01/2021	बुध	31/08/2029	केतु	07/11/2038
गुरु	29/04/1995	शनि	10/01/2004	बुध	07/11/2023	केतु	06/01/2030	शुक्र	07/07/2040
शनि	06/01/1998	बुध	06/01/2005	केतु	06/01/2025	शुक्र	06/01/2031	सूर्य	06/01/2041

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
06/01/2041		07/01/2048		06/01/2066		06/01/2082		07/01/2101	
07/01/2048		06/01/2066		06/01/2082		07/01/2101		00/00/0000	
मंगल	04/06/2041	राहु	19/09/2050	गुरु	24/02/2068	शनि	09/01/2085	बुध	06/06/2103
राहु	23/06/2042	गुरु	11/02/2053	शनि	07/09/2070	बुध	19/09/2087	केतु	02/06/2104
गुरु	29/05/2043	शनि	19/12/2055	बुध	13/12/2072	केतु	28/10/2088	शुक्र	03/04/2107
शनि	07/07/2044	बुध	08/07/2058	केतु	18/11/2073	शुक्र	29/12/2091	सूर्य	29/12/2107
बुध	05/07/2045	केतु	26/07/2059	शुक्र	19/07/2076	सूर्य	10/12/2092		00/00/0000
केतु	01/12/2045	शुक्र	26/07/2062	सूर्य	08/05/2077	चंद्र	11/07/2094		00/00/0000
शुक्र	31/01/2047	सूर्य	20/06/2063	चंद्र	07/09/2078	मंगल	20/08/2095		00/00/0000
सूर्य	08/06/2047	चंद्र	19/12/2064	मंगल	14/08/2079	राहु	26/06/2098		00/00/0000
चंद्र	07/01/2048	मंगल	06/01/2066	राहु	06/01/2082	गुरु	07/01/2101		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 10 वर्ष 0 मा 25 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य	
28/12/1987	
06/02/1988	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	28/12/1987
शुक्र	06/02/1988

बुध - चंद्र	
06/02/1988	
08/07/1989	
चंद्र	20/03/1988
मंगल	19/04/1988
राहु	06/07/1988
गुरु	13/09/1988
शनि	04/12/1988
बुध	15/02/1989
केतु	17/03/1989
शुक्र	12/06/1989
सूर्य	08/07/1989

बुध - मंगल	
08/07/1989	
05/07/1990	
मंगल	29/07/1989
राहु	21/09/1989
गुरु	08/11/1989
शनि	05/01/1990
बुध	25/02/1990
केतु	18/03/1990
शुक्र	17/05/1990
सूर्य	05/06/1990
चंद्र	05/07/1990

बुध - राहु	
05/07/1990	
21/01/1993	
राहु	21/11/1990
गुरु	26/03/1991
शनि	20/08/1991
बुध	30/12/1991
केतु	22/02/1992
शुक्र	27/07/1992
सूर्य	11/09/1992
चंद्र	28/11/1992
मंगल	21/01/1993

बुध - गुरु	
21/01/1993	
29/04/1995	
गुरु	12/05/1993
शनि	20/09/1993
बुध	15/01/1994
केतु	04/03/1994
शुक्र	20/07/1994
सूर्य	31/08/1994
चंद्र	08/11/1994
मंगल	26/12/1994
राहु	29/04/1995

बुध - शनि	
29/04/1995	
06/01/1998	
शनि	02/10/1995
बुध	18/02/1996
केतु	15/04/1996
शुक्र	26/09/1996
सूर्य	14/11/1996
चंद्र	04/02/1997
मंगल	03/04/1997
राहु	28/08/1997
गुरु	06/01/1998

केतु - केतु	
06/01/1998	
04/06/1998	
केतु	15/01/1998
शुक्र	09/02/1998
सूर्य	16/02/1998
चंद्र	01/03/1998
मंगल	09/03/1998
राहु	01/04/1998
गुरु	21/04/1998
शनि	14/05/1998
बुध	04/06/1998

केतु - शुक्र	
04/06/1998	
04/08/1999	
शुक्र	14/08/1998
सूर्य	05/09/1998
चंद्र	10/10/1998
मंगल	04/11/1998
राहु	07/01/1999
गुरु	05/03/1999
शनि	11/05/1999
बुध	11/07/1999
केतु	04/08/1999

केतु - सूर्य	
04/08/1999	
10/12/1999	
सूर्य	11/08/1999
चंद्र	21/08/1999
मंगल	29/08/1999
राहु	17/09/1999
गुरु	04/10/1999
शनि	24/10/1999
बुध	12/11/1999
केतु	19/11/1999
शुक्र	10/12/1999

केतु - चंद्र	
10/12/1999	
10/07/2000	
चंद्र	28/12/1999
मंगल	09/01/2000
राहु	10/02/2000
गुरु	10/03/2000
शनि	13/04/2000
बुध	13/05/2000
केतु	25/05/2000
शुक्र	30/06/2000
सूर्य	10/07/2000

केतु - मंगल	
10/07/2000	
06/12/2000	
मंगल	19/07/2000
राहु	10/08/2000
गुरु	30/08/2000
शनि	23/09/2000
बुध	14/10/2000
केतु	23/10/2000
शुक्र	17/11/2000
सूर्य	24/11/2000
चंद्र	06/12/2000

केतु - राहु	
06/12/2000	
25/12/2001	
राहु	02/02/2001
गुरु	25/03/2001
शनि	25/05/2001
बुध	18/07/2001
केतु	10/08/2001
शुक्र	12/10/2001
सूर्य	01/11/2001
चंद्र	03/12/2001
मंगल	25/12/2001

केतु - गुरु	
25/12/2001	
01/12/2002	
गुरु	08/02/2002
शनि	03/04/2002
बुध	22/05/2002
केतु	11/06/2002
शुक्र	06/08/2002
सूर्य	23/08/2002
चंद्र	21/09/2002
मंगल	11/10/2002
राहु	01/12/2002

केतु - शनि	
01/12/2002	
10/01/2004	
शनि	03/02/2003
बुध	01/04/2003
केतु	25/04/2003
शुक्र	01/07/2003
सूर्य	22/07/2003
चंद्र	24/08/2003
मंगल	17/09/2003
राहु	17/11/2003
गुरु	10/01/2004

केतु - बुध	
10/01/2004	
06/01/2005	
बुध	01/03/2004
केतु	22/03/2004
शुक्र	22/05/2004
सूर्य	09/06/2004
चंद्र	09/07/2004
मंगल	30/07/2004
राहु	22/09/2004
गुरु	10/11/2004
शनि	06/01/2005

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र	
06/01/2005	
07/05/2008	
शुक्र	28/07/2005
सूर्य	27/09/2005
चंद्र	06/01/2006
मंगल	18/03/2006
राहु	17/09/2006
गुरु	26/02/2007
शनि	07/09/2007
बुध	26/02/2008
केतु	07/05/2008

शुक्र - सूर्य	
07/05/2008	
08/05/2009	
सूर्य	26/05/2008
चंद्र	25/06/2008
मंगल	16/07/2008
राहु	09/09/2008
गुरु	28/10/2008
शनि	25/12/2008
बुध	14/02/2009
केतु	08/03/2009
शुक्र	08/05/2009

शुक्र - चंद्र	
08/05/2009	
06/01/2011	
चंद्र	27/06/2009
मंगल	02/08/2009
राहु	01/11/2009
गुरु	21/01/2010
शनि	28/04/2010
बुध	23/07/2010
केतु	28/08/2010
शुक्र	07/12/2010
सूर्य	06/01/2011

शुक्र - मंगल	
06/01/2011	
08/03/2012	
मंगल	31/01/2011
राहु	05/04/2011
गुरु	01/06/2011
शनि	07/08/2011
बुध	07/10/2011
केतु	01/11/2011
शुक्र	11/01/2012
सूर्य	01/02/2012
चंद्र	08/03/2012

शुक्र - राहु	
08/03/2012	
08/03/2015	
राहु	19/08/2012
गुरु	12/01/2013
शनि	05/07/2013
बुध	07/12/2013
केतु	09/02/2014
शुक्र	10/08/2014
सूर्य	04/10/2014
चंद्र	03/01/2015
मंगल	08/03/2015

शुक्र - गुरु	
08/03/2015	
06/11/2017	
गुरु	16/07/2015
शनि	17/12/2015
बुध	03/05/2016
केतु	29/06/2016
शुक्र	09/12/2016
सूर्य	26/01/2017
चंद्र	17/04/2017
मंगल	13/06/2017
राहु	06/11/2017

शुक्र - शनि	
06/11/2017	
06/01/2021	
शनि	08/05/2018
बुध	19/10/2018
केतु	26/12/2018
शुक्र	07/07/2019
सूर्य	02/09/2019
चंद्र	08/12/2019
मंगल	13/02/2020
राहु	05/08/2020
गुरु	06/01/2021

शुक्र - बुध	
06/01/2021	
07/11/2023	
बुध	02/06/2021
केतु	01/08/2021
शुक्र	20/01/2022
सूर्य	13/03/2022
चंद्र	07/06/2022
मंगल	07/08/2022
राहु	09/01/2023
गुरु	27/05/2023
शनि	07/11/2023

शुक्र - केतु	
07/11/2023	
06/01/2025	
केतु	02/12/2023
शुक्र	11/02/2024
सूर्य	03/03/2024
चंद्र	07/04/2024
मंगल	02/05/2024
राहु	05/07/2024
गुरु	31/08/2024
शनि	07/11/2024
बुध	06/01/2025

सूर्य - सूर्य	
06/01/2025	
25/04/2025	
सूर्य	11/01/2025
चंद्र	21/01/2025
मंगल	27/01/2025
राहु	12/02/2025
गुरु	27/02/2025
शनि	16/03/2025
बुध	01/04/2025
केतु	07/04/2025
शुक्र	25/04/2025

सूर्य - चंद्र	
25/04/2025	
25/10/2025	
चंद्र	11/05/2025
मंगल	21/05/2025
राहु	18/06/2025
गुरु	12/07/2025
शनि	10/08/2025
बुध	05/09/2025
केतु	16/09/2025
शुक्र	16/10/2025
सूर्य	25/10/2025

सूर्य - मंगल	
25/10/2025	
02/03/2026	
मंगल	02/11/2025
राहु	21/11/2025
गुरु	08/12/2025
शनि	28/12/2025
बुध	15/01/2026
केतु	23/01/2026
शुक्र	13/02/2026
सूर्य	19/02/2026
चंद्र	02/03/2026

सूर्य - राहु	
02/03/2026	
25/01/2027	
राहु	20/04/2026
गुरु	03/06/2026
शनि	25/07/2026
बुध	10/09/2026
केतु	29/09/2026
शुक्र	23/11/2026
सूर्य	09/12/2026
चंद्र	06/01/2027
मंगल	25/01/2027

सूर्य - गुरु	
25/01/2027	
13/11/2027	
गुरु	05/03/2027
शनि	20/04/2027
बुध	31/05/2027
केतु	17/06/2027
शुक्र	05/08/2027
सूर्य	20/08/2027
चंद्र	13/09/2027
मंगल	30/09/2027
राहु	13/11/2027

सूर्य - शनि	
13/11/2027	
25/10/2028	
शनि	07/01/2028
बुध	25/02/2028
केतु	16/03/2028
शुक्र	13/05/2028
सूर्य	30/05/2028
चंद्र	28/06/2028
मंगल	19/07/2028
राहु	09/09/2028
गुरु	25/10/2028

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
25/10/2028		31/08/2029		06/01/2030		06/01/2031		07/11/2031	
31/08/2029		06/01/2030		06/01/2031		07/11/2031		07/06/2032	
बुध	08/12/2028	केतु	08/09/2029	शुक्र	08/03/2030	चंद्र	01/02/2031	मंगल	19/11/2031
केतु	26/12/2028	शुक्र	29/09/2029	सूर्य	26/03/2030	मंगल	19/02/2031	राहु	21/12/2031
शुक्र	16/02/2029	सूर्य	05/10/2029	चंद्र	26/04/2030	राहु	05/04/2031	गुरु	19/01/2032
सूर्य	03/03/2029	चंद्र	16/10/2029	मंगल	17/05/2030	गुरु	16/05/2031	शनि	21/02/2032
चंद्र	29/03/2029	मंगल	24/10/2029	राहु	11/07/2030	शनि	03/07/2031	बुध	23/03/2032
मंगल	16/04/2029	राहु	12/11/2029	गुरु	29/08/2030	बुध	15/08/2031	केतु	04/04/2032
राहु	02/06/2029	गुरु	29/11/2029	शनि	25/10/2030	केतु	02/09/2031	शुक्र	09/05/2032
गुरु	13/07/2029	शनि	19/12/2029	बुध	16/12/2030	शुक्र	23/10/2031	सूर्य	20/05/2032
शनि	31/08/2029	बुध	06/01/2030	केतु	06/01/2031	सूर्य	07/11/2031	चंद्र	07/06/2032

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
07/06/2032		07/12/2033		08/04/2035		06/11/2036		07/04/2038	
07/12/2033		08/04/2035		06/11/2036		07/04/2038		07/11/2038	
राहु	28/08/2032	गुरु	10/02/2034	शनि	08/07/2035	बुध	18/01/2037	केतु	20/04/2038
गुरु	09/11/2032	शनि	28/04/2034	बुध	28/09/2035	केतु	18/02/2037	शुक्र	25/05/2038
शनि	04/02/2033	बुध	06/07/2034	केतु	01/11/2035	शुक्र	15/05/2037	सूर्य	05/06/2038
बुध	22/04/2033	केतु	03/08/2034	शुक्र	05/02/2036	सूर्य	10/06/2037	चंद्र	23/06/2038
केतु	24/05/2033	शुक्र	23/10/2034	सूर्य	05/03/2036	चंद्र	23/07/2037	मंगल	05/07/2038
शुक्र	24/08/2033	सूर्य	17/11/2034	चंद्र	22/04/2036	मंगल	22/08/2037	राहु	06/08/2038
सूर्य	20/09/2033	चंद्र	27/12/2034	मंगल	26/05/2036	राहु	08/11/2037	गुरु	04/09/2038
चंद्र	05/11/2033	मंगल	25/01/2035	राहु	21/08/2036	गुरु	16/01/2038	शनि	07/10/2038
मंगल	07/12/2033	राहु	08/04/2035	गुरु	06/11/2036	शनि	07/04/2038	बुध	07/11/2038

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
07/11/2038		07/07/2040		06/01/2041		04/06/2041		23/06/2042	
07/07/2040		06/01/2041		04/06/2041		23/06/2042		29/05/2043	
शुक्र	16/02/2039	सूर्य	16/07/2040	मंगल	15/01/2041	राहु	01/08/2041	गुरु	07/08/2042
सूर्य	18/03/2039	चंद्र	01/08/2040	राहु	06/02/2041	गुरु	21/09/2041	शनि	30/09/2042
चंद्र	08/05/2039	मंगल	11/08/2040	गुरु	26/02/2041	शनि	20/11/2041	बुध	17/11/2042
मंगल	13/06/2039	राहु	08/09/2040	शनि	21/03/2041	बुध	14/01/2042	केतु	07/12/2042
राहु	12/09/2039	गुरु	02/10/2040	बुध	12/04/2041	केतु	05/02/2042	शुक्र	02/02/2043
गुरु	02/12/2039	शनि	31/10/2040	केतु	20/04/2041	शुक्र	10/04/2042	सूर्य	19/02/2043
शनि	08/03/2040	बुध	26/11/2040	शुक्र	15/05/2041	सूर्य	29/04/2042	चंद्र	19/03/2043
बुध	02/06/2040	केतु	06/12/2040	सूर्य	23/05/2041	चंद्र	31/05/2042	मंगल	08/04/2043
केतु	07/07/2040	शुक्र	06/01/2041	चंद्र	04/06/2041	मंगल	23/06/2042	राहु	29/05/2043

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि	
29/05/2043	
07/07/2044	
शनि	02/08/2043
बुध	28/09/2043
केतु	22/10/2043
शुक्र	28/12/2043
सूर्य	17/01/2044
चंद्र	20/02/2044
मंगल	15/03/2044
राहु	14/05/2044
गुरु	07/07/2044

मंगल - बुध	
07/07/2044	
05/07/2045	
बुध	28/08/2044
केतु	18/09/2044
शुक्र	17/11/2044
सूर्य	05/12/2044
चंद्र	04/01/2045
मंगल	26/01/2045
राहु	21/03/2045
गुरु	08/05/2045
शनि	05/07/2045

मंगल - केतु	
05/07/2045	
01/12/2045	
केतु	13/07/2045
शुक्र	07/08/2045
सूर्य	15/08/2045
चंद्र	27/08/2045
मंगल	05/09/2045
राहु	27/09/2045
गुरु	17/10/2045
शनि	10/11/2045
बुध	01/12/2045

मंगल - शुक्र	
01/12/2045	
31/01/2047	
शुक्र	10/02/2046
सूर्य	03/03/2046
चंद्र	07/04/2046
मंगल	02/05/2046
राहु	05/07/2046
गुरु	31/08/2046
शनि	07/11/2046
बुध	06/01/2047
केतु	31/01/2047

मंगल - सूर्य	
31/01/2047	
08/06/2047	
सूर्य	06/02/2047
चंद्र	17/02/2047
मंगल	24/02/2047
राहु	15/03/2047
गुरु	01/04/2047
शनि	22/04/2047
बुध	10/05/2047
केतु	17/05/2047
शुक्र	08/06/2047

मंगल - चंद्र	
08/06/2047	
07/01/2048	
चंद्र	25/06/2047
मंगल	08/07/2047
राहु	09/08/2047
गुरु	06/09/2047
शनि	10/10/2047
बुध	09/11/2047
केतु	22/11/2047
शुक्र	27/12/2047
सूर्य	07/01/2048

राहु - राहु	
07/01/2048	
19/09/2050	
राहु	03/06/2048
गुरु	12/10/2048
शनि	17/03/2049
बुध	04/08/2049
केतु	30/09/2049
शुक्र	14/03/2050
सूर्य	02/05/2050
चंद्र	23/07/2050
मंगल	19/09/2050

राहु - गुरु	
19/09/2050	
11/02/2053	
गुरु	14/01/2051
शनि	02/06/2051
बुध	04/10/2051
केतु	24/11/2051
शुक्र	18/04/2052
सूर्य	01/06/2052
चंद्र	13/08/2052
मंगल	03/10/2052
राहु	11/02/2053

राहु - शनि	
11/02/2053	
19/12/2055	
शनि	26/07/2053
बुध	21/12/2053
केतु	19/02/2054
शुक्र	12/08/2054
सूर्य	03/10/2054
चंद्र	29/12/2054
मंगल	27/02/2055
राहु	03/08/2055
गुरु	19/12/2055

राहु - बुध	
19/12/2055	
08/07/2058	
बुध	29/04/2056
केतु	23/06/2056
शुक्र	25/11/2056
सूर्य	10/01/2057
चंद्र	29/03/2057
मंगल	22/05/2057
राहु	09/10/2057
गुरु	10/02/2058
शनि	08/07/2058

राहु - केतु	
08/07/2058	
26/07/2059	
केतु	30/07/2058
शुक्र	02/10/2058
सूर्य	21/10/2058
चंद्र	22/11/2058
मंगल	15/12/2058
राहु	10/02/2059
गुरु	02/04/2059
शनि	02/06/2059
बुध	26/07/2059

राहु - शुक्र	
26/07/2059	
26/07/2062	
शुक्र	25/01/2060
सूर्य	20/03/2060
चंद्र	19/06/2060
मंगल	22/08/2060
राहु	02/02/2061
गुरु	28/06/2061
शनि	19/12/2061
बुध	23/05/2062
केतु	26/07/2062

राहु - सूर्य	
26/07/2062	
20/06/2063	
सूर्य	11/08/2062
चंद्र	08/09/2062
मंगल	27/09/2062
राहु	15/11/2062
गुरु	29/12/2062
शनि	19/02/2063
बुध	07/04/2063
केतु	26/04/2063
शुक्र	20/06/2063

राहु - चंद्र	
20/06/2063	
19/12/2064	
चंद्र	04/08/2063
मंगल	05/09/2063
राहु	27/11/2063
गुरु	08/02/2064
शनि	04/05/2064
बुध	21/07/2064
केतु	22/08/2064
शुक्र	21/11/2064
सूर्य	19/12/2064

राहु - मंगल	
19/12/2064	
06/01/2066	
मंगल	10/01/2065
राहु	09/03/2065
गुरु	29/04/2065
शनि	28/06/2065
बुध	22/08/2065
केतु	13/09/2065
शुक्र	16/11/2065
सूर्य	05/12/2065
चंद्र	06/01/2066

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
06/01/2066		24/02/2068		07/09/2070		13/12/2072		18/11/2073	
24/02/2068		07/09/2070		13/12/2072		18/11/2073		19/07/2076	
गुरु	20/04/2066	शनि	20/07/2068	बुध	02/01/2071	केतु	01/01/2073	शुक्र	30/04/2074
शनि	21/08/2066	बुध	28/11/2068	केतु	19/02/2071	शुक्र	27/02/2073	सूर्य	18/06/2074
बुध	10/12/2066	केतु	21/01/2069	शुक्र	07/07/2071	सूर्य	16/03/2073	चंद्र	07/09/2074
केतु	24/01/2067	शुक्र	24/06/2069	सूर्य	18/08/2071	चंद्र	14/04/2073	मंगल	02/11/2074
शुक्र	03/06/2067	सूर्य	09/08/2069	चंद्र	26/10/2071	मंगल	04/05/2073	राहु	29/03/2075
सूर्य	12/07/2067	चंद्र	26/10/2069	मंगल	13/12/2071	राहु	24/06/2073	गुरु	05/08/2075
चंद्र	15/09/2067	मंगल	19/12/2069	राहु	15/04/2072	गुरु	08/08/2073	शनि	07/01/2076
मंगल	30/10/2067	राहु	06/05/2070	गुरु	03/08/2072	शनि	01/10/2073	बुध	24/05/2076
राहु	24/02/2068	गुरु	07/09/2070	शनि	13/12/2072	बुध	18/11/2073	केतु	19/07/2076

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
19/07/2076		08/05/2077		07/09/2078		14/08/2079		06/01/2082	
08/05/2077		07/09/2078		14/08/2079		06/01/2082		09/01/2085	
सूर्य	03/08/2076	चंद्र	17/06/2077	मंगल	27/09/2078	राहु	23/12/2079	शनि	29/06/2082
चंद्र	27/08/2076	मंगल	16/07/2077	राहु	17/11/2078	गुरु	18/04/2080	बुध	02/12/2082
मंगल	13/09/2076	राहु	27/09/2077	गुरु	01/01/2079	शनि	04/09/2080	केतु	04/02/2083
राहु	27/10/2076	गुरु	01/12/2077	शनि	24/02/2079	बुध	06/01/2081	शुक्र	06/08/2083
गुरु	05/12/2076	शनि	16/02/2078	बुध	13/04/2079	केतु	26/02/2081	सूर्य	30/09/2083
शनि	21/01/2077	बुध	26/04/2078	केतु	03/05/2079	शुक्र	22/07/2081	चंद्र	31/12/2083
बुध	03/03/2077	केतु	24/05/2078	शुक्र	29/06/2079	सूर्य	04/09/2081	मंगल	04/03/2084
केतु	20/03/2077	शुक्र	13/08/2078	सूर्य	16/07/2079	चंद्र	16/11/2081	राहु	15/08/2084
शुक्र	08/05/2077	सूर्य	07/09/2078	चंद्र	14/08/2079	मंगल	06/01/2082	गुरु	09/01/2085

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
09/01/2085		19/09/2087		28/10/2088		29/12/2091		10/12/2092	
19/09/2087		28/10/2088		29/12/2091		10/12/2092		11/07/2094	
बुध	28/05/2085	केतु	13/10/2087	शुक्र	09/05/2089	सूर्य	15/01/2092	चंद्र	27/01/2093
केतु	25/07/2085	शुक्र	19/12/2087	सूर्य	06/07/2089	चंद्र	13/02/2092	मंगल	01/03/2093
शुक्र	04/01/2086	सूर्य	08/01/2088	चंद्र	10/10/2089	मंगल	04/03/2092	राहु	27/05/2093
सूर्य	23/02/2086	चंद्र	11/02/2088	मंगल	16/12/2089	राहु	25/04/2092	गुरु	12/08/2093
चंद्र	16/05/2086	मंगल	06/03/2088	राहु	08/06/2090	गुरु	10/06/2092	शनि	12/11/2093
मंगल	12/07/2086	राहु	05/05/2088	गुरु	09/11/2090	शनि	04/08/2092	बुध	02/02/2094
राहु	06/12/2086	गुरु	28/06/2088	शनि	11/05/2091	बुध	22/09/2092	केतु	08/03/2094
गुरु	16/04/2087	शनि	01/09/2088	बुध	22/10/2091	केतु	13/10/2092	शुक्र	12/06/2094
शनि	19/09/2087	बुध	28/10/2088	केतु	29/12/2091	शुक्र	10/12/2092	सूर्य	11/07/2094

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - गुरु - मंगल		शुक्र - गुरु - राहु		शुक्र - शनि - शनि		शुक्र - शनि - बुध	
17/04/2017 21:11		13/06/2017 16:47		06/11/2017 19:11		08/05/2018 22:22	
13/06/2017 16:47		06/11/2017 19:11		08/05/2018 22:22		19/10/2018 18:53	
मंगल	21/04/2017 04:44	राहु	05/07/2017 14:45	शनि	05/12/2017 19:05	बुध	01/06/2018 03:28
राहु	29/04/2017 17:16	गुरु	25/07/2017 02:16	बुध	31/12/2017 17:44	केतु	10/06/2018 16:52
गुरु	07/05/2017 07:05	शनि	17/08/2017 05:27	केतु	11/01/2018 10:07	शुक्र	08/07/2018 00:17
शनि	16/05/2017 06:59	बुध	06/09/2017 22:11	शुक्र	10/02/2018 22:39	सूर्य	16/07/2018 04:55
बुध	24/05/2017 08:10	केतु	15/09/2017 10:43	सूर्य	20/02/2018 02:25	चंद्र	29/07/2018 20:37
केतु	27/05/2017 15:42	शुक्र	09/10/2017 19:07	चंद्र	07/03/2018 08:40	मंगल	08/08/2018 10:01
शुक्र	06/06/2017 02:58	सूर्य	17/10/2017 02:27	मंगल	18/03/2018 01:04	राहु	01/09/2018 23:54
सूर्य	08/06/2017 23:09	चंद्र	29/10/2017 06:39	राहु	14/04/2018 12:20	गुरु	23/09/2018 20:14
चंद्र	13/06/2017 16:47	मंगल	06/11/2017 19:11	गुरु	08/05/2018 22:22	शनि	19/10/2018 18:53

शुक्र - शनि - केतु		शुक्र - शनि - शुक्र		शुक्र - शनि - सूर्य		शुक्र - शनि - चंद्र	
19/10/2018 18:53		26/12/2018 06:10		07/07/2019 00:40		02/09/2019 20:37	
26/12/2018 06:10		07/07/2019 00:40		02/09/2019 20:37		08/12/2019 05:52	
केतु	23/10/2018 17:21	शुक्र	27/01/2019 09:15	सूर्य	09/07/2019 22:03	चंद्र	10/09/2019 21:23
शुक्र	03/11/2018 23:13	सूर्य	06/02/2019 00:34	चंद्र	14/07/2019 17:43	मंगल	16/09/2019 12:19
सूर्य	07/11/2018 08:11	चंद्र	22/02/2019 02:07	मंगल	18/07/2019 02:41	राहु	30/09/2019 23:18
चंद्र	12/11/2018 23:07	मंगल	05/03/2019 07:59	राहु	26/07/2019 18:53	गुरु	13/10/2019 19:44
मंगल	16/11/2018 21:35	राहु	03/04/2019 05:58	गुरु	03/08/2019 11:56	शनि	29/10/2019 02:00
राहु	27/11/2018 00:28	गुरु	28/04/2019 22:50	शनि	12/08/2019 15:42	बुध	11/11/2019 17:43
गुरु	06/12/2018 00:23	शनि	29/05/2019 11:22	बुध	20/08/2019 20:19	केतु	17/11/2019 08:39
शनि	16/12/2018 16:46	बुध	25/06/2019 18:47	केतु	24/08/2019 05:17	शुक्र	03/12/2019 10:12
बुध	26/12/2018 06:10	केतु	07/07/2019 00:40	शुक्र	02/09/2019 20:37	सूर्य	08/12/2019 05:52

शुक्र - शनि - मंगल		शुक्र - शनि - राहु		शुक्र - शनि - गुरु		शुक्र - बुध - बुध	
08/12/2019 05:52		13/02/2020 17:08		05/08/2020 04:59		06/01/2021 10:11	
13/02/2020 17:08		05/08/2020 04:59		06/01/2021 10:11		02/06/2021 00:46	
मंगल	12/12/2019 04:19	राहु	10/03/2020 17:43	गुरु	25/08/2020 18:29	बुध	27/01/2021 04:39
राहु	22/12/2019 07:12	गुरु	02/04/2020 20:54	शनि	19/09/2020 04:30	केतु	04/02/2021 17:54
गुरु	31/12/2019 07:07	शनि	30/04/2020 08:10	बुध	11/10/2020 00:50	शुक्र	01/03/2021 04:20
शनि	10/01/2020 23:30	बुध	24/05/2020 22:03	केतु	20/10/2020 00:44	सूर्य	08/03/2021 12:15
बुध	20/01/2020 12:54	केतु	04/06/2020 00:56	शुक्र	14/11/2020 17:36	चंद्र	20/03/2021 17:28
केतु	24/01/2020 11:21	शुक्र	02/07/2020 22:55	सूर्य	22/11/2020 10:40	मंगल	29/03/2021 06:43
शुक्र	04/02/2020 17:14	सूर्य	11/07/2020 15:06	चंद्र	05/12/2020 07:06	राहु	20/04/2021 06:30
सूर्य	08/02/2020 02:12	चंद्र	26/07/2020 02:06	मंगल	14/12/2020 07:00	गुरु	09/05/2021 19:39
चंद्र	13/02/2020 17:08	मंगल	05/08/2020 04:59	राहु	06/01/2021 10:11	शनि	02/06/2021 00:46

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - बुध - केतु		शुक्र - बुध - शुक्र		शुक्र - बुध - सूर्य		शुक्र - बुध - चंद्र	
02/06/2021 00:46		01/08/2021 09:35		20/01/2022 21:05		13/03/2022 14:56	
01/08/2021 09:35		20/01/2022 21:05		13/03/2022 14:56		07/06/2022 20:41	
केतु	05/06/2021 13:16	शुक्र	30/08/2021 03:30	सूर्य	23/01/2022 11:11	चंद्र	20/03/2022 19:25
शुक्र	15/06/2021 14:45	सूर्य	07/09/2021 18:29	चंद्र	27/01/2022 18:40	मंगल	25/03/2022 20:09
सूर्य	18/06/2021 15:11	चंद्र	22/09/2021 03:26	मंगल	30/01/2022 19:06	राहु	07/04/2022 18:37
चंद्र	23/06/2021 15:55	मंगल	02/10/2021 04:54	राहु	07/02/2022 13:23	गुरु	19/04/2022 06:35
मंगल	27/06/2021 04:26	राहु	28/10/2021 01:50	गुरु	14/02/2022 10:58	शनि	02/05/2022 22:17
राहु	06/07/2021 05:46	गुरु	20/11/2021 01:46	शनि	22/02/2022 15:35	बुध	15/05/2022 03:30
गुरु	14/07/2021 06:56	शनि	17/12/2021 09:11	बुध	01/03/2022 23:31	केतु	20/05/2022 04:14
शनि	23/07/2021 20:20	बुध	10/01/2022 19:37	केतु	04/03/2022 23:58	शुक्र	03/06/2022 13:12
बुध	01/08/2021 09:35	केतु	20/01/2022 21:05	शुक्र	13/03/2022 14:56	सूर्य	07/06/2022 20:41

शुक्र - बुध - मंगल		शुक्र - बुध - राहु		शुक्र - बुध - गुरु		शुक्र - बुध - शनि	
07/06/2022 20:41		07/08/2022 05:31		09/01/2023 11:04		27/05/2023 10:40	
07/08/2022 05:31		09/01/2023 11:04		27/05/2023 10:40		07/11/2023 07:11	
मंगल	11/06/2022 09:12	राहु	30/08/2022 12:21	गुरु	27/01/2023 20:36	शनि	22/06/2023 09:19
राहु	20/06/2022 10:31	गुरु	20/09/2022 05:05	शनि	18/02/2023 16:57	बुध	15/07/2023 14:25
गुरु	28/06/2022 11:42	शनि	14/10/2022 18:58	बुध	10/03/2023 06:05	केतु	25/07/2023 03:49
शनि	08/07/2022 01:06	बुध	05/11/2022 18:45	केतु	18/03/2023 07:16	शुक्र	21/08/2023 11:14
बुध	16/07/2022 14:21	केतु	14/11/2022 20:04	शुक्र	10/04/2023 07:12	सूर्य	29/08/2023 15:52
केतु	20/07/2022 02:52	शुक्र	10/12/2022 17:00	सूर्य	17/04/2023 04:47	चंद्र	12/09/2023 07:34
शुक्र	30/07/2022 04:20	सूर्य	18/12/2022 11:16	चंद्र	28/04/2023 16:45	मंगल	21/09/2023 20:58
सूर्य	02/08/2022 04:46	चंद्र	31/12/2022 09:44	मंगल	06/05/2023 17:55	राहु	16/10/2023 10:51
चंद्र	07/08/2022 05:31	मंगल	09/01/2023 11:04	राहु	27/05/2023 10:40	गुरु	07/11/2023 07:11

शुक्र - केतु - केतु		शुक्र - केतु - शुक्र		शुक्र - केतु - सूर्य		शुक्र - केतु - चंद्र	
07/11/2023 07:11		02/12/2023 03:46		11/02/2024 04:16		03/03/2024 11:37	
02/12/2023 03:46		11/02/2024 04:16		03/03/2024 11:37		07/04/2024 23:52	
केतु	08/11/2023 17:59	शुक्र	13/12/2023 23:51	सूर्य	12/02/2024 05:50	चंद्र	06/03/2024 10:38
शुक्र	12/11/2023 21:25	सूर्य	17/12/2023 13:04	चंद्र	14/02/2024 00:26	मंगल	08/03/2024 12:21
सूर्य	14/11/2023 03:15	चंद्र	23/12/2023 11:07	मंगल	15/02/2024 06:16	राहु	13/03/2024 20:11
चंद्र	16/11/2023 04:57	मंगल	27/12/2023 14:32	राहु	18/02/2024 10:58	गुरु	18/03/2024 13:49
मंगल	17/11/2023 15:45	राहु	07/01/2024 06:13	गुरु	21/02/2024 07:09	शनि	24/03/2024 04:45
राहु	21/11/2023 09:15	गुरु	16/01/2024 17:29	शनि	24/02/2024 16:07	बुध	29/03/2024 05:29
गुरु	24/11/2023 16:47	शनि	27/01/2024 23:22	बुध	27/02/2024 16:33	केतु	31/03/2024 07:12
शनि	28/11/2023 15:15	बुध	07/02/2024 00:50	केतु	28/02/2024 22:23	शुक्र	06/04/2024 05:15
बुध	02/12/2023 03:46	केतु	11/02/2024 04:16	शुक्र	03/03/2024 11:37	सूर्य	07/04/2024 23:52

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - केतु - मंगल	
07/04/2024 23:52	
02/05/2024 20:26	
मंगल	09/04/2024 10:40
राहु	13/04/2024 04:09
गुरु	16/04/2024 11:41
शनि	20/04/2024 10:09
बुध	23/04/2024 22:40
केतु	25/04/2024 09:28
शुक्र	29/04/2024 12:53
सूर्य	30/04/2024 18:43
चंद्र	02/05/2024 20:26

शुक्र - केतु - राहु	
02/05/2024 20:26	
05/07/2024 18:29	
राहु	12/05/2024 10:33
गुरु	20/05/2024 23:05
शनि	31/05/2024 01:58
बुध	09/06/2024 03:18
केतु	12/06/2024 20:47
शुक्र	23/06/2024 12:27
सूर्य	26/06/2024 17:10
चंद्र	02/07/2024 01:00
मंगल	05/07/2024 18:29

शुक्र - केतु - गुरु	
05/07/2024 18:29	
31/08/2024 14:05	
गुरु	13/07/2024 08:18
शनि	22/07/2024 08:12
बुध	30/07/2024 09:23
केतु	02/08/2024 16:55
शुक्र	12/08/2024 04:11
सूर्य	15/08/2024 00:22
चंद्र	19/08/2024 18:00
मंगल	23/08/2024 01:33
राहु	31/08/2024 14:05

शुक्र - केतु - शनि	
31/08/2024 14:05	
07/11/2024 01:22	
शनि	11/09/2024 06:28
बुध	20/09/2024 19:52
केतु	24/09/2024 18:19
शुक्र	06/10/2024 00:12
सूर्य	09/10/2024 09:10
चंद्र	15/10/2024 00:06
मंगल	18/10/2024 22:34
राहु	29/10/2024 01:27
गुरु	07/11/2024 01:22

शुक्र - केतु - बुध	
07/11/2024 01:22	
06/01/2025 10:11	
बुध	15/11/2024 14:37
केतु	19/11/2024 03:07
शुक्र	29/11/2024 04:36
सूर्य	02/12/2024 05:02
चंद्र	07/12/2024 05:46
मंगल	10/12/2024 18:17
राहु	19/12/2024 19:37
गुरु	27/12/2024 20:47
शनि	06/01/2025 10:11

सूर्य - सूर्य - सूर्य	
06/01/2025 10:11	
11/01/2025 21:40	
सूर्य	06/01/2025 16:46
चंद्र	07/01/2025 03:43
मंगल	07/01/2025 11:23
राहु	08/01/2025 07:07
गुरु	09/01/2025 00:39
शनि	09/01/2025 21:28
बुध	10/01/2025 16:05
केतु	10/01/2025 23:46
शुक्र	11/01/2025 21:40

सूर्य - सूर्य - चंद्र	
11/01/2025 21:40	
21/01/2025 00:49	
चंद्र	12/01/2025 15:56
मंगल	13/01/2025 04:43
राहु	14/01/2025 13:36
गुरु	15/01/2025 18:49
शनि	17/01/2025 05:31
बुध	18/01/2025 12:33
केतु	19/01/2025 01:21
शुक्र	20/01/2025 13:52
सूर्य	21/01/2025 00:49

सूर्य - सूर्य - मंगल	
21/01/2025 00:49	
27/01/2025 10:14	
मंगल	21/01/2025 09:46
राहु	22/01/2025 08:47
गुरु	23/01/2025 05:14
शनि	24/01/2025 05:32
बुध	25/01/2025 03:16
केतु	25/01/2025 12:12
शुक्र	26/01/2025 13:47
सूर्य	26/01/2025 21:27
चंद्र	27/01/2025 10:14

सूर्य - सूर्य - राहु	
27/01/2025 10:14	
12/02/2025 20:42	
राहु	29/01/2025 21:24
गुरु	01/02/2025 02:00
शनि	03/02/2025 16:27
बुध	06/02/2025 00:20
केतु	06/02/2025 23:21
शुक्र	09/02/2025 17:06
सूर्य	10/02/2025 12:49
चंद्र	11/02/2025 21:41
मंगल	12/02/2025 20:42

सूर्य - सूर्य - गुरु	
12/02/2025 20:42	
27/02/2025 11:20	
गुरु	14/02/2025 19:27
शनि	17/02/2025 02:58
बुध	19/02/2025 04:39
केतु	20/02/2025 01:06
शुक्र	22/02/2025 11:32
सूर्य	23/02/2025 05:04
चंद्र	24/02/2025 10:17
मंगल	25/02/2025 06:45
राहु	27/02/2025 11:20

सूर्य - सूर्य - शनि	
27/02/2025 11:20	
16/03/2025 19:43	
शनि	02/03/2025 05:16
बुध	04/03/2025 16:15
केतु	05/03/2025 16:33
शुक्र	08/03/2025 13:56
सूर्य	09/03/2025 10:46
चंद्र	10/03/2025 21:28
मंगल	11/03/2025 21:45
राहु	14/03/2025 12:12
गुरु	16/03/2025 19:43

सूर्य - सूर्य - बुध	
16/03/2025 19:43	
01/04/2025 08:17	
बुध	19/03/2025 00:30
केतु	19/03/2025 22:14
शुक्र	22/03/2025 12:20
सूर्य	23/03/2025 06:57
चंद्र	24/03/2025 14:00
मंगल	25/03/2025 11:44
राहु	27/03/2025 19:37
गुरु	29/03/2025 21:17
शनि	01/04/2025 08:17

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - सूर्य - केतु		सूर्य - सूर्य - शुक्र		सूर्य - चंद्र - चंद्र		सूर्य - चंद्र - मंगल	
01/04/2025 08:17		07/04/2025 17:41		25/04/2025 23:59		11/05/2025 05:14	
07/04/2025 17:41		25/04/2025 23:59		11/05/2025 05:14		21/05/2025 20:55	
केतु	01/04/2025 17:14	शुक्र	10/04/2025 18:44	चंद्र	27/04/2025 06:25	मंगल	11/05/2025 20:09
शुक्र	02/04/2025 18:48	सूर्य	11/04/2025 16:39	मंगल	28/04/2025 03:44	राहु	13/05/2025 10:30
सूर्य	03/04/2025 02:28	चंद्र	13/04/2025 05:10	राहु	30/04/2025 10:31	गुरु	14/05/2025 20:35
चंद्र	03/04/2025 15:15	मंगल	14/04/2025 06:45	गुरु	02/05/2025 11:13	शनि	16/05/2025 13:04
मंगल	04/04/2025 00:12	राहु	17/04/2025 00:29	शनि	04/05/2025 21:03	बुध	18/05/2025 01:18
राहु	04/04/2025 23:13	गुरु	19/04/2025 10:56	बुध	07/05/2025 00:47	केतु	18/05/2025 16:12
गुरु	05/04/2025 19:40	शनि	22/04/2025 08:19	केतु	07/05/2025 22:06	शुक्र	20/05/2025 10:49
शनि	06/04/2025 19:57	बुध	24/04/2025 22:25	शुक्र	10/05/2025 10:58	सूर्य	20/05/2025 23:36
बुध	07/04/2025 17:41	केतु	25/04/2025 23:59	सूर्य	11/05/2025 05:14	चंद्र	21/05/2025 20:55

सूर्य - चंद्र - राहु		सूर्य - चंद्र - गुरु		सूर्य - चंद्र - शनि		सूर्य - चंद्र - बुध	
21/05/2025 20:55		18/06/2025 06:22		12/07/2025 14:46		10/08/2025 12:44	
18/06/2025 06:22		12/07/2025 14:46		10/08/2025 12:44		05/09/2025 09:40	
राहु	25/05/2025 23:32	गुरु	21/06/2025 12:17	शनि	17/07/2025 04:38	बुध	14/08/2025 04:42
गुरु	29/05/2025 15:11	शनि	25/06/2025 08:49	बुध	21/07/2025 06:57	केतु	15/08/2025 16:55
शनि	02/06/2025 23:17	बुध	28/06/2025 19:36	केतु	22/07/2025 23:26	शुक्र	20/08/2025 00:24
बुध	06/06/2025 20:25	केतु	30/06/2025 05:41	शुक्र	27/07/2025 19:06	सूर्य	21/08/2025 07:27
केतु	08/06/2025 10:46	शुक्र	04/07/2025 07:05	सूर्य	29/07/2025 05:48	चंद्र	23/08/2025 11:12
शुक्र	13/06/2025 00:21	सूर्य	05/07/2025 12:19	चंद्र	31/07/2025 15:38	मंगल	24/08/2025 23:25
सूर्य	14/06/2025 09:13	चंद्र	07/07/2025 13:01	मंगल	02/08/2025 08:06	राहु	28/08/2025 20:33
चंद्र	16/06/2025 16:00	मंगल	08/07/2025 23:06	राहु	06/08/2025 16:12	गुरु	01/09/2025 07:21
मंगल	18/06/2025 06:22	राहु	12/07/2025 14:46	गुरु	10/08/2025 12:44	शनि	05/09/2025 09:40

सूर्य - चंद्र - केतु		सूर्य - चंद्र - शुक्र		सूर्य - चंद्र - सूर्य		सूर्य - मंगल - मंगल	
05/09/2025 09:40		16/09/2025 01:20		16/10/2025 11:50		25/10/2025 14:59	
16/09/2025 01:20		16/10/2025 11:50		25/10/2025 14:59		02/11/2025 01:57	
केतु	06/09/2025 00:34	शुक्र	21/09/2025 03:05	सूर्य	16/10/2025 22:48	मंगल	26/10/2025 01:25
शुक्र	07/09/2025 19:11	सूर्य	22/09/2025 15:37	चंद्र	17/10/2025 17:03	राहु	27/10/2025 04:16
सूर्य	08/09/2025 07:58	चंद्र	25/09/2025 04:29	मंगल	18/10/2025 05:50	गुरु	28/10/2025 04:08
चंद्र	09/09/2025 05:17	मंगल	26/09/2025 23:06	राहु	19/10/2025 14:43	शनि	29/10/2025 08:28
मंगल	09/09/2025 20:11	राहु	01/10/2025 12:40	गुरु	20/10/2025 19:56	बुध	30/10/2025 09:49
राहु	11/09/2025 10:33	गुरु	05/10/2025 14:04	शनि	22/10/2025 06:38	केतु	30/10/2025 20:16
गुरु	12/09/2025 20:38	शनि	10/10/2025 09:44	बुध	23/10/2025 13:41	शुक्र	01/11/2025 02:06
शनि	14/09/2025 13:07	बुध	14/10/2025 17:13	केतु	24/10/2025 02:28	सूर्य	01/11/2025 11:03
बुध	16/09/2025 01:20	केतु	16/10/2025 11:50	शुक्र	25/10/2025 14:59	चंद्र	02/11/2025 01:57

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - गुरु - मंगल - मंगल		शुक्र - गुरु - मंगल - राहु		शुक्र - गुरु - मंगल - गुरु		शुक्र - गुरु - मंगल - शनि	
17/04/2017 21:11		21/04/2017 04:44		29/04/2017 17:16		07/05/2017 07:05	
21/04/2017 04:44		29/04/2017 17:16		07/05/2017 07:05		16/05/2017 06:59	
मंगल	18/04/2017 01:49	राहु	22/04/2017 11:25	गुरु	30/04/2017 17:31	शनि	08/05/2017 17:16
राहु	18/04/2017 13:45	गुरु	23/04/2017 14:41	शनि	01/05/2017 22:18	बुध	09/05/2017 23:51
गुरु	19/04/2017 00:22	शनि	24/04/2017 23:04	बुध	03/05/2017 00:03	केतु	10/05/2017 12:27
शनि	19/04/2017 12:57	बुध	26/04/2017 04:03	केतु	03/05/2017 10:40	शुक्र	12/05/2017 00:26
बुध	20/04/2017 00:13	केतु	26/04/2017 15:58	शुक्र	04/05/2017 16:58	सूर्य	12/05/2017 11:14
केतु	20/04/2017 04:52	शुक्र	28/04/2017 02:04	सूर्य	05/05/2017 02:03	चंद्र	13/05/2017 05:13
शुक्र	20/04/2017 18:07	सूर्य	28/04/2017 12:17	चंद्र	05/05/2017 17:12	मंगल	13/05/2017 17:49
सूर्य	20/04/2017 22:06	चंद्र	29/04/2017 05:20	मंगल	06/05/2017 03:49	राहु	15/05/2017 02:12
चंद्र	21/04/2017 04:44	मंगल	29/04/2017 17:16	राहु	07/05/2017 07:05	गुरु	16/05/2017 06:59

शुक्र - गुरु - मंगल - बुध		शुक्र - गुरु - मंगल - केतु		शुक्र - गुरु - मंगल - शुक्र		शुक्र - गुरु - मंगल - सूर्य	
16/05/2017 06:59		24/05/2017 08:10		27/05/2017 15:42		06/06/2017 02:58	
24/05/2017 08:10		27/05/2017 15:42		06/06/2017 02:58		08/06/2017 23:09	
बुध	17/05/2017 10:21	केतु	24/05/2017 12:48	शुक्र	29/05/2017 05:35	सूर्य	06/06/2017 06:23
केतु	17/05/2017 21:37	शुक्र	25/05/2017 02:03	सूर्य	29/05/2017 16:57	चंद्र	06/06/2017 12:04
शुक्र	19/05/2017 05:49	सूर्य	25/05/2017 06:02	चंद्र	30/05/2017 11:53	मंगल	06/06/2017 16:02
सूर्य	19/05/2017 15:28	चंद्र	25/05/2017 12:40	मंगल	31/05/2017 01:08	राहु	07/06/2017 02:16
चंद्र	20/05/2017 07:34	मंगल	25/05/2017 17:18	राहु	01/06/2017 11:14	गुरु	07/06/2017 11:21
मंगल	20/05/2017 18:50	राहु	26/05/2017 05:14	गुरु	02/06/2017 17:32	शनि	07/06/2017 22:09
राहु	21/05/2017 23:49	गुरु	26/05/2017 15:50	शनि	04/06/2017 05:31	बुध	08/06/2017 07:49
गुरु	23/05/2017 01:34	शनि	27/05/2017 04:26	बुध	05/06/2017 13:43	केतु	08/06/2017 11:47
शनि	24/05/2017 08:10	बुध	27/05/2017 15:42	केतु	06/06/2017 02:58	शुक्र	08/06/2017 23:09

शुक्र - गुरु - मंगल - चंद्र		शुक्र - गुरु - राहु - राहु		शुक्र - गुरु - राहु - गुरु		शुक्र - गुरु - राहु - शनि	
08/06/2017 23:09		13/06/2017 16:47		05/07/2017 14:45		25/07/2017 02:16	
13/06/2017 16:47		05/07/2017 14:45		25/07/2017 02:16		17/08/2017 05:27	
चंद्र	09/06/2017 08:37	राहु	16/06/2017 23:41	गुरु	08/07/2017 05:05	शनि	28/07/2017 18:10
मंगल	09/06/2017 15:15	गुरु	19/06/2017 21:48	शनि	11/07/2017 07:06	बुध	01/08/2017 00:49
राहु	10/06/2017 08:18	शनि	23/06/2017 09:05	बुध	14/07/2017 01:20	केतु	02/08/2017 09:12
गुरु	10/06/2017 23:27	बुध	26/06/2017 11:36	केतु	15/07/2017 04:36	शुक्र	06/08/2017 05:44
शनि	11/06/2017 17:26	केतु	27/06/2017 18:17	शुक्र	18/07/2017 10:32	सूर्य	07/08/2017 09:30
बुध	12/06/2017 09:32	शुक्र	01/07/2017 09:56	सूर्य	19/07/2017 09:54	चंद्र	09/08/2017 07:45
केतु	12/06/2017 16:10	सूर्य	02/07/2017 12:14	चंद्र	21/07/2017 00:52	मंगल	10/08/2017 16:09
शुक्र	13/06/2017 11:06	चंद्र	04/07/2017 08:04	मंगल	22/07/2017 04:08	राहु	14/08/2017 03:25
सूर्य	13/06/2017 16:47	मंगल	05/07/2017 14:45	राहु	25/07/2017 02:16	गुरु	17/08/2017 05:27

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - गुरु - राहु - बुध	
17/08/2017 05:27	
06/09/2017 22:11	
बुध	20/08/2017 03:49
केतु	21/08/2017 08:48
शुक्र	24/08/2017 19:35
सूर्य	25/08/2017 20:25
चंद्र	27/08/2017 13:49
मंगल	28/08/2017 18:47
राहु	31/08/2017 21:18
गुरु	03/09/2017 15:32
शनि	06/09/2017 22:11

शुक्र - गुरु - राहु - केतु	
06/09/2017 22:11	
15/09/2017 10:43	
केतु	07/09/2017 10:07
शुक्र	08/09/2017 20:12
सूर्य	09/09/2017 06:26
चंद्र	09/09/2017 23:29
मंगल	10/09/2017 11:25
राहु	11/09/2017 18:05
गुरु	12/09/2017 21:22
शनि	14/09/2017 05:45
बुध	15/09/2017 10:43

शुक्र - गुरु - राहु - शुक्र	
15/09/2017 10:43	
09/10/2017 19:07	
शुक्र	19/09/2017 12:07
सूर्य	20/09/2017 17:21
चंद्र	22/09/2017 18:03
मंगल	24/09/2017 04:08
राहु	27/09/2017 19:48
गुरु	01/10/2017 01:43
शनि	04/10/2017 22:15
बुध	08/10/2017 09:02
केतु	09/10/2017 19:07

शुक्र - गुरु - राहु - सूर्य	
09/10/2017 19:07	
17/10/2017 02:27	
सूर्य	10/10/2017 03:53
चंद्र	10/10/2017 18:30
मंगल	11/10/2017 04:44
राहु	12/10/2017 07:02
गुरु	13/10/2017 06:24
शनि	14/10/2017 10:10
बुध	15/10/2017 11:00
केतु	15/10/2017 21:13
शुक्र	17/10/2017 02:27

शुक्र - गुरु - राहु - चंद्र	
17/10/2017 02:27	
29/10/2017 06:39	
चंद्र	18/10/2017 02:48
मंगल	18/10/2017 19:50
राहु	20/10/2017 15:40
गुरु	22/10/2017 06:38
शनि	24/10/2017 04:54
बुध	25/10/2017 22:17
केतु	26/10/2017 15:20
शुक्र	28/10/2017 16:02
सूर्य	29/10/2017 06:39

शुक्र - गुरु - राहु - मंगल	
29/10/2017 06:39	
06/11/2017 19:11	
मंगल	29/10/2017 18:35
राहु	31/10/2017 01:15
गुरु	01/11/2017 04:32
शनि	02/11/2017 12:55
बुध	03/11/2017 17:53
केतु	04/11/2017 05:49
शुक्र	05/11/2017 15:55
सूर्य	06/11/2017 02:08
चंद्र	06/11/2017 19:11

शुक्र - शनि - शनि - शनि	
06/11/2017 19:11	
05/12/2017 19:05	
शनि	11/11/2017 09:22
बुध	15/11/2017 11:57
केतु	17/11/2017 04:33
शुक्र	22/11/2017 00:32
सूर्य	23/11/2017 11:20
चंद्र	25/11/2017 21:19
मंगल	27/11/2017 13:55
राहु	01/12/2017 22:18
गुरु	05/12/2017 19:05

शुक्र - शनि - शनि - बुध	
05/12/2017 19:05	
31/12/2017 17:44	
बुध	09/12/2017 11:18
केतु	10/12/2017 23:37
शुक्र	15/12/2017 07:24
सूर्य	16/12/2017 14:31
चंद्र	18/12/2017 18:25
मंगल	20/12/2017 06:44
राहु	24/12/2017 04:08
गुरु	27/12/2017 15:09
शनि	31/12/2017 17:44

शुक्र - शनि - शनि - केतु	
31/12/2017 17:44	
11/01/2018 10:07	
केतु	01/01/2018 08:42
शुक्र	03/01/2018 03:25
सूर्य	03/01/2018 16:15
चंद्र	04/01/2018 13:36
मंगल	05/01/2018 04:34
राहु	06/01/2018 19:01
गुरु	08/01/2018 05:12
शनि	09/01/2018 21:48
बुध	11/01/2018 10:07

शुक्र - शनि - शनि - शुक्र	
11/01/2018 10:07	
10/02/2018 22:39	
शुक्र	16/01/2018 12:13
सूर्य	18/01/2018 00:50
चंद्र	20/01/2018 13:53
मंगल	22/01/2018 08:37
राहु	26/01/2018 22:29
गुरु	31/01/2018 00:10
शनि	04/02/2018 20:09
बुध	09/02/2018 03:55
केतु	10/02/2018 22:39

शुक्र - शनि - शनि - सूर्य	
10/02/2018 22:39	
20/02/2018 02:25	
सूर्य	11/02/2018 09:38
चंद्र	12/02/2018 03:57
मंगल	12/02/2018 16:46
राहु	14/02/2018 01:44
गुरु	15/02/2018 07:02
शनि	16/02/2018 17:50
बुध	18/02/2018 00:58
केतु	18/02/2018 13:47
शुक्र	20/02/2018 02:25

शुक्र - शनि - शनि - चंद्र	
20/02/2018 02:25	
07/03/2018 08:40	
चंद्र	21/02/2018 08:56
मंगल	22/02/2018 06:18
राहु	24/02/2018 13:14
गुरु	26/02/2018 14:04
शनि	01/03/2018 00:04
बुध	03/03/2018 03:57
केतु	04/03/2018 01:19
शुक्र	06/03/2018 14:22
सूर्य	07/03/2018 08:40

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 13 वर्ष 7 मास 4 दिन

शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
28/12/1987		02/08/2001		03/08/2007		02/08/2022		02/08/2030	
02/08/2001		03/08/2007		02/08/2022		02/08/2030		03/08/2047	
	00/00/0000	सूर्य	02/12/2001	चंद्र	01/09/2009	मंगल	07/03/2023	बुध	06/04/2033
	28/12/1987	चंद्र	02/10/2002	मंगल	12/10/2010	बुध	09/06/2024	शनि	02/11/2034
चंद्र	02/10/1988	मंगल	14/03/2003	बुध	21/02/2013	शनि	06/03/2025	गुरु	29/10/2037
मंगल	23/04/1990	बुध	21/02/2004	शनि	13/07/2014	गुरु	02/08/2026	राहु	19/09/2039
बुध	12/08/1993	शनि	11/09/2004	गुरु	03/03/2017	राहु	23/06/2027	शुक्र	08/01/2043
शनि	23/07/1995	गुरु	02/10/2005	राहु	02/11/2018	शुक्र	11/01/2029	सूर्य	19/12/2043
गुरु	03/04/1999	राहु	02/06/2006	शुक्र	02/10/2021	सूर्य	22/06/2029	चंद्र	30/04/2046
राहु	02/08/2001	शुक्र	03/08/2007	सूर्य	02/08/2022	चंद्र	02/08/2030	मंगल	03/08/2047

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
03/08/2047		02/08/2057		02/08/2076		02/08/2088	
02/08/2057		02/08/2076		02/08/2088		00/00/0000	
शनि	06/07/2048	गुरु	05/12/2060	राहु	02/12/2077	शुक्र	01/09/2092
गुरु	09/04/2050	राहु	15/01/2063	शुक्र	02/04/2080	सूर्य	01/11/2093
राहु	20/05/2051	शुक्र	25/09/2066	सूर्य	02/12/2080	चंद्र	28/12/2095
शुक्र	29/04/2053	सूर्य	16/10/2067	चंद्र	02/08/2082		00/00/0000
सूर्य	18/11/2053	चंद्र	06/06/2070	मंगल	23/06/2083		00/00/0000
चंद्र	10/04/2055	मंगल	02/11/2071	बुध	13/05/2085		00/00/0000
मंगल	05/01/2056	बुध	29/10/2074	शनि	23/06/2086		00/00/0000
बुध	02/08/2057	शनि	02/08/2076	गुरु	02/08/2088		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : उल्का 3 वर्ष 6 मास 14 दिन

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
28/12/1987		12/07/1991		12/07/1998		12/07/2006		12/07/2007	
12/07/1991		12/07/1998		12/07/2006		12/07/2007		12/07/2009	
	00/00/0000	सिद्ध	21/11/1992	संक	22/04/2000	मंग	22/07/2006	पिंग	22/08/2007
	28/12/1987	संक	12/06/1994	मंग	12/07/2000	पिंग	12/08/2006	धांय	22/10/2007
संक	10/01/1989	मंग	22/08/1994	पिंग	21/12/2000	धांय	11/09/2006	भ्राम	11/01/2008
मंग	12/03/1989	पिंग	11/01/1995	धांय	22/08/2001	भ्राम	22/10/2006	भद्रि	22/04/2008
पिंग	12/07/1989	धांय	12/08/1995	भ्राम	12/07/2002	भद्रि	11/12/2006	उल्क	21/08/2008
धांय	11/01/1990	भ्राम	22/05/1996	भद्रि	22/08/2003	उल्क	10/02/2007	सिद्ध	10/01/2009
भ्राम	11/09/1990	भद्रि	12/05/1997	उल्क	21/12/2004	सिद्ध	22/04/2007	संक	22/06/2009
भद्रि	12/07/1991	उल्क	12/07/1998	सिद्ध	12/07/2006	संक	12/07/2007	मंग	12/07/2009

धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष	
12/07/2009		12/07/2012		12/07/2016		12/07/2021		12/07/2027	
12/07/2012		12/07/2016		12/07/2021		12/07/2027		12/07/2034	
धांय	11/10/2009	भ्राम	21/12/2012	भद्रि	22/03/2017	उल्क	12/07/2022	सिद्ध	21/11/2028
भ्राम	10/02/2010	भद्रि	12/07/2013	उल्क	21/01/2018	सिद्ध	11/09/2023	संक	12/06/2030
भद्रि	12/07/2010	उल्क	12/03/2014	सिद्ध	11/01/2019	संक	10/01/2025	मंग	22/08/2030
उल्क	11/01/2011	सिद्ध	22/12/2014	संक	21/02/2020	मंग	12/03/2025	पिंग	11/01/2031
सिद्ध	12/08/2011	संक	11/11/2015	मंग	11/04/2020	पिंग	12/07/2025	धांय	12/08/2031
संक	11/04/2012	मंग	22/12/2015	पिंग	22/07/2020	धांय	11/01/2026	भ्राम	22/05/2032
मंग	12/05/2012	पिंग	12/03/2016	धांय	21/12/2020	भ्राम	11/09/2026	भद्रि	12/05/2033
पिंग	12/07/2012	धांय	12/07/2016	भ्राम	12/07/2021	भद्रि	12/07/2027	उल्क	12/07/2034

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
12/07/2034		12/07/2042		12/07/2043		12/07/2045		12/07/2048	
12/07/2042		12/07/2043		12/07/2045		12/07/2048		12/07/2052	
संक	22/04/2036	मंग	22/07/2042	पिंग	22/08/2043	धांय	11/10/2045	भ्राम	21/12/2048
मंग	12/07/2036	पिंग	12/08/2042	धांय	22/10/2043	भ्राम	10/02/2046	भद्रि	12/07/2049
पिंग	21/12/2036	धांय	11/09/2042	भ्राम	11/01/2044	भद्रि	12/07/2046	उल्क	12/03/2050
धांय	22/08/2037	भ्राम	22/10/2042	भद्रि	22/04/2044	उल्क	11/01/2047	सिद्ध	22/12/2050
भ्राम	12/07/2038	भद्रि	11/12/2042	उल्क	21/08/2044	सिद्ध	12/08/2047	संक	11/11/2051
भद्रि	22/08/2039	उल्क	10/02/2043	सिद्ध	10/01/2045	संक	11/04/2048	मंग	22/12/2051
उल्क	21/12/2040	सिद्ध	22/04/2043	संक	22/06/2045	मंग	12/05/2048	पिंग	12/03/2052
सिद्ध	12/07/2042	संक	12/07/2043	मंग	12/07/2045	पिंग	12/07/2048	धांय	12/07/2052

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
12/07/2052		12/07/2057		12/07/2063		12/07/2070		12/07/2078	
12/07/2057		12/07/2063		12/07/2070		12/07/2078		12/07/2079	
भद्रि	22/03/2053	उल्क	12/07/2058	सिद्ध	21/11/2064	संक	22/04/2072	मंग	22/07/2078
उल्क	21/01/2054	सिद्ध	11/09/2059	संक	12/06/2066	मंग	12/07/2072	पिंग	12/08/2078
सिद्ध	11/01/2055	संक	10/01/2061	मंग	22/08/2066	पिंग	21/12/2072	धांय	11/09/2078
संक	21/02/2056	मंग	12/03/2061	पिंग	11/01/2067	धांय	22/08/2073	भ्राम	22/10/2078
मंग	11/04/2056	पिंग	12/07/2061	धांय	12/08/2067	भ्राम	12/07/2074	भद्रि	11/12/2078
पिंग	22/07/2056	धांय	11/01/2062	भ्राम	22/05/2068	भद्रि	22/08/2075	उल्क	10/02/2079
धांय	21/12/2056	भ्राम	11/09/2062	भद्रि	12/05/2069	उल्क	21/12/2076	सिद्ध	22/04/2079
भ्राम	12/07/2057	भद्रि	12/07/2063	उल्क	12/07/2070	सिद्ध	12/07/2078	संक	12/07/2079

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
12/07/2079		12/07/2081		12/07/2084		12/07/2088		12/07/2093	
12/07/2081		12/07/2084		12/07/2088		12/07/2093		00/00/0000	
पिंग	22/08/2079	धांय	11/10/2081	भ्राम	21/12/2084	भद्रि	22/03/2089	उल्क	12/07/2094
धांय	22/10/2079	भ्राम	10/02/2082	भद्रि	12/07/2085	उल्क	21/01/2090	सिद्ध	11/09/2095
भ्राम	11/01/2080	भद्रि	12/07/2082	उल्क	12/03/2086	सिद्ध	11/01/2091	संक	28/12/2095
भद्रि	22/04/2080	उल्क	11/01/2083	सिद्ध	22/12/2086	संक	21/02/2092		00/00/0000
उल्क	21/08/2080	सिद्ध	12/08/2083	संक	11/11/2087	मंग	11/04/2092		00/00/0000
सिद्ध	10/01/2081	संक	11/04/2084	मंग	22/12/2087	पिंग	22/07/2092		00/00/0000
संक	22/06/2081	मंग	12/05/2084	पिंग	12/03/2088	धांय	21/12/2092		00/00/0000
मंग	12/07/2081	पिंग	12/07/2084	धांय	12/07/2088	भ्राम	12/07/2093		00/00/0000

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कर्क 16 वर्ष 6 मास 12 दिन
कुल दशाकाल : 85 वर्ष
तिथि : रेवती - 2 सव्य
देह : मकर जीव : मिथुन

कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		मकर 4 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष	
28/12/1987		10/07/2004		10/07/2009		10/07/2018		10/07/2022	
10/07/2004		10/07/2009		10/07/2018		10/07/2022		10/07/2026	
कर्क	16/09/1988	सिंह	25/10/2004	मिथु	23/06/2010	मक	17/09/2018	कुंभ	17/09/2022
सिंह	12/12/1989	मिथु	06/05/2005	मक	25/11/2010	कुंभ	25/11/2018	मीन	08/03/2023
मिथु	03/03/1992	मक	31/07/2005	कुंभ	28/04/2011	मीन	16/05/2019	वृश्चि	06/07/2023
मक	27/02/1993	कुंभ	25/10/2005	मीन	19/05/2012	वृश्चि	13/09/2019	तुला	06/04/2024
कुंभ	23/02/1994	मीन	28/05/2006	वृश्चि	14/02/2013	तुला	14/06/2020	कन्या	08/09/2024
मीन	13/08/1996	वृश्चि	26/10/2006	तुला	26/10/2014	कन्या	16/11/2020	कर्क	04/09/2025
वृश्चि	07/05/1998	तुला	04/10/2007	कन्या	09/10/2015	कर्क	12/11/2021	सिंह	29/11/2025
तुला	20/04/2002	कन्या	15/04/2008	कर्क	29/12/2017	सिंह	05/02/2022	मिथु	02/05/2026
कन्या	10/07/2004	कर्क	10/07/2009	सिंह	10/07/2018	मिथु	10/07/2022	मक	10/07/2026

मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष	
10/07/2026		10/07/2036		10/07/2043		10/07/2059		10/07/2068	
10/07/2036		10/07/2043		10/07/2059		10/07/2068		00/00/0000	
मीन	13/09/2027	वृश्चि	05/02/2037	तुला	14/07/2046	कन्या	22/06/2060	कर्क	27/12/2072
वृश्चि	10/07/2028	तुला	02/06/2038	कन्या	24/03/2048	कर्क	13/09/2062		00/00/0000
तुला	28/05/2030	कन्या	27/02/2039	कर्क	07/03/2052	सिंह	25/03/2063		00/00/0000
कन्या	19/06/2031	कर्क	20/11/2040	सिंह	14/02/2053	मिथु	07/03/2064		00/00/0000
कर्क	07/12/2033	सिंह	19/04/2041	मिथु	26/10/2054	मक	09/08/2064		00/00/0000
सिंह	10/07/2034	मिथु	15/01/2042	मक	28/07/2055	कुंभ	10/01/2065		00/00/0000
मिथु	01/08/2035	मक	15/05/2042	कुंभ	28/04/2056	मीन	01/02/2066		00/00/0000
मक	20/01/2036	कुंभ	13/09/2042	मीन	16/03/2058	वृश्चि	30/10/2066		00/00/0000
कुंभ	10/07/2036	मीन	10/07/2043	वृश्चि	10/07/2059	तुला	10/07/2068		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा

भोग्य दशा काल : कुम्भ 11 वर्ष 0 मास 0 दिन

कुम्भ 11 वर्ष	
28/12/1987	
28/12/1998	
मीन	27/11/1988
मेष	28/10/1989
वृष	27/09/1990
मिथु	28/08/1991
कर्क	28/07/1992
सिंह	28/06/1993
कन्या	29/05/1994
तुला	28/04/1995
वृश्चि	28/03/1996
धनु	26/02/1997
मक	27/01/1998
कुंभ	28/12/1998

मीन 12 वर्ष	
28/12/1998	
28/12/2010	
मेष	28/12/1999
वृष	27/12/2000
मिथु	27/12/2001
कर्क	28/12/2002
सिंह	28/12/2003
कन्या	27/12/2004
तुला	27/12/2005
वृश्चि	28/12/2006
धनु	28/12/2007
मक	27/12/2008
कुंभ	27/12/2009
मीन	28/12/2010

मेष 6 वर्ष	
28/12/2010	
27/12/2016	
वृष	28/06/2011
मिथु	28/12/2011
कर्क	28/06/2012
सिंह	27/12/2012
कन्या	28/06/2013
तुला	27/12/2013
वृश्चि	28/06/2014
धनु	28/12/2014
मक	28/06/2015
कुंभ	28/12/2015
मीन	28/06/2016
मेष	27/12/2016

वृष 8 वर्ष	
27/12/2016	
27/12/2024	
मेष	28/08/2017
मीन	28/04/2018
कुंभ	28/12/2018
मक	28/08/2019
धनु	28/04/2020
वृश्चि	27/12/2020
तुला	28/08/2021
कन्या	28/04/2022
सिंह	28/12/2022
कर्क	28/08/2023
मिथु	28/04/2024
वृष	27/12/2024

मिथुन 6 वर्ष	
27/12/2024	
28/12/2030	
वृष	28/06/2025
मेष	27/12/2025
मीन	28/06/2026
कुंभ	28/12/2026
मक	28/06/2027
धनु	28/12/2027
वृश्चि	28/06/2028
तुला	27/12/2028
कन्या	28/06/2029
सिंह	27/12/2029
कर्क	28/06/2030
मिथु	28/12/2030

कर्क 4 वर्ष	
28/12/2030	
28/12/2034	
मिथु	28/04/2031
वृष	28/08/2031
मेष	28/12/2031
मीन	28/04/2032
कुंभ	27/08/2032
मक	27/12/2032
धनु	28/04/2033
वृश्चि	28/08/2033
तुला	27/12/2033
कन्या	28/04/2034
सिंह	28/08/2034
कर्क	28/12/2034

सिंह 8 वर्ष	
28/12/2034	
28/12/2042	
कन्या	28/08/2035
तुला	28/04/2036
वृश्चि	27/12/2036
धनु	28/08/2037
मक	28/04/2038
कुंभ	28/12/2038
मीन	28/08/2039
मेष	28/04/2040
वृष	27/12/2040
मिथु	28/08/2041
कर्क	28/04/2042
सिंह	28/12/2042

कन्या 9 वर्ष	
28/12/2042	
28/12/2051	
तुला	28/09/2043
वृश्चि	28/06/2044
धनु	29/03/2045
मक	27/12/2045
कुंभ	27/09/2046
मीन	28/06/2047
मेष	28/03/2048
वृष	27/12/2048
मिथु	27/09/2049
कर्क	28/06/2050
सिंह	29/03/2051
कन्या	28/12/2051

तुला 3 वर्ष	
28/12/2051	
28/12/2054	
वृश्चि	28/03/2052
धनु	28/06/2052
मक	27/09/2052
कुंभ	27/12/2052
मीन	29/03/2053
मेष	28/06/2053
वृष	27/09/2053
मिथु	27/12/2053
कर्क	29/03/2054
सिंह	28/06/2054
कन्या	27/09/2054
तुला	28/12/2054

वृश्चिक 11 वर्ष	
28/12/2054	
27/12/2065	
तुला	28/11/2055
कन्या	27/10/2056
सिंह	27/09/2057
कर्क	28/08/2058
मिथु	29/07/2059
वृष	28/06/2060
मेष	28/05/2061
मीन	28/04/2062
कुंभ	29/03/2063
मक	27/02/2064
धनु	27/01/2065
वृश्चि	27/12/2065

धनु 3 वर्ष	
27/12/2065	
27/12/2068	
वृश्चि	29/03/2066
तुला	28/06/2066
कन्या	27/09/2066
सिंह	28/12/2066
कर्क	29/03/2067
मिथु	28/06/2067
वृष	28/09/2067
मेष	28/12/2067
मीन	28/03/2068
कुंभ	28/06/2068
मक	27/09/2068
धनु	27/12/2068

मकर 1 वर्ष	
27/12/2068	
27/12/2069	
धनु	27/01/2069
वृश्चि	26/02/2069
तुला	29/03/2069
कन्या	28/04/2069
सिंह	28/05/2069
कर्क	28/06/2069
मिथु	28/07/2069
वृष	28/08/2069
मेष	27/09/2069
मीन	28/10/2069
कुंभ	27/11/2069
मक	27/12/2069

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

उपाय

जिस प्रकार से बीमारी के अनुरूप दवाई की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति को उसकी जन्मकुण्डली के अनुरूप उपाय करने से ही कष्टों का निवारण होता है। सटीक उपाय कष्ट निवारण शीघ्र करते हैं।

इस खण्ड में समस्याओं से निजात पाने हेतु अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं जिसमें अंकशास्त्र एवं ज्योतिष के सिद्धांतों के अनुरूप भाग्यशाली अंक, भाग्यशाली रंग, भाग्यशाली रत्न, भाग्यशाली दिवस, ग्रहों के शांति हेतु मंत्र, साढ़े साती के उपाय, मांगलिक विचार, कालसर्प दोष आदि के उपायों की सरल एवं विशद व्याख्या की गई है।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 2
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	81%	धन, धनार्जन
मूंगा	मंगल	78%	भाग्योदय, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	75%	धनार्जन, कम खर्च, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	67%	कम खर्च, सुख, भाग्योदय
पन्ना	बुध	64%	धनार्जन, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव
गोमेद	राहु	62%	धन
माणिक्य	सूर्य	53%	धनार्जन, दम्पति
लहसुनिया	केतु	25%	दुर्घटना, हानि
मोती	चंद्र	12%	धन हानि, शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

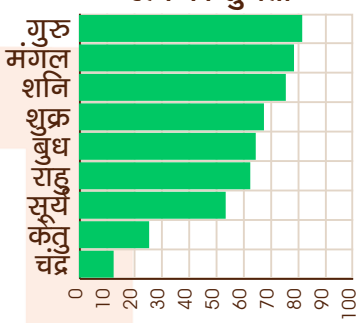

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	06/01/1998	59%	0%	78%	77%	81%	73%	75%	62%	25%
केतु	06/01/2005	31%	0%	84%	64%	81%	73%	62%	50%	50%
शुक्र	06/01/2025	31%	0%	78%	70%	81%	80%	81%	69%	38%
सूर्य	06/01/2031	66%	25%	84%	64%	87%	55%	62%	50%	0%
चंद्र	06/01/2041	59%	38%	78%	70%	81%	67%	75%	50%	0%
मंगल	07/01/2048	59%	25%	91%	52%	87%	67%	75%	50%	38%
राहु	06/01/2066	31%	0%	66%	64%	81%	73%	81%	75%	0%
गुरु	06/01/2082	59%	25%	84%	52%	93%	55%	75%	62%	25%
शनि	07/01/2101	31%	0%	66%	70%	81%	73%	88%	69%	0%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति

तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पुखराज, मूंगा व नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पुखराज व मूंगा रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए हीरा, पन्ना, गोमेद एवं माणिक्य रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

मोती पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण कर आपकी बुद्धिमत्ता का विकास होता है। यह रत्न वाणी में शुभता, विनम्र वाणी, संचित धन एवं आत्मशक्ति बनाये रखने में सहयोग करेगा। पुखराज की शुभता से आपमें दार्शनिक प्रवृति का भाव जाग्रत होगा। धन-धान्य, यश और सम्मान की प्राप्ति होगी। पुखराज से

शैक्षिक क्षेत्र में शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। ग्रुरु ग्रह की शुभता को बढ़ाने और अशुभता में कमी करने के लिए आप यह रत्न धारण करें।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में गुरु दवितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। आप गुरु रत्न पुखराज धारण कर सकते है। पुखराज रत्न की शुभता से आपके धन, लाभ व उन्नति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपके बडी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी एवं शुभ चिन्तक भी प्राप्त हो सकते हैं। रत्न प्रभाव आपको उत्तम आय वाला, शूर, निरोगी, स्वस्थ, धनी, दीर्घायु, स्थिर संपत्ति वाला तथा अनेक आयामों से सौभाग्यशाली कर सकता हैं।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं दशमेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर सकते है। यह मूंगा सेवकों एवं सहोदरों से आपके संबंध मजबूत कर सकता है। रत्न शुभता से आपको कंप्यूटर तकनीक एवं इंजीनियरिंग क्षेत्र में शुभ फल प्रदान कर सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए आजीविका क्षेत्र का रत्न है। अतः इस रत्न को धारण कर आप अपने पुरुषार्थ से कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते है. आप यह रत्न धारण कर अपनी नेतृत्व योग्यता, प्रभुता, व्यापार, अधिकार, राज्य एवं साहस भाव में वृद्धि कर शुभ फल प्राप्त कर सकते है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं

अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण कर आप निर्लोभी और सुखी व्यक्ति बनेंगे। आपको दीर्घकाल के लिए रोग अपने प्रभाव में नहीं पायेंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपति होगी। सरकार की कृपा से भी धन, मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको वाहनों का सुख देगा। धन संचय में सहयोग करेगा। नौकर चाकरों का सुख देगा। तथा नीलम रत्न प्रभाव से संतान प्राप्ति का विलम्ब दूर होगा। अनेक प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगे।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वादशेश है। शनि की शुभता में वृद्धि करने के लिए आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। नीलम रत्न शनि का रत्न होने के कारण आपको निरोगी, स्वस्थ और शारीरिक कुशलता दे सकता है। इस रत्न को आप अपने जीवन रत्न के रूप में भी धारण कर सकते है। नीलम रत्न की शुभता से आपके व्यर्थ व्यय नियंत्रित रहेंगे। अस्पताल व जेल इत्यादि क्षेत्रों से आपको परेशानी अधिक नहीं होगी। शनि रत्न नीलम का प्रभाव आपकी निद्रा सुख को भी बढ़ाएगा। समुद्रिक यात्रा, विदेश यात्रा का सुख भी यह रत्न आपको दे सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र बारहवें भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह का हीरा रत्न धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। हीरा रत्न धारण करने से विदेश स्थानों की आय से आपके वैभव

और आय में बढ़ोतरी होगी। यह रत्न आपको श्रेष्ठकर्मों से जोड़ेगा। आपको अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त होगा। शुक्र रत्न हीरा आपको विरोधियों से आत्मीयता दे सकता है। हीरा रत्न शुभता से आप वैभव, सुख सामग्री और भौतिक सुविधाओं पर अत्यधिक व्यय कर सकते है। इस रत्न को धारण कर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाए रख सकते है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं नवमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। शुक्र रत्न आपको सुख-सुविधा युक्त वाहन, साज सज्जा युक्त घर एवं भूमि-भवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। इसकी शुभता से आप संचित धन एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्ति में अनुकूल फल दिला सकता है। हीरा रत्न शुक्र का रत्न होने के कारण आपको आकर्षक बना सकता है। शुक्र रत्न हीरा आपको धर्म मार्ग से जोड़ेगा, पुण्य, भाग्यवर्धक, गुरु, तीर्थ यात्रा, पिता का सुख एवं दूर स्थानों की यात्राएं करा सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

पन्ना

आपकी कुंड्ली में बुध एकादश भाव में स्थित है। बुध रत्न पन्ना धारण करना आपके लिए शुभफलदायक रहेगा। पन्ना रत्न प्रभाव से आप ईमानदार और विनम्र स्वभाव के स्वामी बनेंगे। रत्न शुभता से आप अपनी बातों को निभाने का पूरा प्रयास करेंगे। पन्ना रत्न को धारण करने से आप अपने गुणों के कारण लोकप्रिय होंगे। आप कुछ न कुछ नया जानने का प्रयास करेंगे। पन्ना रत्न आपको भाग्यशाली और सुखी बनाएगा। रत्न शुभता आपको सेवकों का सुख और उत्तम वाहनों का सुख देगा। यह रत्न आपको शिल्पकला, लेखन या व्यापार के माध्यम से भी धन देगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। आप बुध रत्न पन्ना धारण कर सकते है। बुध रत्न पन्ना धारण कर आप शिक्षा क्षेत्र में योग्यता से अधिक सफलता प्राप्त कर सकते है। रत्न शुभता से आपके बुद्धिबल का विकास हो सकता है। आप की स्मरण शक्ति प्रबल हो सकती है। यह रत्न आपकी विद्या ग्रहण शक्ति का विकास कर सकता है। बुध रत्न आपके लिए शुभ रत्न है तथा इसकी शुभता से आपके संतान सुख में भी वृद्धि होगी। पन्ना रत्न आपके आत्मविश्वास को प्रबल, प्रबंध क्षमता उत्तम, गणितीय योग्यता उत्तम, नियोजन कुशलता श्रेष्ठ रख सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंड़ली में राहु दूसरे भाव में स्थित है। राहु रत्न गोमेद धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। यह रत्न धारण कर आप धन संचय के प्रति सचेत रहेंगे। धन के प्रति आपका मोह बढ़ेगा। सत्य बोलने की ओर आप अग्रसर होंगे। गोमेद रत्न की शुभता चातुर्य एवं नीति निर्माण से धन संचय करने में आपको सफलता देगी। गोमेद आपके स्वभाव को सौम्य बनाए रखेगा। गोमेद रत्न धारण कर आप पारिवारिक संस्कारों का नियम से पालन करेंगे। यह रत्न आपको विचार अभिव्यक्ति का कौशल देगा।

राहु मीन राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी गुरु दूसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य एकादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आप धनवान, बलवान और सुखी बनेंगे। यह रत्न धारण कर आप स्वाभिमानी बनेंगे। रत्न धारण से आप तपस्वी और योगी समान बनेंगे। आपका जीवन सदाचार युक्त होगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। माणिक्य रत्न आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। उच्च अधिकारियों से आपके संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आपको महत्त्वाकांक्षी बनाएगा।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में सूर्य सप्तम भाव के स्वामी है। आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते है। माणिक्य रत्न की शुभता से आपको स्वास्थ्य अनुकूलता प्राप्त हो सकती है। आप तेजस्वी बन सकते है। यह रत्न आपको शक्तिशाली बना सकता है। दांपत्य जीवन को आनन्दमय बनाए रखने के लिए भी आप माणिक्य रत्न धारण कर सकते है। सप्तम भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण सूर्य आपको स्वतंत्र व्यापार करने का गुण दे सकता है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न होने के कारण आपको सरकारी क्षेत्रों में अनुकूलता देगा।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने आप कुछ विषयों में आप लोभी और चालाक हो सकते है। आपके द्वारा दूसरों को शारीरिक और मानसिक कष्ट हो सकते है। अनजाने में आपसे पाप हो सकते है। आपके द्वारा किये गये कार्यो से विवेकहीनता परिलक्षित हो सकती है। रत्न प्रतिकूलता से आपको मुखरोग या दंत रोग हो सकता है। केतु रत्न आपको अकस्मात हानि करा सकता है। यह रत्न आपका ऑपरेशन करा सकता है। आपको विरासत मिलने में तकलीफ हो सकती है। सरकार के द्वारा आपकी धन हानि हो सकती है।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध एकादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से विदेशी स्रोतों से प्राप्त होने वाली आय बाधित होगी। आपको भाग्योदय के लिए अपने जन्म स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी दयालुता भाव में

भी कमी करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आपके बड़े भाई बहनों की संख्या में कमी हो सकती है। इस कारण आप अपने भाई बहनों में सबसे बड़े हो सकते हैं। रत्न प्रतिकूलता आपके धन में कमी का कारण बन सकती है। चिकित्सा जगत, औजारों, यंत्रों व हथियारों के निर्माण क्षेत्रों में आपकी विशेषज्ञता प्राप्ति बाधित हो सकती है। यह रत्न आपमें यांत्रिकी सम्बंधित ज्ञान की कमी कर रहा है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र का मोती रत्न आपको नवीन काम धंधों में प्रतिकूल फल दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है। अपनी पसंद के अनुरूप स्वादिष्ट भोजन का अनुभव आपको करना पड़ सकता है। धन बचाना आपके लिए सरल नहीं हो पाएगा। रोजगार प्राप्ति और प्रारम्भिक शिक्षा में व्यवधान आ सकते है। रत्न की अनुकूलता प्राप्त न होने के कारण आपका आर्थिक पक्ष प्रभावित हो सकता है। पारिवारिक कुटुंब के संबंधों में उत्तार-चड़ाव की स्थिति बन सकती है। वाणी दोष की स्थिति भी बन सकती है। वाणी में मधुरता की कमी भी आपको हो सकती है।

आपकी कुंभ लग्न की कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती आपको शारीरिक रूप से कमजोर कर सकता है। इस रत्न प्रभाव से आपका रुग्ण शरीर व शीत विकारयुक्त हो सकता है। मोती रत्न आपको भय व चिंताग्रस्त कर सकता है। छठे भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण मोती आपको शत्रुओं पर संघर्ष के बाद विजय देगा। कभी कभी आप अपने शत्रुओं को कमजोर समझकर पूर्ण शक्ति से विरोध नहीं करते है। रत्न धारण से आपको ननिहाल पक्ष से हानि की स्थिति बन सकती है। साथ ही यह रत्न आपको जीवन साथी से वैचारिक मतभेद दे सकता है। चंद्र रत्न मोती पहनने पर आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(06/01/2005 - 06/01/2025)

शुक्र की दशा में आपका पुखराज, नीलम, हीरा व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(06/01/2025 - 06/01/2031)

सूर्य की दशा में आपका पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पन्ना, नीलम, हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(06/01/2031 - 06/01/2041)

चन्द्र की दशा में आपका पुखराज, मूंगा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, हीरा, माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(06/01/2041 - 07/01/2048)

मंगल की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, माणिक्य, पन्ना व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(07/01/2048 - 06/01/2066)

राहु की दशा में आपका पुखराज, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, मूंगा व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(06/01/2066 - 06/01/2082)

गुरु की दशा में आपका पुखराज, मूंगा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, माणिक्य, हीरा व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(06/01/2082 - 07/01/2101)

शनि की दशा में आपका नीलम व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, पन्ना, गोमेद व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती व लहसुनिया रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - ऐमेथिस्ट

आपका जन्म कुंभ राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि इसको न्याय के साथसजा देने का अधिकार प्राप्त है तथा न्यायप्रिय ग्रह माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कुंभ राशि के लग्न वाले जातकों को कुंभ राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये एमेथिस्ट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे तो शनि को सेवक का पद प्राप्त है तथा एकाग्रचित व साधना का प्रतिनिधि ग्रह है इससे जातक को अच्छी नौकरी की प्राप्ति, लाभ व विद्यार्थियों को एकाग्रता प्रदान करता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सेवकों का सहयोग तथा सुख प्राप्त होता है। शनि ग्रह राजसेवक का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों के दर्द व लाइलाज रोगों से परेशानी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा आत्मिक बल की प्राप्ति होती है जिससे आध्यात्मिक गुण, योग साधना में अपनी सफलता प्राप्त करते हैं।

ऐमेथिस्ट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है । ऐमेथिस्ट रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त काल से एक घंटे के अंदर अंगूठी को धारण कर लेना चाहिए। ऐमेथिस्ट को यदि रविवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

ऐमेथिस्ट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले या नीले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, बुध के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सवा मीटर काले कपड़े का दान करें तो ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के

पश्चात मंत्र पाठ करें और सेवकों या अधीनस्थ कर्मचारियों व जमादार को यथोचित समय-समय पर वस्त्र या पैसे आदि का दान करें तो यह ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव महाराज की उपासना करें तथा शनिदेवजी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

कुंभ लग्न वाले जातक यदि ऐमेथिस्ट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता हैं। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की गहराई मे जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता हैं। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते है, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता हैं। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता हैं। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता हैं।

अष्टम भाव में केतु अशुभ फलदायक होते है। आपको अपनी बुद्धि को गलत कार्यो में लगाने से बचना चाहिए। आपका उद्यम बाधित हो सकता है। साथ ही यह योग आपको परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं देता। जीवन साथी से शत्रुता भाव उत्पन्न हो सकता है। स्वजनों से संबंधों को मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते है।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते है, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखे। जीवन साथी की भावनाओँ को आहात करने से बचे। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रूचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 6, 7, 9 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	धन
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगे। पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकती हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो

सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र

पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। परन्तु यह केवल आंशिक रूप में ही विद्यमान है। परिणामस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर आर्थिक स्थिति नाजुक रहती है जिस कारण थोड़ा बहुत कष्ट जातक को सहन करना पड़ता है और अपयश का भय बना रहता है।

इस योग के कारण जातक का विद्याध्ययन सामान्य रहता है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवारिक सदस्यों से समय-समय पर थोड़ा बहुत मनमुटाव हो जाता है। मित्रगण समय पर धोखा एवं कष्ट पहुँचाते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से संघर्ष नहीं करना पड़ता है। सन्तान सुख में किंचित बाधा आती है। पुत्र आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होता है। वह थोड़ा बहुत क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का होता है तथा मनमानी करता रहता है, जिससे जातक प्रभावित हो जाता है। सामाजिक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा में आंशिक नुकसान होता है और जातक भूत प्रेतों से कभी कभी परेशान हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को कभी-कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है जिससे स्वास्थ्य असामान्य हो जाता है और मानसिक रूप से चिन्तित होना पड़ता है। जातक अपनी वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है और वह समय आने पर कष्ट को भोगता है। जातक परोपकार की भावना से ओतप्रोत रहता है, परन्तु लोग इसका नाजायज फायदा उठाते हैं, जिससे इन्हें थोड़ा बहुत क्षति ही मिलती है। जीवन यापन मध्यम रहता है और जातक पराक्रमहीन हो जाता है। सुखभोग का आंशिक अभाव रहता है। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी जातक व्यापार में मनोभिलषित (इच्छित) सफलता प्राप्त करता है और जातक के जीवन में मान-सम्मान भी मिलता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह

केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।

8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।
11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक शास्त्र

अपने मूलांक और भाग्यांक ज्ञात कर अंकों की रहस्यमय शक्ति एवं तरंगों का अनुभव अपने जीवन में करें।

अंकशास्त्र आपके वर्तमान एवं भविष्य को आपके जन्मांक एवं नाम में मौजूद अक्षरों की सहायता से बताने एवं सजाने-संवारने की कला है। प्रत्येक अक्षर का एक अंकिक मान निर्धारित है जो खास खगोलीय स्पन्दन से संबद्ध है। आपके जन्मांक में मौजूद अंक एवं नाम के अक्षरों में निहित अंकों के मान अंतसंबंधित होते हैं। इन अंकों से आपके चरित्र, जीवन के उद्देश्य, प्रेरक तत्वों एवं योग्यता का पता चलता है। इससे आपको मुहूर्त, साझेदारी, प्रेम, विवाह, स्वास्थ्य, व्यवसाय, शुभ रंग, शुभ वाहन नंबर आदि का आपके अपने अंकों के अनुकूल निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 28 है। दो एवं आठ के योग से एक आपका मूलांक होता है। मूलांक एक का स्वामी सूर्य ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा आठ का शनि है। इन तीनों ही ग्रहों का संयुक्त प्रभाव आपके जीवन में आयेगा।

मूलांक एक का स्वामी सूर्य जीवनदाता है एवं ब्रह्माण्ड में स्थिर ग्रह है। अन्य सभी ग्रह तो सूर्य के चक्कर लगाते हैं। अतः सूर्य ग्रह के प्रभाववश आप एक स्थिर प्रकृति के महत्वाकांक्षी, उदीयमान, प्रतिभाशाली व्यक्ति के रूप में पहचाने जायेंगे। आप स्वतंत्र विचार धारा के धनी होंगे। पराधीन कार्य करने में असुविधा महसूस होगी। आप प्रत्येक कार्य को स्वतंत्रता पूर्वक निष्पक्ष संपादन करने के हिमायती रहेंगे। इससे आपको प्रतिद्वन्दियों के विरोध का सामना करना पड़ेगा। आप स्थायी एवं दीर्घ कालीन संबंध बनाने पर विश्वास करेंगे। आपकी कोशिश हमेशा यही रहेगी कि जब भी आप किसी के साथ मित्रता, व्यापारिक, सामाजिक, राजनैतिक अथवा प्रेम, रोमांस, इत्यादि के जो भी संबंध बनाऐं उनमें स्थायित्व रहे।

सूर्य जिस तरह प्रकाशित ग्रह है। उसी भाँति आप भी अपने जीवन में सदा प्रकाशित रहना पसन्द करेंगे। समाज वर्ग विशेष में मुखिया की भूमिका आप बखूबी निभाने की क्षमता रखेंगे। अपनी मेहनत के बल पर आप सभा-सोसायटी, संगठनों इत्यादि में प्रमुख पद को प्राप्त करेंगे।

अंक दो के स्वामी चन्द्र के कारण आपमें कल्पनाशीलता अच्छी रहेगी। आप जो भी सृजन करेंगे उसमें मौलिकता रहेगी। अंक आठ का स्वामी शनि ग्रह के प्रभाव से कभी-कभी आपके अन्दर नैराश्य भाव जाग्रत होगा। आलस्य में वृद्धि होगी और बनते हुये कार्यों में रुकावटें आयेंगी।

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किश्म की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगे। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

आपका मूलांक 1 है तथा भाग्यांक 2 है। मूलांक 1 का स्वामी सूर्य है तथा भाग्यांक 2 का स्वामी चंद्र है। मूलांक स्वामी सूर्य का भाग्यांक स्वामी चंद्र से सम संबंध हैं। भाग्यांक स्वामी चंद्र के प्रभाव से आपका भाग्यचक्र घटता-बढ़ता रहेगा। अपने जीवन में आपको विभिन्न परिवर्तन देखने

को मिलेंगे। कभी आप भाग्य की ऊंचाइयों को प्राप्त करेंगे, तो कभी अवनति भी देखनी होगी । चंद्र प्रभाव से कल्पना शक्ति आप में अच्छी होगी और जो भी कार्य करेंगे सोच-विचार कर करेंगे। मूलांक एवं भाग्यांक आपस में सम होने से सूर्य एवं चंद्र के पूर्ण गुण-अवगुण आपके अंदर रहेंगे। आप एक उदीयमान सितारे की तरह अपने जीवन में चमकेंगे। सूर्य की उदीयमान किरणों की तरह आपका जीवन प्रकाशित होगा एवं भाग्य का सितारा चमकेगा, लेकिन चंद्र प्रभाव से कभी-कभी आप अमावस्या जैसे अंधकारमय दिन देखेंगे। आपकी सामाजिक स्थिति उच्च कोटि की रहेगी तथा समाज में आप अपनी मेहनत से मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी गिनती सफल व्यक्ति के रूप में होगी।

मूलांक 1 तथा भाग्यांक 2 के प्रभाव से आपका भाग्योदय 20 वें वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा। 28 एवं 29 वर्ष पर उन्नति मिलेगी एवं 37 से 38 वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय का लाभ प्राप्त होगा।

आपके मूलांक 1 की मित्रता 4 एवं 8 से है तथा भाग्यांक 2 की मित्रता 7 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 1, 2, 4, 7, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरुप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन्, या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

आपके लिए जनवरी, फरवरी, अप्रैल, जुलाई, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 2, 4, 7, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

ग्रह फल

ग्रह फल स्पष्ट रूप से आपकी कुंडली में प्रत्येक ग्रह की भूमिका को निर्दिष्ट करता है।

इस खंड में प्रत्येक ग्रह के विभिन्न भावों/राशियों में स्थिति के अनुसार फल दिए गए हैं। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि आपकी कुंडली में किस ग्रह का भावानुसार/राश्यानुसार क्या फल होंगे। जब आप हर ग्रह की भूमिका के बारे में जान जाएंगे तो आपको उनके वास्तविक बात को भी अंदाजा हो जाएगा। इसके अलावा आप अपने कमजोर बिंदुओं को भी जानने में सक्षम हो पाएंगे। यह सूचना आपको भविष्य की योजना बनाने में मदद करेगी तथा आप यह निर्धारित कर पाएंगे कि किस दिशा में आपका भविष्य उज्जवल है।

लग्न फल

आपके जन्मकालिक ज्योतिषीय स्वरूप से यह स्पष्ट हो रहा है कि आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में कुंभ लग्न में हुआ था। जन्म लग्नोदय काल मेदिनीय क्षितिज पर वृश्चिक राशि का नवमांश एवं कुंभ राशि द्रेष्काण भी उदित हुआ था। यह ज्योतिषीय विंदु आपके जीवन में मिश्रित फल का निरूपण कर रहा हैं।

आप दार्शनिक प्रवृत्ति के प्राणी हैं। आपके मस्तिष्क में धन प्राप्ति के कारणों को विचारणीय लक्ष्य नहीं समझते। परंतु कुंभ राशीय स्थिति के अनुरूप आप निश्चित रूप से समृद्धिवान बनेंगे। तथापि वृश्चिक राशीय विसंगति आपको कुछ भी प्रभावित नहीं कर सकेगा तथा निश्चित रूप से आप आर्थिक रूप से समृद्ध हो जाएंगे। परंतु आप कतिपय रोगादि से प्रभावित हो सकते हैं।

अतएव सर्वप्रथम आपको एकाग्रचित होकर अपने स्वास्थ्य के प्रति अत्यंत सावधानी पूर्वक ध्यान रखना चाहिए। आप विषाणुयुक्त छुआ-छूत अथवा सामान्य रोगजनित वस्तुओं के कुप्रभाव से अधोगति को प्राप्त हो जाएंगे।

आपके समक्ष आरोग्य प्राप्ति की समस्या उत्पन्न हो जाएगी क्योंकि स्वास्थ्य लाभ में बहुत समय लग जाएगा। इसलिए आप रोगादि के प्रति अपनी उपेक्षणीय आदतों का परित्याग कर दे तथा नियमपूर्वक रोगादि के प्रति सुरक्षात्मक कदम उठाएं।

यह आपके लिए आवश्यक नहीं। आपकी वित्तीय दशा क्या और कितनी है। आप व्यक्तिगत रूप से विश्वासपूर्वक कठिन श्रम के प्रति ईमानदारी बरतेंगे। आप जिस कार्य प्रस्ताव को हस्तगत कर लेंगे। उसको सफल बनाने में सक्षम होंगे। आप अपनी आवश्यकता को संग्रह करने एवं लाभजनक एवं संतोषप्रद प्राप्ति में उन्नति करेंगे।

आप एक विशिष्ट प्रवृति के प्राणी हैं। आपके लिए कार्य-व्यवसायों में उत्तम कार्य खनिज खदान कार्य, कृषि कार्य, संचार, मिडिया, पुलिस विभाग तथा प्रतिरक्षा सेवा उपयुक्त प्रतीत होता है।

आप अपनी प्रिय पत्नी एवं समझदार संतान से युक्त प्रसन्नतम गृह के स्वामी होंगे। यद्य पि आप स्पष्ट रूप से अपने मनोभाव को प्रदर्शित नहीं करेंगे। आप सदैव अपने प्रिय एवं निकटतम संबंधियों के सुख एवं प्रसन्नता हेतु सब कुछ त्याग करने को प्रस्तुत रहेंगे।

आप सदैव प्रमुदित एवं सक्रिय रहेंगे। आपके अच्छे मित्र होंगे। परंतु आपको सतर्कता पूर्वक अपने संगी-साथी एवं मित्रों का चयन करना होगा।

आप गायन और कला के प्रति प्रवृत होंगे। आप बड़े ही आदर्श लेकिन क्षणिक उत्तेजनात्मक प्रवृति के हैं। ऐसा अन्य लोगों को अनुभव होगा। आप गर्म स्वभाव के जिद्दी एवं हैंकड़ी जमाने वाले प्राणी हैं। आप अपनी प्रवृति को नियमित रखें तथा आप समाज में अति प्रख्यात प्राणी प्रमाणित होंगे।

आपके लिए रंगों में अनुकूल पीला, सफेद, लाल एवं क्रीम रंग उत्तम है। परंतु नारंगी, हरा एवं नीला रंग आपके लिए सर्वथा त्यागनीय है।

आपके लिए अंकों में अनुकूल अंक 2, 3, 7 एवं 9 अंक लाभदायक है। परंतु अंक 1, 4, 5 एवं 8 अंक सर्वथा अनुपयुक्त एवं प्रतिकूल हैं।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली दिन शनिवार, एवं शुक्रवार का दिन अनुकूल प्रमाणित है। आपके लिए शेष तीन रविवार, सोमवार, एवं मंगलवार का दिन सर्वथा प्रतिकूल एवं अव्यवहारणीय है।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रुग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, कोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

भावफल

पूर्ण कालपुरुष 12 भावों में विभाजित है। ज्योतिष में प्रत्येक भाव जीवन के विशेष पहलू को दर्शाता है।

प्रत्येक जन्मकुंडली 12 भावों में विभाजित है तथा प्रत्येक भाव से जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, आयुर्दाय, धन, सम्पत्ति, आजीविका, शिक्षा, आय, सामाजिक जीवन, माता-पिता, रिपु, विवाह एवं व्यय आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। भाव फल में तीन महत्वपूर्ण तथ्य निहित हैं यथा- भावस्थिति, भावेश एवं भाव के कारक। इस खंड में आपको प्रत्येक भाव से संबंधित कारकत्व के फल जानने में सहायता मिलेगी। कुंडली के अनुसार निर्दिष्ट शुभ समय में अच्छे फल की प्राप्ति होती है तो दूसरी ओर अशुभ समय में जातक कष्ट, पीड़ा तथा समस्याओं का सामना करता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलवान एवं चंचलता के भाव से युक्त रहते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग इनसे प्रभावित रहते हैं। ये प्रारम्भ से ही प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारों के व्यक्ति होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही पसंद करते हैं अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम एवं सहानुभूति का भाव रहता है परन्तु धार्मिकता के भाव की न्यूनता रहती है। साथ ही आधुनिकता के भाव से परिपूर्ण रहते हैं। साहित्य एवं कला में रूचि के साथ साथ ये उत्तम वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टि कोण विशाल होता है तथा किसी भी प्रकार से भेद भाव की भावना इनमें नहीं रहती है अध्ययन के प्रति इनकी रूचि रहती है तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक सम्मान एवं आदर प्राप्त करते हैं। अवसरानुकूल नेतृत्व प्राप्त करने में भी सफल रहते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा बुद्धिमता से अपने अधिकांश कार्य कलापों को सम्पन्न करते हैं। अतः धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे परन्तु मन में स्थिरता कम ही रहेगी। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आप सूक्ष्म दृष्टि के व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों को प्रभावित करके उनके विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप परिश्रम पूर्वक धनार्जन करेंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति मार्ग प्रशस्त करेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप प्रारंभ से ही पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के रहेंगे तथा अपने इन्हीं गुणों के द्वारा जीवन में सफलताएं अर्जित करेंगे। धनैश्वर्य की आपके पास प्रचुरता रहेगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके इच्छित धन होगा।

समाज में आप एक सम्मानित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप समर्थ होंगे तथा सपरिवार उनका उपभोग करने में प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप श्रेष्ठ कार्यों को करने में रूचिशील दौरान आपकी- उत्कृष्ट कार्यों से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। साथ ही यदा कदा आप आवश्यकता से अधिक व्यय करेंगे। अतः ऐसी प्रवृति पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें।

मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आप बुद्धिमान विद्वान पराक्रमी एवं परिश्रमी पुरूष होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करने में समर्थ होंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप दार्शनिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा स्वप्न दृष्टा प्रवृति भी होगी। आप स्पष्ट वक्ता होंगे तथा अपनी वाणी को स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कहेंगे। साथ ही आप अत्यंत ही उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के प्रति आप पूर्ण सचेष्ट रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र होगा तथा अजनबी व्यक्ति भी प्रथम मुलाकात में ही आपसे प्रभावित होकर आपका मित्र बनने के लिए उत्सुक हो जाएगा। अपने विचारों को व्यक्त करते समय आप श्रोताओं की इच्छा के अनुसार ही अपने वक्तव्य को नया स्वरूप प्रदान करने की क्षमता रखेंगे जिससे लोग आपसे अत्यंत ही प्रभवित रहेंगे परन्तु यदा कदा आप में आत्म विश्वास की अल्पता होगी।

पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि आप की अच्छी रहेगी तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप अपने विचारों को समय समय पर परिवर्तित करते रहेंगे इसका मूल उददे्श्य पारिवारिक जनों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करना रहेगा। आपको सुन्दर एवं स्वादिष्ट भोजन अच्छा लगेगा परन्तु मीठा एवं नमकीन स्वाद आपके विशेष प्रिय रहेंगे। सामान्यतया आपके स्वाद अन्य जनों से भिन्न रहेंगे। आपकी वाणी में भी मधुरता रहेगी तथा अन्य जन आपकी वाणी से प्रभावित रहेंगे साथ ही प्रकृतिक दृष्यों का अवलोकन करना आपको प्रिय लगेगा। जमीन, जायदाद, वाहन तथा बहुमूल्य द्रव्यों का भी आप अर्जित करेंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त अचानक धन प्राप्ति एवं माता पिता की पैतृक सम्पति से भी आप धन वान होंगे तथा सुखपूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मेष राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति उत्तम रहेगी तथा बौद्धिक कार्य सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। साथ ही आप एक बुद्धिमान तथा विद्वान व्यक्ति भी होंगे। जीवन में भाईयों के सुख एवं सहयोग को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। यद्यपि उनका स्वभाव तेज होगा परन्तु बुद्धिमता से युक्त दौरान आपकी- प्रति वे आज्ञाकारी एवं कर्तव्य परायण रहेंगे। पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे तथा परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे। यदा कदा आप लोगों के मध्य वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकते है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप हृदय से विशाल होंगे तथा अन्य जनों के प्रति आपके मन में दया तथा सहानुभूति की भावना विद्यमान रहेगी। इसके साथ ही आप अपने ही तरीके से सोचेंगे तथा उसी को कार्य रूप में परिणित करेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सांसारिक कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही समाज में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप आधुनिक संचार सुविधाओं यथा टेलीफोन , वाहन, दूरदर्शन आदि उपकरणों से भी युक्त रहेंगे। संगीत या कला आदि के प्रति भी आपके मन में रूचि रहेगी तथा समयानुसार आप इससे मनोंरजन करेंगे । दूर समीप की यात्राओं से आपको समय समय पर लाभ होगा तथा इससे आपकी ख्याति में वृद्धि होगी। अच्छी एवं ज्ञानवर्द्धक पुस्तको को पढ़ने में आपकी रूचि रहेगी साथ ही लेखन कार्य भी आप सम्पन्न कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त सज्जनों से मित्रता करने वाले परोपकारी तथा विद्वान होंगे एवं सरकार से समय समय पर सम्मान प्राप्त करते रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आवश्यक सांसारिक सुखों से युक्त होंगे तथा आधुनिक सुख-संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी सम्पन्न होंगे एवं जीवन में उनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। आप एक समृद्धिशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में भी स्तर उन्नत होगा।

सामान्यतया जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी इसके स्वामित्व को प्राप्त करके आप श्रेष्ठता के भाव की अनुभूति करेंगे। किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपके नाम हो सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य में अभि वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से भी आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा परंतु विवाद युक्त सम्पत्ति से दूर ही रहना चाहिए।

आपका आवास सामान्यतया अच्छा होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप नित्य तत्पर होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सज्जन होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख की प्राप्ति होगी तथा युवावस्था से ही आप वाहन का उपयोग करना प्रारंभ करेंगे जिससे आपको प्रसन्नता की अनुभूति होगी।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी पारिवारिक जनों का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी फलतः सभी सदस्य उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप दोनों एक दूसरे के लिए सहयोगी सिद्ध होंगे तथा सुख-दुःख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे परंतु परस्पर मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है। अतः यदि आप परस्पर सामंजस्य बनाए रखें तो संबंधों में मधुरता आ सकती है। साथ ही माता से आपको अवसरानुकूल नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति भी होती रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको परिश्रम करना पड़ेगा तभी वांछित सफलताएं मिल सकती है। स्नातक परीक्षा उतीर्ण करने में भी आत्मविश्वास एवं परिश्रम के भाव का प्रदर्शन करना पड़ेगा लेकिन यदि आप स्नातक परीक्षा की अपेक्षा किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा आदि करें तो इससे आपके आसानी से सफलता मिलेगी तथा अपने भविष्य का निर्माण करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक एवं अन्य कार्य-कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं उचित निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी जिससे आप अवसरानुकूल वांछित लाभ एवं सफलता प्राप्त करेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान अपनी बुद्धिमता से शीघ्र एवं सुगमता से सम्पन्न करेंगे फलतः अन्य सामाजिक लोग भी आपसे प्रभावित होंगे एवं यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा इनका परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगे तथा आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

पंचमभाव में मिथुन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा आपका प्रेम भावनात्मक आकर्षण से युक्त होगा। इस क्षेत्र में आप मर्यादा एवं नैतिकता का भी यत्नपूर्वक पालन करेंगे एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाएंगे। अतः आपका प्रेम-प्रसंग विवाह के रूप में भी परिणित हो सकता है जिससे आपका दाम्पत्य जविन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर पुत्र एवं कन्या दोंनो की प्राप्ति होगी आपकी संतति बुद्धिमान, पराक्रमी, तेजस्वी एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में समान्यतया तत्पर होंगे परन्तु उनकी प्रवृति स्वछन्द एवं स्वतन्त्र होगी। अतः यदा-कदा वे बिना माता-पिता की सलाह से भी कोई कार्य सम्पन्न कर सकते है लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्रता कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव विश्वास एवं सम्बन्धों में मधुरता भाव बना रहेंगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आपकी पूरी सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली सिद्ध होंगे।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं परिश्रमी होगी तथा प्रारंभ से ही वांछित सफलताएं अर्जित करके अपने उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप भी अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगे एवं आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा प्रदान करेंगे जिससे वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में नित्य योग्य सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त वे विनम्र सक्रिय, व्यवहार कुशल एवं उत्तम कार्य-कलापों को करने वाले होंगे जिससे अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे तथा वांछित स्नेह प्रदान करेंगे। इससे आपके सम्मान में भी वृद्धि होगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से रक्त सम्बन्धियों या मित्रों से आपको यदा कदा विरोध या शत्रुता का सामना करना पड़ेगा तथा वे अकारण ही आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है। आपकी खुशहाली एवं वैभवता को देखकर लोग ईर्ष्यालु होंगे आपके शत्रु आप पर अपना प्रभाव जमाना चाहेंगे तथा आपकी सामाजिक छवि को भी धूमिल करना चाहेंगे। लेकिन आप अपनी चतुराई बुद्धिमता, विनम्रता एवं कूटनीति से शत्रुवर्ग को पराजित तथा उत्पन्न समस्याओं का सामना एवं समाधान करने में सफल होंगे।

आपके सेवक ईमानदारी तथा निष्ठापूर्वक आपकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे साथ ही आपके लिए वे आज्ञाकारी तथा विश्वासपात्र भी रहेंगे परन्तु यदि उन्हें उचित पारिश्रमिक नहीं दिया गया तो वे चोरी आदि भी कर सकते है अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए साथ ही कई बार वे आपके गुप्त रहस्यों को भी वे अपनी बातूनी प्रवृत्ति के कारण अन्य जनों से कह सकते है। इस प्रकार हो सकता है कि आप समय समय पर नौकरों का परिवर्तन करते रहें।

आप अपने व्यय पर नियंत्रण रखने में सफल रहेंगे क्योंकि आप धन संग्रह के प्रति विशेष रूचि रखेंगे। यही कारण है कि आप सबसे मित्रतापूर्ण संबंध रखने में प्रायः असफल से रहेंगे। साथ ही यदा कदा अनावश्यक पूंजी निवेश के कारण ऋण आदि की भी स्थिति आ सकती है तथा ऋण दाता द्वारा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके मामा मामी प्रवृत्ति से अच्छे व्यक्ति होंगे तथा आपके साथ उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। यद्यपि मामी से आपको पूर्ण सहयोग नहीं मिलेगा परन्तु मामा से आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप जीवन में फौजदारी मुकद्दमे से सम्बन्धित रहेंगे तथा इन पर आपका काफी समय एवं धन बर्बाद होगा परन्तु अपनी बुद्धिमता तथा अन्य गुप्त सूत्रों के द्वारा अन्त में विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त उत्तम स्वास्थ्य के लिए दैनिक खान पान में सावधानी रखें तथा मानसिक चिन्ताओं से भी दूर ही रहें अन्यथा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त कर सकते है।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है सामान्यतया सिंह राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं स्वाभिमानी होता है तथा उसमें कर्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके स्वभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी। सांसारिक कार्य कलापों को वह परिश्रम एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगी तथा अपने साहसिक कार्यो से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। वे अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी जिससे परिवार एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आपकी पत्नी गौर वर्ण की आकर्षक महिला होंगी एवं उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी तथा शरीर के अन्य अंग पुष्टता से युक्त रहेंगे जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में भी आकर्षण आएगा। पाश्चात्य समाज एवं संस्कृति के प्रति भी उनका रूझान रहेगा। भौतिकता के प्रति भी उनका आकर्षण होगा एवं सुंदर तथा कलात्मक वस्तुएं प्रिय होंगी तथा उनके संग्रह में तत्पर रहेंगी।

सप्तम भाव में सिंह राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा तथा इसमें अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा या आप स्वयं भी प्रेम विवाह कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में आकर्षण एवं प्रेम की भावना भी होगी आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा एक दूसरे के सहयोग से सांसारिक कार्यों को पूर्ण करेंगे। इससे आपस में प्रेम विश्वास एवं सदभाव बना रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से वे सुदृढ़ रहेंगे। विवाह के समय दहेज के रूप में आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा एक दूसरे से सम्मान एवं सहयोग अवसरानुकूल मिलता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की सेवा की भावना होगी तथा उनका सुख दुख में पूरा ध्यान रखेंगी। देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार एवं वाणी से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उन्हें वांछित सम्मान देंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति अच्छी रहेगी तथा आपके पूर्वाभास एवं भविष्य वाणियां सत्य होंगी अध्यात्म, ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे लेकिन व्यवहारिक के ज्ञान की अपेक्षा अंतर्प्रज्ञा शक्ति ही अधिक सहायक सिद्ध होगी। आपके अधिकाशं कार्य अध्यात्म के अनुसार ही सम्पन्न होंगे अतः कई बार आप वास्तविकता से दूर हो जाएंगे। आपको न्यूनाधिक मात्रा में पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी परन्तु बाद में आपको छोड़नी पड़ेगी जिससे आपको काफी मानसिक कष्ट होगा तथा इसके कारण वातावरण अशान्त होगा। साथ ही पुनः जायदाद जोड़ने के लिए आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। बन्धु एवं सम्बन्धियों से भी जायदाद के बारे में विवाद रहेगा जिससे परस्पर बन्धुत्व के भाव की अपेक्षा वैमनस्य का भाव ही उत्पन्न होगा ।

शादी के समय आपको किंचित धन आभूषण या अन्य चीजें दहेज के रूप में प्राप्त हो सकती हैं परन्तु आपके ससुराल वाले बार बार इस दहेज के बारे में आपको याद दिलाएंगे जिससे आपकी आधी खुशी उनके इस व्यवहार से खत्म हो जाएगी। बीमे के रूप में आपको विशेष लाभ की प्राप्ति नहीं होगी यह केवल जितनी हानि या नुकसान हुआ है उसी के लिए पर्याप्त होगी। आपके जीवन में कोई विशेष दुर्घटना या चोरी आदि का योग नहीं है यदि ये भी घटित भी होती है तो इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया सुख पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आदर्श एवं उदार प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में काफी श्रद्धा रहेगी। आप दिखावे में विश्वास नहीं करते तथा जो कुछ भी करेंगे हृदय से सच्ची भावना से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मनुष्य मात्र की भलाई के लिए भी कार्यो को सम्पन्न करते रहेंगे। दैनिक जीवन में आप पूजा तथा योग एवं धर्मानिषठ कार्य नित्य करते रहेंगे। साथ ही मानसिक एवं आत्मिक शान्ति के लिए तीर्थ स्थानों की यात्रा भी करेंगे। धार्मिक उत्सवों के प्रति आपकी आदर की भावना रहेगी तथा अपने धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मो का भी पूर्ण सम्मान करेंगे साथ ही पारिवारिक परम्परा, रीति रिवाजों के अनुसार धर्म का अनुपालन करेंगे।

आप ईश्वर की सत्ता में विश्वास करेंगे तथा जीवन में विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे। साथ ही भाग्य भी आपका प्रबल रहेगा। योग ध्यान या आध्यात्म संबधी महत्वपूर्ण ग्रंथों का आप अध्ययन करके ज्ञानार्जन करेंगे। इसके अतिरिक्त ज्योतिष आदि में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा अर्न्तप्रज्ञा शक्ति की प्रबलता से सही भविष्यवाणियां करने में भी समर्थ रहेंगे।

आप धार्मिक तथा व्यावसायिक उददे्श्य की पूर्ति के लिए जीवन में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न करेंगे तथा इनसे आपको मान सम्मान ख्याति तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा साथ ही सामाजिक जनों के परोपकार संबधी कार्य भी सम्पन्न करेंगे लेकिन कभी कभी स्वार्थ वश कंजूसी का भी प्रदर्शन करेंगे लेकिन यह अल्प मात्रा में होगा। आप एक ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा आपके अनुयायी या सहायक भी रहेंगे पौत्रों से आपको पूर्ण सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के प्रभाव से इस जीवन को ऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर व्यतीत करेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपकी जन्म कुंडली में जन्म समय में दशमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। वृश्चिक राशि जलतत्व युक्त राशि है अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया से युक्त होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी साथ ही कार्यक्षेत्र में आप समय समय पर परिवर्तन करने के भी इच्छुक रहेंगे तथा ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होगा जिससे आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र औषधि विज्ञान, डाक्टर, इंजीनियर, होटल प्रबंधक, या कर्मचारी, पुलिस सी आई डी, सेना, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग, शस्त्र निर्माता तथा राजनीति का क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेगा। इन क्षेत्रों में आजीविका प्रारंभ करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में आपको अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः उज्जवल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही कार्य करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए शस्त्रों का व्यापार सुवर्ण आदि धातु कार्य विद्युत उपकरणों का क्रय विक्रय या निर्माण औषधि क्रय विक्रय या कैमिस्ट रासायनिक पदार्थ या होटल का स्वामित्व से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा इस में आपको अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता के लिए उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने व्यापार का आरंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको वांछित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे साथ ही समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त होगी। आप किसी सामाजिक संस्था या क्लब आदि के भी सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य हो सकते है। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे जिससे सामाजिक जनों के मध्य वे आदरणीय होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्चस्तर पर शिक्षा का यत्नपूर्वक प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाएंगे। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा। आप भी एक योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक समानता रहेगी। आप में आज्ञाकारिता का भाव भी विद्य मान होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में धनु राशि स्थित है जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप पराक्रमी स्वस्थ्य तथा महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा जीवन में परिश्रम एवं योग्यता से इच्छाओं तथा आकाक्षांओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप जीवन में समस्त सुख साधनों से युक्त होंगे तथा निरन्तर रूप से आय एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक समृद्धि बनी रहेगी। आप शिक्षा, बैंक, ब्याज या प्रशासनिक कार्यो से इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे या तो आप इन क्षेत्रों में कार्यरत होंगे अथवा आपको इनसे संबंधित विभागों एवं लोगों से समय समय पर इच्छित लाभ प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इनके द्वारा आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी।

आपका बड़े भाई से पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे आपको इच्छित सुख सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा वे आपका पुत्रवत् पालन करेंगे। जीवन में आपको वे आर्थिक रूप से निर्भर बनाएंगे तथा समय समय पर आपका मार्ग निर्देशन भी करते रहेंगे। आप भी उनका पितृवत मान सम्मान करेंगे। आपको विद्वान मित्रों की हमेशा इच्छा रहेगी जो जीवन दर्शन के विषय में आपका मार्ग दर्शन कर सकें अतः विद्वान एवं शिक्षित लोग ही अधिक रूप से आपके मित्र होंगे। साथ ही अवस्था के साथ साथ आप युवावस्था के लोगों को उपदेश भी प्रदान करेंगे। आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र एवं समाज में प्रसिद्ध तथा आदरणीय रहेंगे तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको अपना मित्र समझेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा तथा समस्त सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अपनी योग्यता एवं परिश्रम के फलस्वरूप किसी भी माध्यम के द्वारा इच्छित उन्नति सफलता एवं ख्याति अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। आप एक आत्म विश्वासी पुरुष होंगे तथा आर्थिक एवं अन्य क्षेत्र की उन्नति के लिए खतरे उठाने में भी नहीं झिझकेंगे जिससे आपको अन्ततः लाभ ही होगा। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अच्छी ही रहेगी तथा आर्थिक सुदृढ़ता के कारण आप उन्मुक्त भाव से जीवन में आनन्द, सुख एवं शान्ति प्राप्त करने के लिए व्ययशील रहेंगे।

आप पारिवारिक जनों के प्रति पूर्ण समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधाओं रहन सहन, खान पान तथा अन्यत्र उच्च स्तर बनाए रखने के लिए प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे साथ ही अपने सामाजिक स्तर की वृद्धि करने के लिए भी आपको काफी व्यय करना पड़ेगा। चूंकि आपके पास धन एवं सम्मान की कमी नहीं रहेंगी अतः आप उपरोक्त क्षेत्र में आनन्द प्राप्त करेंगे। साथ ही अपरिचित लोगों तथा सामाजिक जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं अवसरनुसार उन्हें उचित आर्थिक सहयोग देंगे जिससे लोग आपकी दानशीलता से प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपनी संगठन शक्ति से जीवन में इच्छित सफलता अर्जित करेंगे।

आप व्यवसाय या कार्य क्षेत्र से संबंधित दूर समीप की यात्राएं करेंगे। इसी संदर्भ में आप विदेश की यात्रा भी करेंगे। यद्यपि इसमें व्यय अधिक परन्तु भविष्य में आपको उचित लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होगी।

नक्षत्र फल

नक्षत्र, राशि एवं पाया का संबंध चंद्र से है एवं ये आपके स्वभाव, व्यवहार, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के निधारण में महती भूमिका अदा करते हैं।

नक्षत्रफल आपके स्वभाव, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के संबंध में सटीक फलादेश बताता है। वैदिक अंक ज्योतिष में व्यक्तित्व के बारे में पता करने के लिए जन्म नक्षत्र की सहायता मुख्य रूप से ली जाती है। भारतीय महर्षियों का मानना रहा है कि नक्षत्र में ही हमारे कर्म के फल संचित रहते हैं। नक्षत्र, राशि एवं पाया चंद्र से संबंधित हैं तथा ये हमारे व्यक्तित्व, चरित्र, व्यवहार, योग्यता आदि का चित्रण करते हैं।

नक्षत्रफल

आप रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राहमण, गण देव, योनि गज, नाड़ी अन्त्य तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "दो" या "दौ" अक्षर से होगा। यथा- दौलत सिंह आदि

आप में स्वाभाविक रूप से सज्जनता का भाव विद्यमान रहेगा एवं समाज में दूसरे लोगों से आपके प्रिय एवं मधुर संबंध रहेंगे। धन वैभव आदि से आप हमेशा युक्त रहेंगे एवं सुख पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। इन्द्रियों पर आप पूर्ण नियंत्रण रखने में सक्षम रहेंगे तथा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। आप नैसर्गिक रूप से ईमानदार रहेंगे एवं अपने इसी गुण से व्यापारादि में धनार्जन करेंगे तथा किसी भी अनैतिक कार्य से धन लाभ प्राप्त नहीं करना चाहेंगे। इसके अतिरिक्त आप कुशाग्र बुद्धि के पुरूष होंगे एवं बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे।

चारूशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्य युक्त, जितेन्द्रिय, नेक नीयत से द्रव्य लाभ करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

आप शरीर के सुन्दर सर्वाङ्गों से परिपूर्ण रहेंगे। आप समाज में सभी वर्गो के मध्य प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप शौर्य गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं पराक्रमी तथा साहसिक कार्यो को सम्पन्न करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आपके इस साहसी स्वभाव से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप मन से स्वच्छ रहेंगे एवं सबके साथ विश्वास पूर्वक कार्य सम्पन्न करेंगे तथा धोखा किसी के भी साथ नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त धन सम्पति से सुशोभित रहकर समाज में आप एक धनवान पुरूष के रूप में भी यशार्जन करने में सफल रहेंगे।

सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक शारीरिक अंगो से पूर्ण सम्पन्न, सर्वसमाजप्रिय, रणप्रिय, हृदय से शुद्ध एवं धन से सुसम्पन्न होता है।

आपके सभी कार्य कुशलता पूर्वक सम्पन्न होंगे एवं अन्य सामाजिक जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही सुशील एवं प्रशंसनीय रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम रहेंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य से भी आप सुशोभित रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगे।

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।
मानसागरी

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सब अंगों से पूर्ण, पवित्र, कार्यों में दक्ष, साधु, शूरवीर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वथा अलंकृत रहता है।

काम भावना की प्रवलता से आप यदा कदा व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके जानुभाग में कोई निशान या चिन्ह भी हो सकता हैं। आप देखने में सुन्दर होंगे तथा सलाह या मंत्रणा आदि के कार्यों में दक्ष रहेंगे। आप सुशील पत्नी एवं गुणवान पुत्रों से युक्त रहेंगे एवं आपके सभी मित्र भी शिक्षित एवं सद्गुणों से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आप दृढ विचारों के व्यक्ति होंगे तथा सभी आवश्यक कार्यों को दृढता से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त स्थिर धन सम्पति से आप सुशोभित रहेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

रेवत्या मुरूलांच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मंत्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य जाघों में चिन्ह वाला, कामातुर, सुन्दर, मंत्री या सलाह देने वाला, दृढ़, श्रीयुत, स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है।

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखाकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरूष समझें जाएंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रूचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप सुन्दर आकर्षक शरीर एवं व्यक्तित्व से युक्त रहेंगे। आपका ललाट विस्तृत एवं नासिका उन्नत होगी। साथ ही आप की कमर भी पतली होगी। शिल्प एवं चित्रकारी में आप निपुण होंगे एवं परिश्रम पूर्वक इस क्षेत्र में सफलता तथा यशार्जन करने में सफल हो सकेंगे। आप शत्रुओं को पराजित करने में सक्षम होगे तथा वे भी आपसे सर्वदा भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे। साथ ही वे आपका विरोध करने में हमेशा असमर्थ रहेंगे। आपको विभिन्न शास्त्रों का भी ज्ञान होगा एवं एक विद्वान के रूप में समाज में सम्मान प्राप्त करेंगे। गीत शास्त्र के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे एवं यत्नपूर्वक इसका भी ज्ञान करने में आप उत्सुक रहेंगे। धर्म के प्रति

आपके मन में श्रद्धा एवं निष्ठा का भाव रहेगा एवं नियम पूर्वक आप धर्माचरण में प्रायः तत्पर रहेंगे स्त्री वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा कई लोगों से आपके मधुर एवं मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे। आप हमेशा मधुर एवं प्रियवाणी का उपयोग करेंगे जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो की भी आपको प्राप्ति होगी जिसका आप उपभोग करने में प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त करेंगे। आप में क्रोध के भाव की अल्पता भी रहेगी एवं राजकीय सेवा में भी आप नियुक्त रहेंगे। आप जमीन के अन्दर से निकाले गए पदार्थो से विशेष रूप से लाभ भी अर्जित करेंगे। स्त्री के आप पूर्ण रूप से नियंत्रण में रहेंगे तथा सभी आवश्यक कार्यों को उसके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव अच्छा रहेगा तथा सभी सामाजिक लोगों से आपके मधुर संबंध रहेंगे। इसके अतिरिक्त समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने में भी आप की प्रवृति रहेगी एवं इससे आपको प्रसन्नानुभूति प्राप्त होगी। साथ ही दानशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में यथाशक्ति इसका अनुपालन करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आपको जल या समुद्र से उत्पन्न पदार्थो तथा मोती शंखादि रत्नों से विशेष लाभ प्राप्त होगा तथा इनसे आप युक्त भी हो सकते हैं। साथ ही जीवन में किसी अन्य व्यक्ति संबंधी या मित्र की धन सम्पति भी आपको प्राप्त हो सकेगी तथा सुख पूर्वक आप उसका उपभोग कर सकेंगे। स्त्रियोचित परिधानों के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा। इसके साथ ही आप शारीरिक रूप से मध्यम कद के पुरूष होंगे।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा प्रकट करेंगे तथा जल को अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे। आपका अपनी पत्नी के ऊपर पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उससे हमेशा प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपका सांसारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। आप में विद्धता के गुण भी रहेंगे एवं कृतज्ञता के भाव से भी सर्वथा युक्त रहेंगे तथा अन्य मनुष्यों के द्वारा उपकृत होने पर उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करेंगे। इसके साथ ही आप भाग्यबल से युक्त पुरूष होंगे तथा आपके अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही सिद्ध होंगे।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्धान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप एक संयमी पुरूष होंगे एवं इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण रखकर जीवन व्यतीत करेंगे इससे आपके लिए अनावश्यक परेशानियां अल्प मात्रा में ही उत्पन्न होंगी। आप के अधिकांश कार्य चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे तथा सभी लोग आपके इस गुण से प्रभावित रहेंगे। जल क्रीड़ा करने में आप अत्यन्त ही आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगे तथा इसके लिए नित्य प्रयत्नशील भी रहेंगे। आप का मन सर्वदा शुद्ध रहेगा अतः अन्य लोगों से आप कभी भी धोखा नहीं करेंगे तथा शुद्ध मन से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

जीवन में आप सामान्यतया उदर पोषण आदि के कार्यों में ही अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। साथ ही यदा कदा लाभमार्ग भी अवरूद्ध होगे। इससे आपको आर्थिक परेशानियों का सामना भी करना पड़ेगा। शारीरिक कान्ति से आप सुशोभित रहेंगे एवं इससे आपके सौन्दर्य आकर्षण में निरन्तर वृद्धि होगी। पिता से आप पूर्ण रूपेण धन सम्पति प्राप्त करेंगे तथा जीवन में सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। आप साहसी एवं पराक्रमी व्यक्ति भी होंगे तथा साहसिक एवं शौर्योचित कार्यों को करने में नित्य तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सन्तोषी स्वभाव के व्यक्ति होंगे एवं जो कुछ भी उपलब्ध हो उसी में सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप में गम्भीरता का भाव नित्य विद्यमान रहेगा तथा वीरता के गुणों से भी आप युक्त रहेंगे। समाज में आप एक गणमान्य तथा प्रधान पुरूष के रूप में श्रद्धेय तथा सम्माननीय समझे जाएंगे। साथ ही आपका स्वभाव कृपणता से भी युक्त रहेगा एवं धन संचय के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप परिवार तथा कुल में भी प्रिय तथा श्रेष्ठ रहेंगे तथा सभी परिवारिक जनों से यथा योग्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। सेवा कार्यों में भी आप तत्पर रहेंगे एवं इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। आप शीघ्र गति से गमन करना पसन्द करेंगे। शनैः शनैः चलना आपको उचित नही लगेगा। इसके अतिरिक्त आप उत्तम आचरण के व्यक्ति होंगे तथा आपका आचरण अन्य लोगों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय रहेगा। इसके साण ही बन्धु जनों के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।

मानसागरी

इस प्रकार अपने आकर्षक सौन्दर्य एवं विद्वता से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में पूर्ण आदर तथा सम्मान अर्जित करेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

देवगण में पैदा होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं श्रेष्ठ रहेगी जिससे अन्य लोग आपसे नित्य प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आप की बुद्धि सरल रहेगी तथा सब कुछ सादगी से ग्रहण करने की क्षमता से आप सुशोभित रहेंगे। आप थोड़ी मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करने में रूचिशील रहेंगे एवं इसको प्राप्त करके आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे। अन्य लोगों के गुणों का आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा अच्छे बुरे की पहचान करने में नित्य समर्थ रहेंगे तथा स्वयं भी उत्तम विद्वानों द्वारा प्रतिपादित श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के धन ऐश्वर्य एवं वैभव की आपकी पास प्रधानता रहेगी तथा प्रसन्नतापूर्वक आप जीवन व्यतीत करेंगे।

आप देखने में सुन्दर होंगे तथा दानशीलता की भावना से सर्वथा सुशोभित रहेंगे। साथ ही आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने में नित्य रूचिशील रहेंगे। आप अनावश्यक भौतिकता तथा दिखावे के भी विरूद्ध रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक उच्च कोटि के विद्वान होंगे एवं समाज में एक विद्वान के रूप में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा तथा ख्याति रहेगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे ऽणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

गज योनि में जन्म होने के कारण आप उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग के सदैव प्रिय रहेंगे एवं इनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर भी प्राप्त करेंगे। इससे आपके अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य सुगमता पूर्वक सिद्ध हो जाएंगे। साथ ही शारीरिक बल से भी आप युक्त रहेंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को स्वभुजबल से ही सम्पन्न करेंगे। जीवन में विविध प्रकार के भौतिक सुखों को प्राप्त करने में भी आप सौभाग्यशाली रहेंगे। जीवन में आप किसी उच्चाधिकारी के सहयोगी या स्वयं भी उच्चाधिकारी बन सकते हैं। आप एक उत्साही पुरूष होंगे एवं उत्साह पूर्वक कार्य करने से सामान्यतया सफलता प्राप्त करने में सफल रहेंगे एवं आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पूर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र,

वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, व्रजयोग तथा विष्टि करण में कोई भी शुभ कार्य सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा की उपासना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थो का किसी योग्य पात्र को श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होगी तथा समस्त अशुभ फल दूर होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी एवं सर्वत्र लाभमार्ग प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी सुयोग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

लाल किताब

लाल किताब को इसके सहज, सस्ते एवं विश्वसनीय उपायों के कारण ज्योतिष का वंडर बुक कहा जाता है।

लाल किताब के ज्ञान को व्यावहारिक माना जाता है क्योंकि यह परंपरागत ज्योतिष के ज्ञान से अलग है। वैदिक ज्योतिष की भांति लाल किताब में भी नौ ग्रहों को ही प्रधानता दी गई है। साथ ही 12 भावों की ग्रह स्थिति के अनुसार फलादेश किया जाता है। फिर भी वैदिक ज्योतिष और लाल किताब में कुछ मूलभूत अंतर है। वैदिक ज्योतिष में भाव स्थिर होते हैं किंतु राशियां स्थिर नहीं होतीं किंतु लाल किताब में भाव एवं राशियां दोनों ही स्थिर होते हैं। लाल किताब कुंडली एवं वर्षफल भी उपायों के संदर्भ में विशद सूचना प्रदान करते हैं जिसे बिल्कुल अलग तरह का, विश्वसनीय, सहज एवं सस्ता माना जाता है।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती

होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी

धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

वार्षिक फलादेश

वार्षिक फलादेश गोचर पर आधारित हैं जिसमें शनि, राहु एवं बृहस्पति के गोचर से आपकी जन्मकुंडली का कोई अंश ऊर्जावान होता है जिसके प्रभाव से आपके जीवन में आने वाले वर्ष के घटनाक्रम की जानकारी प्राप्त होती है।

वार्षिक फलादेश से उस वर्ष जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ने वाले प्रभावों जैसे स्वास्थ्य, परिवार, संपत्ति, धन, आजीविका, व्यवसाय, शिखा, यात्रा एवं स्थानांरण आदि का विवरण विस्तृत रूप में उपाय सहित दिया गया है। वार्षिक फलादेश मुख्य ग्रहों के गोचर पर आधारित है।

वार्षिक फलादेश - 2017

इस वर्ष शनि धनु राशि में ग्यारहवें भाव में 26 जनवरी को प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में राहु सिंह राशि में सप्तम भाव में और गुरु कन्या राशि में अष्टम भाव में रहेंगे। 09 सितंबर को राहु कर्क में छठे भाव में और 12 सितंबर को गुरु तुला राशि में नवम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल इस वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 21 मार्च से 25 मार्च तक शुक्र अस्त रहेंगे और 14 दिसंबर के बाद फिर से अस्त हो जायेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के दृष्टि से यह वर्ष समान्य रहेगा। आप अपने भाग्य एवं कर्म के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। सप्तम स्थान का राहु अचानक ही व्यापार में परिवर्तन का योग बना रहे हैं यह परिवर्तन बहुत बढ़िया नहीं रहेगा। इसलिए जितना हो सके आप परिवर्तन से बचें। इस अंतराल कोई नया कार्य प्रारंभ न करें। आपको अपने जन्म स्थल से दूर सफलता मिलेगी। नौकरी करने वालों का स्थानांतरण हो सकता है और यह स्थानांतरण उनके इच्छित स्थान पर नहीं होगा। वर्ष के उत्तरार्ध में किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलने के कारण व्यवसाय में एक नया मोड़ मिलेगा। इस दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना देखे दस्तखत न करें और जोखिम भरे प्रवृति पर भी अंकुश लगाएं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। धन स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण धनागम में निरंतरता बना रहेगा जिससे आप बचत करने में सफल रहेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। आपको अपने परिवार के बड़े सदस्यों से आर्थिक सहायता प्राप्त होंगे। यदि आपका पैसा कहीं फंसा हुआ है तो कम प्रयास से प्राप्त हो सकता है। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल करने में धन व्यय हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो मनोनुकूल लाभ प्राप्ति नहीं होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो बहुत सोच विचार कर ही निर्णय लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि परिवार में सुख शांति प्रदान करने वाला होगा। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग आपको प्राप्त होगा। विशेष कर माता जी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हो सकता है एवं नवविवाहित दम्पतियों को संतान सुख की प्राप्ति भी हो सकती है। जिससे आपके परिवार में नये सदस्यों की बढ़ोतरी होगी। वर्ष के उत्तरार्ध में पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है जिससे आपको मानसिक अशांति का सामना करना पड़ेगा।

संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी संतान की तरक्की के योग सामान्य ही है। उनके स्वास्थ्य के साथ साथ शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उन्नति के मार्ग में अवरोध आ सकते हैं। इस समय के

अंतराल उनको सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है। 12 सितम्बर के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं। आपके बच्चे की शिक्षा में भी सुधार अवश्यम्भावी है। इनको उन्नती के भी अवसर मिलते रहेंगे। आप के बच्चे अपने मेहनत के बल पर मान संमान व प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु की दृष्टि के प्रभाव से स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां उत्पन्न होती रहेंगी। राहु के प्रभाव के कारण कई बार तो बीमारी न होने के बावजूद भी बीमारी होने का भ्रम भी हो सकता है। ऐसे में अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना होगा। यदि पहले से कोई लंबी बीमारी भुगत रहे हैं तो परहेज की आवश्यकता है। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों को अपनी बुद्धिमत्ता से झेलने का विश्वास अपने अंदर पैदा करें अन्यथा स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर के लिए सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता की तैयारी करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अधिक अनुकूल नहीं है। 9 सितम्बर के बाद आप इच्छित सफलता प्राप्त करेंगे। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें। निश्चित तौर पर सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अपने कार्य क्षेत्र मे विशेष उपलब्धि प्राप्त होगी एवं अपनी संस्था में सम्मान प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्ध बहुत बढ़िया नहीं है वर्ष के पूर्वार्ध में किसी कारण से घर से दूर रहने का योग बन रहा है। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेगी लेकिन विदेश यात्रा में विलंब हो सकता है। 12 सितंबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा उस समय धार्मिक व्यक्तियों का तीर्थ यात्राएं होंगे। नौकरी करने वालों का भी स्थान परिवर्तन होगा। यह स्थानांतरण जन्म स्थल से दूर हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध मे गुरु अष्टम स्थान मे रहेंगे। जिसके कारण आपका मन धार्मिक कार्यो में अधिक नही लगेगा। मन एकाग्र नही रहने के कारण आप पूजा पाठ के लिए समय नही निकाल पाएंगे। 12 सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा। उस के बाद आप का रुझान धर्म के प्रति होगा। आप अपने गुरूजनो का संम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। समय समय पर आप गरीबों की सहायता करेंगे। इस समय के अंतराल में आप कोई विषेश अनुष्ठान करेंगे जैसे- अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण इत्यादि।

- तुला दान करें अर्थात आपका जितना वजन हो उतना अन्न दान करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घूमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें एवं गुरु, साधु, सन्यासी एवं गरीब लोगों की सहायता

करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2017 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्व व्यतीत करेंगे। इस समय स्त्री वर्ग से आप पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करेंगे। आपका स्वास्थ्य इस मास अच्छा रहेगा तथा किसी भी प्रकार से शारीरिक या मानसिक अस्वस्थता नहीं रहेगी। अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रूचि बढ़ेगी तथा मित्र वर्ग से सम्बन्धों में मधुरता रहेगी एवं उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही वांछित द्रव्य पदार्थों का उपभोग करके आप प्रसन्नता को प्राप्त करेंगेत संतति पक्ष से भी आपको शुभ फल ही प्राप्त होंगे तथा किसी प्रकार से चिन्ता नहीं रहेगी। मित्रों तथा सम्बन्धियों में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित होगी। फलतः आप आनंदपूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

इसके साथ ही आप पुत्र एवं स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा विद्याध्ययन में भी उन्नति होगी। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या द्रव्य आदि की भी आपको उपलब्धि हो सकती है। इस प्रकार आप शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक इस मास को व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

फरवरी 2017 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप दुष्ट मनुष्यों की संगति को प्राप्त करेंगे तथा व्यय भी काफी होगा जिससे आर्थिक एवं मानसिक रूप से आप कष्टानुभूति होगी। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे। काफी परिश्रम के बाद भी आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अल्प सफलता ही प्राप्त कर सकेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों को आप उचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगे।साथ ही अन्य प्रकार से भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। आपके मित्रों एवं सम्बन्धियों से तनावपूर्ण सम्बन्ध रहेंगे तथा नौकरी या व्यापारिक कार्यों में भी अनावश्यक रूप से बाधाएं या रूकावटें उत्पन्न होंगी। शत्रु पक्ष से भी आपके मन में भय तथा चिन्ता रहेगी तथा जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। अतः समय समय पर मन से बेचैनी भी रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त आदि से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट प्राप्त करेंगे तथा रक्तविकार का भी योग बनता है अतः सावधानीपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हो सकें तथा शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

मार्च 2017 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही सुखदायक एवं आनंदवर्द्धक रहेगा। इस समय आपका

शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगे।साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं का नाश होगा तथा लाभमार्ग भी नित्य उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे फलतः आर्थिक रूप से आप पूर्ण सुदृढ़ रहेंगे। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करेंगे।साथ ही समाजिक जनों से आप पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। यह मास आपकी भाग्योन्नति में भी सहायक रहेगा तथा कई ऐसे शुभ कार्य जो समय से सिद्ध न हो रहे हों इस समय सिद्ध हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्रों से संबन्धों में मधुरता बढ़ेगी तथा सांसारिक कार्यों में पूर्ण सफलता मिलेगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे पूर्ण प्रसन्न रहेंगे तथा इनसे आप अनुकूल सहयोग होता रहेगा।

साथ ही आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी अर्जित करेंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा सुख पूर्वक मास को व्यतीत करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा समाज से आप पूर्ण यश तथा सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

अप्रैल 2017 के लिए फलादेश

इस मास को सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।साथ ही आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेंगे। समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धुओं एवं मित्र वर्ग से आप आदर तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा सहायता भी अर्जित करेंगे। इस मास में आप मिष्ठान्न का भी अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे। साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा एवं शारीरिक बल में भी वृद्धि होगी। इस समय शत्रु वर्ग भी आपसे भयभीत एवं चिन्तित रहेगा। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यों के द्वारा भी धनार्जन होगा। इस प्रकार आप सम्पूर्ण मास को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही आप स्त्री का पूर्ण सुख भी प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी उचित सहयोग तथा सहायता मिलती रहेगी। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव उत्पन्न होगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाजिक जनों से भी पूर्ण यश अर्जित करेंगे।

मई 2017 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम रहेगा तथा इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपको यश तथा सम्मान की भी प्रप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूजा तथा सत्कार की भावना उत्पन्न होगी। आप अन्य जनों की भलाई के लिए भी तत्पर रहेंगे एवं यत्नपूर्वक इसे सम्पन्न करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करके यश की प्रप्ति करेंगे। साथ ही आपकी मानप्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस मास भाइयों से आप पूर्ण सहयोग

तथा सुख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने मानसिक विचारों तथा संकल्पों को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे।

साथ ही अन्य शुभ फलों के प्रभाव में भी नित्य वृद्धि होती रहेगी। इससे शरीर में आरोग्यता मन में संतुष्टि एवं बुद्धि के प्रभाव में वृद्धि होगी। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक होगा एवं मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न रहेंगे।

जून 2017 के लिए फलादेश

इस मास में आपके लिए मिलेजुले शुभाशुभ फल होंगे।अतः शारीरिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।साथ ही दुश्मनों से भी आपको भय तथा चिन्ता का वातावरण प्राप्त होगा फलतः मानसिक रूप से भी आप उद्विग्न रहेंगे। इस समय पारिवारिक जनों से भी सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से आपसी सम्बन्धों में तनाव का वातावरण उत्पन्न होगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में इस मास हानि या मंदी आ सकती है साथ ही कोई परिवर्तन भी हो सकता है या संबधित कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य लोगों से भी आपके संबन्धों में कटुता उत्पन्न होगी। अतः सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिकत शरीर में रोग तथा धन की हानि होने की भी सम्भावना रहेगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे जिससे आप उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग प्राप्त करेंगे एवं कार्यों में किंचित उन्नति का भी आभास होगा। आप इस समय दूर समीप की यात्रा भी करेंगे एवं नवीन वस्त्रादि की भी प्राप्ति होगी। अतः आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

जुलाई 2017 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का अभिवर्द्धन होगा तथा सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से सम्पन्न करने में आप सफल रहेंगे।साथ ही संतति पक्ष से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ भी हो सकता है। इस मास में आपका प्रभुत्व बढ़ेगा तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी इस माह में सम्पन्न होंगे तथा अच्छे समाचारों की भी प्राप्ति होगी। देवता एवं ब्राहमणों का आप पूर्ण सम्मान करेंगे तथा श्रद्धापूर्वक उनका पूजन भी केरेंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल सिद्ध होंगे।साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी एवं समस्त मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी जिससे आप मन से सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य कई प्रकार से भी आवश्यक सुखों को प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी। इस प्रकार आप इस मास को पूर्ण सुख शान्ति एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

अगस्त 2017 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ फलों को अर्जित करेंगे। इस समय आप शारीरिक रूप से अस्वस्थ एवं दुर्बलता की अनुभूति करेंगे साथ ही शत्रुपक्ष से भी अनावश्यक भय एवं चिन्ता का वातावरण रहेगा जिससे मन में अशान्ति उत्पन्न होगी। इस समय आपके घर में या अन्यत्र चोरी आदि भी हो सकती है। अतः आपको चोरों से सावधान रहना चाहिए। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का उलंघन न करें अन्यथा आप दंडित भी हो सकते हैं। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे साथ ही धन का भी अनावश्यक व्यय होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को भी इस समय सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पछताना पड़ेगा। सम्बन्धियों एवं मित्रों से भी आपके सम्बन्धों में तनाव रहेगा तथा समाज से उपेक्षा प्राप्त कर सकते है। इसके अतिरिक्त आशाओं की पूर्ति में भी आप असफल ही रहेंगे।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे जिससे आप स्त्री से सुखी रहेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से अपने प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा एवं यत्नपूर्वक आप इसका अनुपालन करेंगे। इस प्रकार आपका यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

सितम्बर 2017 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ एवं परेशानी उत्पन्न करने वाला होगा। इस समय आप स्त्री पक्ष तथा बन्धु जनों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं शत्रुओं की ओर से भी नित्य चिन्ता एवं भय का वातावरण बना रहेगा। आपके उत्साह में भी इस मास अल्पता रहेगी एवं धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा।जिससे आर्थिक परेशानी हो सकती है।साथ ही आप शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे तथा मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। स्वबन्धुजनों से भी आपके सम्बन्धों में मधुरता का अभाव रहेगा एवं तनाव का भाव रहेगा जिससे मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे। अतः मानसिक तनाव से आप ग्रस्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाजिक जनों से विवाद या संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है अतः सावधानी पूर्वक समय अनुसार चलने का प्रयत्न करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी तथा पित्तजनित दोषों से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त सम्बन्धी विकार से भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा दुर्घटना से भी बचें। इस मास में अग्नि से भी किसी प्रकार की हानि हो सकती है।अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया कष्टदायक रहेगा।

अक्तूबर 2017 के लिए फलादेश

समान्य रूप से इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आप शत्रुओं से अनावश्यक रूप से भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार से चोरी आदि की घटना भी घटित हो सकती है।साथ ही आपका धन अधिक मात्रा में व्यय होगा जिससे आप आर्थिक रूप से परेशानी का अनुभव करेंगे। धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा में अल्पता आएगी तथा स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं विविध प्रकार से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे। इससे शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। साथ ही आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते हैं।

सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे एवं मुकद्दमे आदि के कार्य में भी आपका धन व्यय होगा। अतः सावधानी पूर्वक ऐसे समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे।अतः स्त्री तथा पुत्र संतति से सुख प्राप्त करेंगे तथा नवीन वस्त्रों या द्रव्यों को भी प्राप्त कर सकते हैं जिस से आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी एवं अन्य प्रकार से भी शान्ति की अनुभूति करेंगे।

नवम्बर 2017 के लिए फलादेश

इस मास में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्णरूपेण संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। साथ ही घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही धार्मिक क्षेत्र में आपकी श्रद्धा में भी अभिवृद्धि होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप यथोचित सम्मान तथा पूजन करेंगे। समाज में इस समय आपके यश की वृद्धि होगी एवं भाग्योदय सम्बंधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा एवं यात्रा से आप पूर्ण लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। सरकारी या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सम्मान अर्जित करेंगे। इस समय मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके सम्बन्धों में मधुरता रहेगी तथा सर्वत्र माननीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य अशुभ फल भी होंगे। जिसके कारण आप वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं या किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिससे आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित होगी एवं बाद में आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानीपूर्वक कार्यो को सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2017 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में अर्जित करेंगे एवं अशुभ फल न्यून ही घटित होंगे। इसके प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे एवं वे सभी आपसे संतुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुजनों को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा उनसे सम्बन्ध भी मधुर रहेंगे।आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा उनकी सेवा एवं पूजन के कार्य को आप अवश्य सम्पन्न करेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी ।साथ ही अपनी असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करके मानसिक शान्ति एवं प्रसन्नता प्राप्त करेंगे। अतः यह मास आपके लिए शुभ फलदायक ही सिद्ध होगा।

साथ ही यदा कदा अशुभ फलों के प्रभाव से आप वातजन्य रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा को आंच आएगी एवं आप उसके लिए पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा धन हानि का योग भी बनता है। अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

इस वर्ष शनि धनु राशि में ग्यारहवें भाव में और राहु कर्क राशि में छठे भाव में रहेंगे। गुरू तुला राशि में नवें भाव में रहेंगे और 11 अक्तूबर के बाद वृश्चिक राशि में दसवें भाव में गोचर करेंगे। मंगल वक्री होकर 02 मई से 06 नवम्बर तक मकर राशि में बारहवें भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ से लेकर 04 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे। उसके बाद फिर 16 अक्तूबर से 30 अक्तूबर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। अपने कार्य में आपको लगातार सफलता प्राप्ति होती रहेगी और आप अपने भाग्य एवं कर्म के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आपकी आय में स्थिरता आएगी। नौकरी वाले व्यक्तियों को अपने कार्य स्थल पर ही सम्मान प्राप्त होगा। 11 अक्तूबर के बाद गुरु का गोचर दशम स्थान में हो रहा है । उस समय आप कोई नया व्यापार शुरु कर सकते हैं। यह समय आपके लिए अनुकूल है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अच्छा फलदायक रहेगा। धनागम में निरंतरता बने रहने के कारण आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आपके घर मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा। उसमें भी आपका धन खर्च होगा। इस अवधि में कहीं से वसीयत प्राप्त होने की सम्भावना बन रही है। 11 अक्तूबर के बाद मामा या ससुराल पक्ष के लोगों से धन प्राप्ति का योग बन रहा है। नया घर, वाहन आदि खरीदने के लिए यह समय उपयुक्त रहेगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। अधिक भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पंचम भाव पर शनि एवं गुरुकी संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके पुत्र के साथ आपका सम्बन्ध मधुर होगा। संतान प्राप्ति का शुभ योग बना हुआ है। सामाजिक मान-सम्मान में वृद्धि होगी। मित्र और सम्बन्धियों का सहयोग मिलेगा। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा होगा तो उसमें अनुकूलता प्राप्त होगी। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आपको शत्रु पक्ष पर पूर्ण विजय प्राप्त होगी। 11 अक्तूबर के बाद आपके माता-पिता का सहयोग प्राप्त होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए विशेष शुभ फलदायक रहेगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। संतान की आय में वृद्धि का योग बन रहा है। पढ़ाई के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे संस्थान में प्रवेश होगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में प्रथम संतान का विवाह संस्कार हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष पूर्णतया अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा और मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे तथा प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो पूरा वर्ष आपके लिए स्वास्थ्यवर्धक रहेगा। आपकी कार्य क्षमताओं तथा रोग प्रतिरोधक शक्तियों की भी निरंतर वृद्धि होगी तथा आप योग, ध्यान आदि क्रियाओं में रुचि लेकर अपनी आरोग्यता बढ़ाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी सही रखेंगे। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष करियर के लिए उत्तम रहेगा, षष्ट स्थान का राहु प्रतियोगी परीक्षा के लिए अच्छा योग बना रहें है। इस वर्ष आप प्रतियोगी परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए यह वर्ष विशेष शुभ है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। व्यवसाय में उन्नति हेतु आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। हर प्रकार की यात्राएं जैसे तीर्थयात्रा, व्यावसायिक यात्रा व पर्यटन स्थल में जाने के प्रबल योग बनेंगे। नौकरी वालों का 11 अक्तूबर के बाद स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके लिए अनुकूल रहेगा या आपके इच्छित स्थान पर भी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष बहुत अनुकूल है। नवम स्थान में गुरु ग्रह के प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा अनुष्ठान जैसे महामृत्युंजय यज्ञ, दुर्गासप्तशती पाठ, भागवत कथा, अखण्ड रामायण का पाठ, माता का जागरण या अन्य कोई हवन इत्यादि संपन्न करेंगे जिससे समाज में मान सम्मान बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन सुबह सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल, रोली एवं लाल पुष्प डालकर)
- नित्य प्रति प्राणायाम करें तथा गौरी गणेश पूजन करें।

इस वर्ष शनि धनु राशि में एकादश भाव में रहेंगे। 23 मार्च को राहु मिथुन राशि में पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 मार्च को गुरु धनु राशि में एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 23 अप्रैल को वृश्चिक राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 05 नवम्बर को धनु राशि में एकादश भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा परन्तु कार्य में सफलता प्राप्ति के मार्ग पर लगातार व्यवधान आते रहेंगे। सट्टा व शेयर मार्केट आदि कार्यों से दूर रहें। शत्रु पक्ष द्वारा कार्यों में रूकावटें डाली जायेंगी। अतः सावधानी बरतें।

दशम स्थान स्थित गुरु नौकरी करने वालों की पदोन्नति करायेंगे। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। व्यवसाय मेंविस्तार होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य लाभ दायक रहेगा। आय स्थान का शनि धानागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे। फंसे हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। मांगलिक कार्यमें आप धन व्यय करेंगे। सट्टा कार्यों में धन हानि हो सकती है।

उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपने आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष वाहन के क्रय, भवन निर्माण कार्य या घर में विवाह आदि पर धन का व्यय होगा। निवेश के लिए भी यह समय अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। दूसरे भाव पर गुरु की दृष्टि से परिवार में शांतिपूर्ण वातावरण रहेगा। आपको पारिवारिक माहौल से सहारा मिलेगा। परिवार के साथ तीर्थाटन पर जा सकते हैं। परिवार में नये सदस्यों की बढ़ोत्तरी होगी।

माता पिता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। विरोधी दूर होंगे एवं परिवार के लोगों का व्यवहार बहुत अच्छा हो जायेगा। इस वर्ष आप परोपकारी, जन कल्याण तथा सेवा कार्यों में संलग्न रहेंगे। ऐसा करने से आपके मान-सम्मान व पुण्य की वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढिया नहीं रहेगा। बच्चों की शिक्षा स्वास्थ्य व उन्नति में भी बाधा उत्पन्न होगी।

23 मार्च के बाद राहु का गोचर पंचम स्थान में होगा। गर्भपात होने की सम्भावना है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। पेट दर्द तथा पाचन तन्त्र से सम्बन्धित समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन करें एवं योगाशन करते रहें।

कभी-कभी मौसम जनित बीमारियों से परेशान हो रहे हैं तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे। 23 मार्च के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो जाएगा। यदि आप ब्लडप्रेशर के मरीज हैं तो उस समय अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर के लिए उत्तम रहेगा, षष्ट स्थान का राहु प्रतियोगी परीक्षा में सफलता के लिए अच्छा योग बना रहा हैपरन्तु 23 मार्च के बाद राहु ग्रह का गोचर पंचम स्थान मे होगा। वो समय विद्यार्थियो के लिये बाधा कारक है। उस समय पढ़ाई के प्रति अरूचि उत्पन्न होगी।

तकनीकी शिक्षा, प्राद्यौगिकी व इन्जीनियरिंग की पढ़ाई में दाखिला मिल जायेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी मोटी यात्राएं होती रहेंगी। वर्षारम्भ में विदेश यात्रा भी हो सकती है।

23 मार्च के बाद नौकरी में स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके लिए अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। आपका मन एकाग्र रहेगा जिससे योग ध्यान इत्यादि किया करते रहेंगे। आप मन्त्र जाप व कुछ तान्त्रिक क्रियाओं में रुचि लेंगे।

- दुर्गा बीसा यन्त्र गले में धारण करें। प्रतिदिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- अपने कार्य स्थल पर व्यापार वृद्धि यन्त्र स्थापित करें एवं नित्य उसका पूजन करें।
- कन्या पूजन करें तथा उन्हें भोजन व नूतन वस्त्र आदि प्रदान करें।

इस वर्ष शनि 24 जनवरी को मकर राशि में द्वादश भाव में प्रवेश रहेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में राहु मिथुन में पंचम भाव में होंगे और 19 सितम्बर के बाद वृष राशि में चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 30 मार्च को गुरू मकर राशि में द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे एवं वक्री होकर 30 जून को धनु राशि में एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 20 नवम्बर को मकर राशि में द्वादश भाव में आजाएंगे। 31 मई से 8 जुन तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। वर्ष के शुरुआत में सप्तम स्थान पर गुरू की दृष्टि साझेदारी व्यापार का योग बना रही है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह जरूर लें। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें।

जोखिम उठाने से बचें। निवेश के मामले में सावधानी बरतें अन्यथा व्यापार में हानि उठानी पड़ सकती है।नौकरी करने वालों के लिए कुछ तनाव की स्थिति रह सकती है तथा स्थानान्तरण के भी योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण धनागम रहते हुए भी आप इच्छित वचत नहीं कर पाएंगे। कुछ खर्चे तो अचानक आ सकते हैं जिससे आपका आर्थिक स्थिति बिगाड़ सकता है। अतः पहले से इस मामले को जानकर आप अभी से अतिरिक्त धन संचय कर सकते हैं।

आर्थिक निवेश के लिए यह समय बहुत अनुकूल नही है। यदि आप निवेश करना चाहते है तो उस क्षेत्र से जुड़े लोगो की सलाह जरूर ले। अनावश्यक व्यय से बचें। यात्राओं पर धन व्यय होने के योग हैं। सट्टा व शेयर मार्केट आदि में निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। परन्तु आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा।

पंचम स्थान का राहु आपके पुत्र का स्वास्थ्य खराब कर सकता है। सन्तान सम्बन्धी चिन्ताएं बनी रह सकती हैं। इस वर्ष आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा और उनके साथ माधुर्य का समन्वय बना रहेगा। 19 सितम्बर के बाद राहु ग्रह का गोचर चतुर्थ स्थान में होगा। उसके बाद परिवार में कुछ चिन्ता व अनावश्यक घबराहट के कारण उपस्थित हो सकते हैं। मां के स्वास्थ्य के मामले में सावधानी की आवश्यकता है।

संतान

संतान के मामले में पंचम स्थान का राहु आपके पुत्र का स्वास्थ्य खराब कर सकता है। सन्तान सम्बन्धी चिन्ताएं बनी रह सकती हैं।उनकी सफलता के मार्ग मे कुछ परेशानी आ सकती है। फिर भी वह अपने परिश्रम के बल पर सफलता प्राप्त करेंगे।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अनुकूल है। 30 जून के बाद उसका विवाह संस्कार हो सकता है। पंचम स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों के लिए गर्भपात के संकेत लेकर आ रहा है अतः सावधानी बरतें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। जो पेट के मरीज है वह अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। राहु व शनि का गोचर मानसिक अशान्ति उत्पन्न कर सकता है। लेकिन आपके स्वास्थ्य पर उसका ज्यादा नकारात्मक प्रभाव नहीं रहेगा। आप रोज सुबह सूर्य की ताजा किरणों का आनन्द लेते हुए सूर्य नमस्कार करें। जिससे आपके शरीर पर किसी प्रकार का बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा।

19 सितम्बर के बाद समय धीरे धीरे अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। उस समय चर्बी बढ़ाने वाले वस्तु का सेवन कम करें नहीं तो आप का मोटापा बढ़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रारम्भ में प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय शुभ नहीं रहेगा। आप विदेश जा कर तकनीकि शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो इसमें कुछ कठिनाई आ सकती है।

षष्ठ स्थान पर गुरू एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है परन्तु पंचमस्थ राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते बनते-बनते कार्यों में अचानक रुकावट आ सकती है।19 सितम्बर के बाद रुकावटें समाप्त होंगी तथा सफलता प्राप्ति का मार्ग कुछ सरल होगा।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष आपकी खूब यात्राएं होंगी। 30 मार्च के बाद द्वादश स्थान में शनि एवं गुरू की युति के प्रभाव से विदेश यात्रा के योग बन सकते हैं। यह यात्रा आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगी।

नवम स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण यात्राओं में कुछ मुश्किलें आ सकती हैं परन्तु 19 सितम्बर के बाद इस प्रकार की कठिनाईयों से छुटकारा मिल जायेगा। इस वर्ष आप धार्मिक यात्रायों का आनन्द नही ले पाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धर्म स्थान पर शनि एवं राहु की संयुक्त दृष्टि के कारण आपका पूजा पाठ, ईश्वर भक्ति आदि में विशेष रूझान नहीं हो पाएगा। आप का मन भी अशान्त रहेगा। 19 सितम्बर के बाद इष्टदेव में आपकी श्रद्धा भक्ति बढ़ेगी।

- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाए और हनुमान चालीसाया सुन्दरकाण्ड का पाठ करें।
- गरीब लोगों को काला कम्बल दान करें तथा अनाथ आश्रम में अन्न दान करें।
- सुबह सुबह पीपल के वृक्ष के नीचे जल चढाये। और साम के समय वहा चौमुखी दीपक जलाएं।
- संतान गोपाल मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा सप्तशति का पाठ करें।

इस वर्ष शनि मकर राशि में द्वादश भाव में और राहु वृष राशि में चतुर्थ भाव में रहेंगे। 6 अप्रैल को गुरू कुम्भ राशि में प्रथम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 सितम्बर को मकर राशि में द्वादश भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर फिर से 20 नवम्बर को कुम्भ राशि में प्रथम भाव में आजाएंगे। मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 17 फरवरी से 19 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। इस समय के अन्तराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे व्यापार को ही समुचित और व्यवस्थित ढंग से चलाएं तथा अनावश्यक और जोखिम वाले निवेश से बचें।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आप के प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक सप्तम स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ लाभ उठा सकते है। लग्न स्थान स्थित गुरू नयी विचारधारा एवंनयी योजनाओं को जन्म देंगे जिसका लाभ आप अपने व्यापार में उठा सकते है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। धनागम के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं जिसके कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। निवेश के मामलों में सावधान रहना जरुरी होगा। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने के तरीकों पर अच्छी तरह सोच विचार कर निर्णय लें। जोखिम उठाने के लिए यह समय अनुकूल नहीं है। अचानक नुकसान होने की सम्भावना है।

शारीरिक बीमारी में भी आपका धन व्यय हो सकता है। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक आपका समय अनुकूल हो सकता है। इस वर्ष आपको अचानक सम्पत्ति प्राप्ति के योग हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में थोड़ी कटुता का बातावरण बना सकती है जिसके कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है।

चतुर्थ स्थान का राहु आपकी माता का स्वास्थ्य खराब कर सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। सितम्बर के बाद आपको मामा मामी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष अनुकूल है। 6 अप्रैल को गुरू ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय आपके वच्चे उन्नति के शिखर पर होंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह के पूर्ण योग बने हुए हैं।

14 सितम्बर के बाद समय थोड़ा प्रतिकूल होगा। उस समय उनका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।उनके स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान में गुरू एवं शनि का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहींहै। यदि पहले से किसी बीमारी से ग्रस्त हैं तो यह समय अधिक कष्ट कारक हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद लग्न स्थान का गुरु मन में अच्छे विचारों को जन्म देगा।अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 14 सितम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य फिर से प्रभावित हो सकता है। दोनों ग्रह वायु तत्व की राशि में होने के कारण श्वास सम्बन्धित परेशानी दे सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा, षष्ठ स्थान पर शनि एवं गुरू की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। 14 सितम्बर के बाद का समय विद्य ार्थियों के लिए शुभ है। उच्च शिक्षा प्राप्ति के योग बनेंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वादश स्थान पर गुरू एवं शनि ग्रह की युति प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 6 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि सुदूर यात्रा के योग बना रही है।

द्वादश स्थान में शनि के प्रभाव से यात्रा के दौरान आपको शारीरिक कष्ट का सामना भी करना पड़ सकता है। यात्रा के समय या वाहनादि चलाते समय आपको सावधान रहने की जरूरत है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरू एवं शनि ग्रह की युति प्रभाव से आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा। मन एकाग्र नहीं रहने के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 6 अप्रैल के बाद गुरू ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरू ग्रह की

दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन लोहे का तवा दान करें एवं शनि मन्त्र का जप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ाएं एवं नित्य प्रति प्रातःकाल हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- अपनों से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।

इस वर्ष 13 अप्रैल को गुरु मीन राशि में द्वितीय भाव में और 17 मार्च को राहु मेष राशि में तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अप्रैल को शनि कुम्भ राशि में प्रथम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 12 जुलाई को मकर राशि में द्वादश में आजाएंगे। 30 सितम्बर से 21 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तम भाव पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। जिससे आपके आय में वृद्धि होगी। इस समय आपका भाग्य सामान्य रूप से आपके साथ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। नौकरी करने वालों की उन्नति होगी परन्तु स्थानान्तरण के साथ साथ कुछ कठिनाईयों के योग भी बन रहे हैं। अपने कार्य स्थल पर पूर्ण निष्ठा के साथ धैर्यपूर्वक कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। कुछ कठिनाईयों के बावजूद धनागम में निरंतरता बनी रहेगी परन्तु धन के व्यय पर नियन्त्रण कर पाना कठिन होगा। 13 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वितीय स्थान में होगा। उस समय आपको कुछ राहत अवश्य मिलेगी।

रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति भी हो सकती है। चतुर्थ स्थान का राहु अचानक सम्पत्ति लाभ के योग बना रहा है परन्तु कानूनी उलझनों के भी संकेत हैं। सम्पत्ति के क्रय के मामले में जल्दबाजी न करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। 13 अप्रैल के बाद द्वितीय स्थान का गुरु परिवार में सुख शान्ति के वातावरण हेतु अनुकूल है। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। इस वर्ष किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। वर्ष के आरम्भ में आपकी माता को कष्ट हो सकता है।

17 मार्च के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप अपने पराक्रम व प्रभाव से अपने शत्रु तथा प्रतिद्वन्दियों पर नियन्त्रण करने में सफल होंगे तथा अपनी समस्याओं से निजात पाते हुए समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रख पायेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वह विवाह के योग्य

हैं तो उसका विवाह संस्कार भी हो सकता है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। 13 अप्रैल के बाद समय और अनुकूल हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं है परन्तु वर्ष के प्रारम्भ में लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में गिरावट नहीं आयेगी व मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे तथा प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करने का प्रयास करेंगे परन्तु फिर भी शारीरिक थकान, कमजोरी आदि रह सकती है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी सही रखें। यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्य ही रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शिक्षण संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद षष्ठ स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी नहीं लगी है उन लोगों इस समयांतराल में नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान का शनि आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। 17 मार्च के बाद आप के छोटी यात्राएं अधिक होंगी तथा व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होंगी।

13 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समुद्र यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी आध्यात्मिक ज्ञान और पूजा पाठ के प्रति रुचि बढ़ेगी। दान पुण्य करेंगे।

- शनिवार के दिन व्रत करें, लोहे का तवा दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें। छाया दान भी करें तथा गरीबों को भोजन करायें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर नित्य प्रति घी का दीपक जलाएं।

• बुधवार को चींटियों को दाना डालें।
• अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।

इस वर्ष 22 अप्रैल को गुरु मेष राशि में तृतीय भाव में, 17 जनवरी को शनि कुम्भ राशि में प्रथम भाव में और 22 नवम्बर को राहु मीन राशि में द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री मंगल 13 जनवरी को मार्गी हो जाएंगे और पूरे वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 4 अगस्त से 18 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में दशम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यापार में उन्नति के संकेत हैं। वरिष्ठ लोगों की सहायता लेना आवश्यक है। नौकरी करने वाले व्यक्तियोंकी पदोन्नति में रुकावटें आएंगी।

22 अप्रैल के बाद कार्य व्यवसाय के लिए समय और अनुकूल हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों को इच्छित लाभ प्राप्त करा सकती है। आपको साझेदार व जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगी।

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपको भाईयों से भी लाभ प्राप्त होगा। 22 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्य या सामाजिक में धन व्यय होगा। धन के निवेश व अन्य धन सम्बन्धी मामलों में जोखिम न उठायें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह वृद्धि विवाह या जन्म या के माध्यम से हो सकती है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

22 अप्रैल के बाद आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। जिससे समाज में आपका पराक्रम बना रहेगा। तृतीय स्थान का राहु आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगा। सामाजिक गतिबिधियोंमें आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। समाजिक उत्थान के लिए आप कोई संस्था का संचालन भी कर सकते है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।

22 अप्रैल से आपके दूसरी संतान के लिए समय बहुत उत्तमहै। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते है तो गर्भधान का उत्तम समय चल रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से किसी रोग से पीड़ित हैं तो परहेज की ज्यादा जरूरत है। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्यतः अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता है। तृतीयस्थ राहु आपके कार्य करने की क्षमता में वृद्धि उत्पन्न कर रहे हैं। इसलिए लक्ष्य बनाकर परिश्रम करेंगे तो अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरू ग्रह के दृष्टि प्रभाव से उच्च शिक्षाभिलाषी जातकोंको मनोनुकूल शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है। नौकरी के इच्छुक लोगों को अभी और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राएंकराते रहेंगे।

अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। सप्तम स्थान पर गुरू एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से व्यवसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से व्यवसायिओं को विशेष लाभ प्राप्त होगा। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है क्योंकि लग्न स्थान का शनि आपको शारीरिक कष्ट दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकते है जिससे आपका दैनिक काम-काज व पूजा-पाठ प्रभावित हो सकता है। 22 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ,अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे।

• शनिवार के दिन सुबह-सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।

• प्रत्येक मंगलवार हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।

• अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापित कर उसके सामने घी का दीपक जलाएं और निम्न मन्त्र का जप करें-

ॐ ह्रीं लक्ष्म्यै नमः।

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में लग्न भाव में और राहु मीन राशि में द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि में तृतीय भाव में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष नौकरी व व्यापार में जोखिम उठाने वाला निर्णय लेने से बचें। कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा। आप अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति के साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के साथ ही आपके कार्य व व्यवसाय में कुछ गुप्त शत्रु हो सकते हैं, जो आपके कार्यों में कुछ परेशानी डाल सकते हैं परन्तु आप अपने कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा परन्तु जोखिम उठाने वाला निर्णय लेने से बचें। वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु द्वितीयस्थ राहु आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ नहीं होने देंगे। अचानक कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है।

अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर चतुर्थ स्थान में होगा। उस समय आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण पैतृक सम्पति, गड़ा हुआ धन या ससुराल पक्ष से धन प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। समाजिक कल्याण के लिए कार्य सम्पन्न करेंगे। जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

अप्रैल से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। माता पिता सहित पुरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा है। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

यह वर्ष स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान स्थित शनि आपके स्वास्थ्य में उतार चढाव की स्थिति बनाए रखेंगे। सामाजिक गतिविधियों में व्यस्तताओं के चलते स्वास्थ्य की चिंता नहीं रहेगी और आप समय पर खान पान भी नहीं कर पाएंगे जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है।

संतुलित भोजन करें तथा अनुशासित जीवन शैली अपनाएं। लापरवाही बिल्कुल न करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें, नहीं तो अनवरत ही मानसिक अशान्ति रहेगी। सुबह जल्दी उठ कर टहलना या व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा क्योंकि सफलता प्राप्ति हेतु आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ेगी।

आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरू ग्रह की गोचरी प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी।

अप्रैल के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभुमि की यात्रा हो सकती है। द्वादश स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि आपको विदेश यात्रा भी करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से आप दैनिक पूजा करते रहेंगे। गुरू ग्रह के गोचर के बाद मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ सकता है और चतुर्थस्थ गुरू के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पुजा संपन्न करेंगे।

- नित्यप्रति सूर्य को जल दें।

• शनिवार के दिन काली वस्तुओं का दान करें।
• बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं एवं निम्न मन्त्र का पाठ करें –
ॐ गं गणपतये नमः

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि लग्न स्थान में रहेंगे व मीनस्थ राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि द्वितीय भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि पंचम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि छठे सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि पंचम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकती है, जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं, तो आप अपने साझेदार से संतुष्ट नहीं रहेंगे और आप को इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए अच्छा रहेगा।

14 मई के बाद आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। शेयर बाजार से अच्छा लाभ होगा। परन्तु राहु शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे। जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप बचत नहीं कर पाएंगे। बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें।

14 मई के बाद धनागम में निरन्तरता बढ़ जाएगी जिससे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य में धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में कुछ विशम परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं जिसके फलस्वरूप आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य में आपकी अहम भुमिका होगी। सामाजिक रूप से यह वर्ष सामान्यतः उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे, परन्तु 14 मई से गुरुग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय

काफी अनुकूल हो जाएगा।

यह समय गर्भधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा। नैसर्गिक रूप से शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। यदि वे विवाह के योग्य है तो उसका विवाह सस्कार भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीय स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव भी आपके शरीर पर पड़ेगा। 29 मार्च के बाद शनि ग्रह का गोचर भी द्वितीय स्थान में हो रहा है। उस समय के अंतराल में आप अचानक रोग ग्रस्त हो सकते हैं।

गुरुग्रह के गोचर के बाद आपका समय काफी अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए इस वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः संघर्षात्मक परिस्थितियों में आपको सफलता मिलेगी।

अध्ययन के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। विद्यार्थियों के लिए 14 मई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपको सफलता प्राप्त होगी। नौकरी के लिए कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि से विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे है। आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। 14 मई के बाद लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा, मन्त्र पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 14 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं और नित्य प्रति हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को राटी में गुड़ डालकर खिलाएं।

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें द्वादश में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु पंचम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। अतः इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव सेआपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहे हैं। अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तिओं को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। आपके उच्चाधिकारी आपको परेशान भी कर सकते हैं, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

02 जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे। जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी पर भी आपका धन खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए गर्भाधान काशुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से

पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। उस समय आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए यह समय ज्यादा खराब है। 31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट मित्र, छोटे भाईयों व जीवनसाथी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। समाज में आप का मान-सम्मान और बढ़ेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चो की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

02 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है, जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत अनुकूल नही रहेगा। लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। कभी कभी स्वास्थ्य अनुकूल रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होगा।

02 जून बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्वास्थ्य ज्यादाप्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरुजल तत्व राशि में होने के कारण कफ,खांसीया पेट से संबंधित रोग हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशमिल जाएगा। व्यावसायिक या तकनीकि शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को कुछ और दिन इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। धार्मिक यात्राओं के भी योग बन रहे हैं।

02 जूनके बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप या तन्त्र साधना के प्रति आपकी विशेष रूचि बनी रहेगीऔरदान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करे एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।अन्न दान या पीली वस्तु का दान करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।

दशा विश्लेषण

दशा विश्लेषण घटना के समय निर्धारण में दशा स्वामी की भूमिका के विषय में बताता है। कुंडली में दशा स्वामी की स्थिति के अनुसार फलादेश से अवगत कराता है। साथ ही दशाकाल में किस से सतर्क रहें व क्या उपाय करें इसका ज्ञान कराता है।

अच्छे या बुरे दशा के प्रभाव स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में समय-समय पर खट्टा-मीठा अनुभव होता रहता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की जन्मकुंडली में शुभ एवं अशुभ योग होते हैं। यदि अच्छे ग्रह की दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। दूसरी ओर यदि बुरे ग्रह की दशा चलती है तो आपके समक्ष समस्याएं, बाधा, कष्ट, पीड़ा आदि उपस्थित होते हैं।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(06/01/2005 - 06/01/2025)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 06/01/2005 को आरम्भ और 06/01/2025 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है जो दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह कन्या राशि में निम्न का तथा मीन राशि में उच्च का हो जाता है। यह कला, संगीत, ड्रामा, भावनात्मक आनन्द, स्वाद, फैशन, डिजाइनिंग तथा सुखमय, जीवन का द्योतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्मकुण्डली के षष्ठ भाव पर कारकत्व का प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है हानि, फिजूलखर्ची, कड़ी मजदूरी, अनुदान, पारिवार में फूट, धोखा, दुर्भाग्य, कैद, हत्या, कपट, पैर, बायीं आँख, शयन सुख, ऋण और विदेश प्रवास का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है जो आपके अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है तथा कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या आपको नहीं होगी। आपको सभी प्रकार का आराम और आनन्द प्राप्त होगा।

अर्थ संपत्ति :

महादशा स्वामी शुक्र द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव के कारकत्व की प्रबलित कर रहा है। इस दशा काल में आप उपार्जन तथा चल-अचल संपत्ति अर्जित करने की कोशिश करेंगे। आप अपने जन्म स्थल से दूर जा सकते हैं।

व्यवसाय :

अपने व्यावसायिक जीवन में आप एक जगह से दूसरी जगह जाते रहेंगे और एक बैरागी जीवन व्यतीत करेंगे और अन्ततः मोक्ष प्राप्त करेंगे। आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी और धार्मिक या ऐसी किसी अन्य संस्था के लिए काम करेंगे जहाँ आपकी आध्यात्मिक मानसिकता प्रबलित होगी।

परिवारक जीवन :

आप भावुक तथा विपरीत लिंग के लोगों की ओर आकृष्ट होगें। आपका पारिवारिक जीवन आनन्दमय होगा। आपके जीवन-साथी आपका सहयोग करेंगे और आप घर-परिवार के मैत्रीपूर्ण वातावरण का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह अवधि उत्तम शिक्षा के लिए अनुकूल होगी। आप साहित्यक गतिविधियां जारी रखेंगे।

अंर्तदशा :- शुक्र - गुरु
(08/03/2015 - 06/11/2017)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/01/2005 को आरंभ हुई थी और 06/01/2025 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 08/03/2015 को प्रारंभ होकर 06/11/2017 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत, परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। द्वितीय भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 6, 8,10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, धन संचित होगा, परिवार में खुशहाली होगी। प्रत्येक कार्य ईमानदारी और कानून के अनुसार करेंगे। सहकर्मियों से भी व्यवहार उचित रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(06/11/2017 - 06/01/2021)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 06/01/2005 को प्रारंभ हुई थी और वद 06/01/2025 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 06/11/2017 को प्रारंभ होकर 06/01/2021 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

एकादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 1, 5, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। आपके बहुत से कर्मचारी हो सकते हैं, आय उत्तम होगी। सरकारी नौकरी या सरकार के माध्यम से आय संभव है।

आपके मित्रों की संख्या कम हो सकती है मगर समाज में सम्मान मिलेगा। राजनीति में भी भाग ले सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करना श्रेयस्कर होगा;

• पीपल को जल अर्पित करें।
• भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
• मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(06/01/2021 - 07/11/2023)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/01/2005 को प्रारंभ हुई थी और वद 06/01/2025 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 06/01/2021 जो आपके लिए 07/11/2023 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

एकादश भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी, सत्यवादी और प्रसन्न होंगे। आपके बहुत से अनुयायी होंगे जो व्यापार की प्रगति में योगदान करेंगे। आपकी ज्ञानपिपासा और बुद्धि तीव्र होगी। ज्ञान की वृद्धि के लिए नये विषयों का अध्ययन कर सकते हैं। वैज्ञानिक खोजों में मन लगेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - केतु
(07/11/2023 - 06/01/2025)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 06/01/2005 को प्रारंभ हुई थी और 06/01/2025 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 07/11/2023 को प्रारंभ होकर 06/01/2025 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। केतु को अशुभ ग्रह समझा जाता है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है।

अष्टम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के 2रे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा हैं।

इस अवधि में आपको उत्सर्जन तंत्र की कोई व्याधि हो सकती है। आपके चरित्र में गिरावट आ सकती है या फ़िज़ूलखर्ची कर सकते हैं। दूसरों की स्त्रियों पर नज़र रखने पर फंस सकते

महादशा :- सूर्य
(06/01/2025 - 06/01/2031)

सूर्य की महादशा 06/01/2025 को आरंभ और 06/01/2031 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य एकादश भाव में अवस्थित है। सूर्य सम्पत्ति, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है जबकि एकादश भाव सभी प्रकार के लाभ, मनोकामनाओं की पूर्ति, शिक्षा तथा भौतिक सुखों का सूचक है। अतः इस दशा-काल में आपको धन, प्रभावशाली मित्रों, पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में रोगों की प्रतिरोध शक्ति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रखने के लिए आपको सात्विक और सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आप सरदर्द और हृदयगति की पीड़ा से ग्रसित हो सकते हैं। आपको अतिशयता का परित्याग करना चाहिए और जीवन के प्रति आपकी सोच सकारात्मक होनी चाहिए ताकि इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रह सके।

अर्थ :

आप भाग्यशाली होंगे और आपको पर्याप्त आर्थिक संसाधन प्राप्त होंगे। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ मिलेगा। पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है। आपको पिता से लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आप अधिक प्रयास किये बगैर आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। दशा ज्यों-ज्यों प्रगति करेगी त्यों-ज्यों आपकी आर्थिक स्थिति सुधरती जाएगी। किन्तु, आपको फिजूलखर्ची के प्रति सावधान रहना चाहिए क्योंकि आप स्वभाव से उदार हैं।

व्यवसाय :

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता और लाभ मिलेंगे। आपको अधिक परिश्रम किये बगैर सफलता मिलेगी। आप सरकारी सेवा में अच्छा करेंगे। आप बड़ी संस्थाओं, निगमों और संस्थानों में प्रबंधक के पद के लिये सर्वाधिक योग्य है। संगठन से सम्बद्ध कोई भी कार्य आपके अनुकूल होगा। रत्नों का व्यवसाय अथवा सम्पत्ति की परिरक्षा का कार्य लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोगों के कार्य-स्थान में वातावरण सौहार्द्रपूर्ण रहेगा, उन्हें अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग तथा उच्चधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों को स्व-प्रयास से धन तथा लाभ की प्राप्ति होगी। रत्न-आभूषण, धातु तथा बिजली के सामानों आदि के व्यापारियों के लिये यह दशा लाभदायक होगी।

परिवार :

आपका बच्चों से गहरा लगाव है। आपको उनसे अत्यधिक सुख मिलेगा। इस दशा-काल में आप उनके ऊपर बड़ी सीमा तक निर्भर करेंगे। आपके जीवन साथी के साथ आपके सम्बन्ध बहुत मधुर होंगे। आपके जीवन साथी को सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होंगे और उनका भाग्योदय होगा। आपकी माता को किसी अप्रत्याशित धन की प्राप्ति और धर्मशास्त्रों में उनकी रुचि हो सकती है।

आपके पिता स्वयं धनोपार्जन करेंगे, प्रसन्न रहेंगे और छोटी यात्राओं पर जाएंगे। आपके भाई-बहनों के लिये यह समय समृद्धिशाली रहेगा और आपके साथ उनके संबंध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

आपका अध्ययन उत्तम होगा और आप भौतिकी, ललित कला आदि में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। प्रशासकीय पाठ्यक्रमों और राजनीतिक इतिहास में आपकी रूचि होगी।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(06/01/2025 - 25/04/2025)

आपके लिए सूर्य की महादशा 06/01/2025 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 25/04/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आपको मान-सम्मान प्राप्त होगा। सरकार और सम्मानीय नागरिकों से मान्यता और प्रशंसा की उपलब्धि होगी। आपके मित्रों की संख्या पर्याप्त होगी। वे आपकी सहायता के लिए तत्पर रहेंगे और संभ्रांत वर्ग के विद्वान व्यक्ति होंगे। जो भी काम आप करेंगे, सफलता मिलेगी। सट्टेबाजी से या संतान के कारण धन प्राप्त होगा। मंत्रों और सिद्धियों में आपकी रुचि बढ़ेगी। जीवनसाथी की संपदा में वृद्धि होगी। व्यापार में साझेदार के साथ संबंध मधुर रहेंगे। विद्यार्थियों के लिए समय आकांक्षाओं की पूर्ति ओर परीक्षा में कीर्तिमान स्थापित करने का है। विरोधी परास्त होंगे। जीवनसाथी को मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

मसालेदार भोजन से परहेज करें क्योंकि पेट खराब हो सकता है। कैल्शियम की कमी से शरीर के नीचे के अंगों में कोई समस्या हो सकती है। इसके लिए दुग्ध, शहद का सेवन अधिक करें और अग्नि को दूध अर्पित करें। आटे, गुड़ और तांबे का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(25/04/2025 - 25/10/2025)

आपकी सूर्य की महादशा 06/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 25/10/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

चंद्रमा की अंतर्दशा में आपके भाग्य में उतार-चढ़ाव आ सकते हैं, अतः लापरवाही और अकर्मठता से बचें। परिवार में सुख-शांति रहेगी। संतान प्रगति करेगी और नाम कमाएगी। वे विभिन्न गतिविधियों में भाग लेंगे। माता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। धन और सफलता के संदर्भ में माता का यह समय भाग्यशाली रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। सेवारत जातकों के लिए समय लाभकारी है। वरिष्ठ अधिकारी आप से प्रसन्न रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को अचानक धन-सपंदा की प्राप्ति हो सकती है। स्वास्थ्य की देखभाल ठीक से करें। प्रतिद्वंद्वी आपको बदनाम करने की कोशिश करेंगे, मगर सफल नहीं होंगे। वे परिवार में झगड़ा खड़ा करने का प्रयास करेंगे। मगर उन्हें कामयाबी नहीं मिलेगी। आपको उत्तम भोजन, धन और सुविधाओं की उपलब्धि रहेगी।

गले और पाचनतंत्र से संबंधित मामूली परेशानी हो सकती है। भाग्यवर्धन हेतु चंद्र के मंत्र का जाप करें।

ऊँ सों सोमाय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(25/10/2025 - 02/03/2026)

आपकी सूर्य की महादशा 06/01/2025 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 02/03/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अंतर्दशा में आप धनी बनेंगे। परिवार के साथ समय सुखपूर्वक बीतेगा। भाग्य उत्तम रहेगा। ज्ञान-विज्ञान में रुचि रहेगी। आप अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठा सकते हैं। किसी लंबी यात्रा पर जा सकते हैं। जायदाद क्रय कर सकते हैं और वाहन की खरीद/बिक्री कर सकते हैं।

माता का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। पिता लाभकारी साझेदार से अनुबंध कर सकते हैं और अपनी जायदाद का विकास कर सकते हैं। भाई-बहनों के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी। अगर वे सेवारत हैं तो उत्तम धनार्जन करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आपकी व्यस्तता बढ़ेगी। परामर्शदाताओं की व्यस्तता और खर्च बढ़ेंगे और वे पर्याप्त यात्राएं करेंगे। व्यवसायी अचल संपत्ति खरीद सकते हैं या कुछ परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। जांघों आदि में कुछ कष्ट हो सकता है। शुभत्व की वृद्धि के लिए लाल वस्त्र, लाल दाल या लाल चंदन का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(02/03/2026 - 25/01/2027)

आपके लिए सूर्य की महादशा 06/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 02/03/2026 को प्रारंभ होकर 25/01/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। अचल संपत्ति के स्वामी होंगे। विरासत, उपहार आदि से लाभ होगा। जीवनसाथी या व्यापार के साझेदार से धन मिलेगा। सरकार से भी फायदा होगा।

परिवार में और जीवनसाथी से मधुर संबंध बनाये रखने के लिए प्रयास करना होगा। कटु वचनों से बचें। आपके पिता को सम्मान और धन प्राप्त होंगे। उन्हें अपने शत्रुओं पर विजय मिलेगी। माता को धनलाभ के अनेक अवसर मिलेंगे। भाई-बहनों के खर्चे बढ़ेंगे; वे वाहन या अचल संपत्ति खरीद सकते हैं। संतान की शिक्षा उत्तम होगी; वे नाम कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो वेतन में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं की आर्थिक स्थिति बेहतर होगी। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

दांत और मुख की समस्याओं से सावधान रहें। अरिष्ट से बचने के लिए नीले वस्त्र और सतनजा दान करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ के द्वारा ज्योतिषीय घटनाओं का ग्राफ के रूप में चित्रण किया गया है तथा ग्राफ के रूप में ही फलादेश दिया गया है।

जीवन में आने वाले समय का उतार-चढ़ाव का एस्ट्रोग्राफ के रूप में चित्रण किया गया है जिसे समझना सहज और आसान होता है। यह एक खास समय में आपकी उन्नति अथवा अवनति की मात्रा को दर्शाता है। इस एस्ट्रोग्राफ पर सरसरी दृष्टिपात कर आप पता कर सकते हैं कि आनेवाला कौन सा समय आपके लिए उपयुक्त है अथवा नहीं।

एस्ट्रोग्राफ - 2017

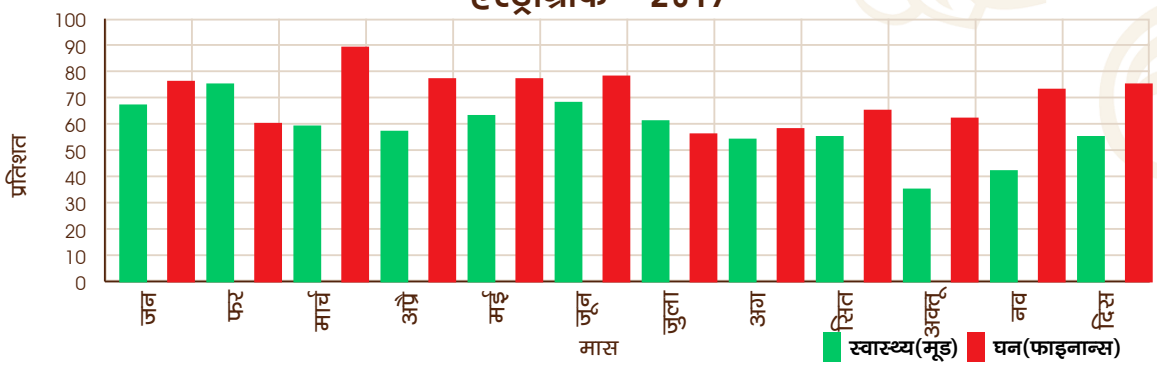

एस्ट्रोग्राफ - 2018

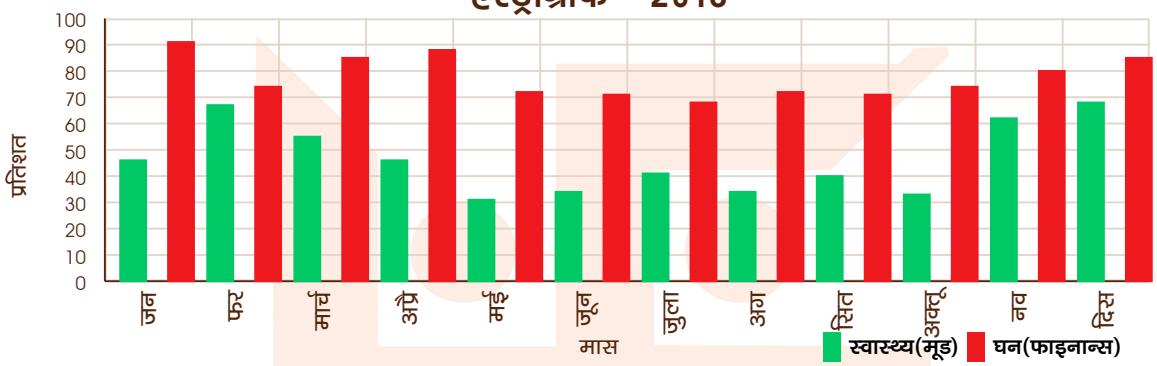

एस्ट्रोग्राफ - 2019

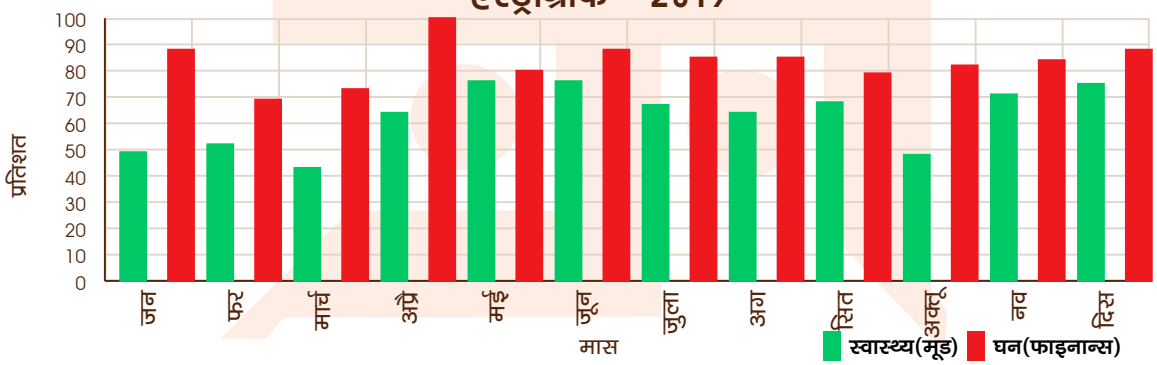

एस्ट्रोग्राफ - 2020

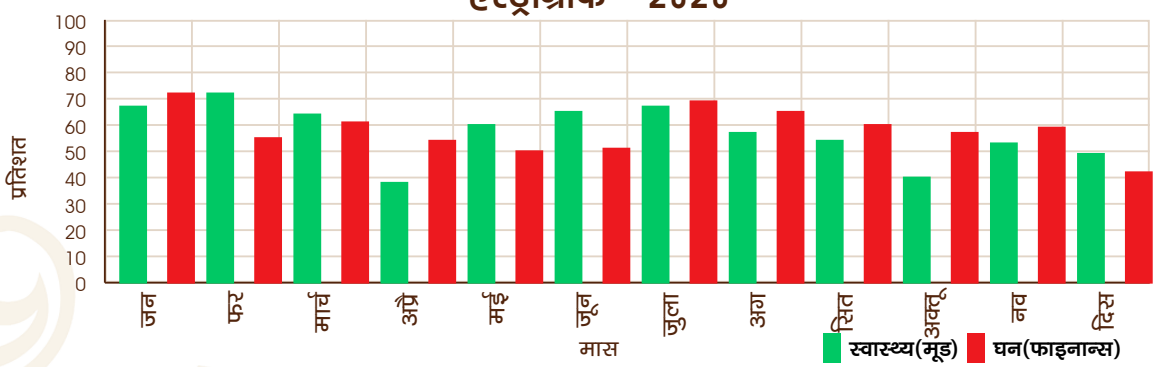

एस्ट्रोग्राफ - 2021

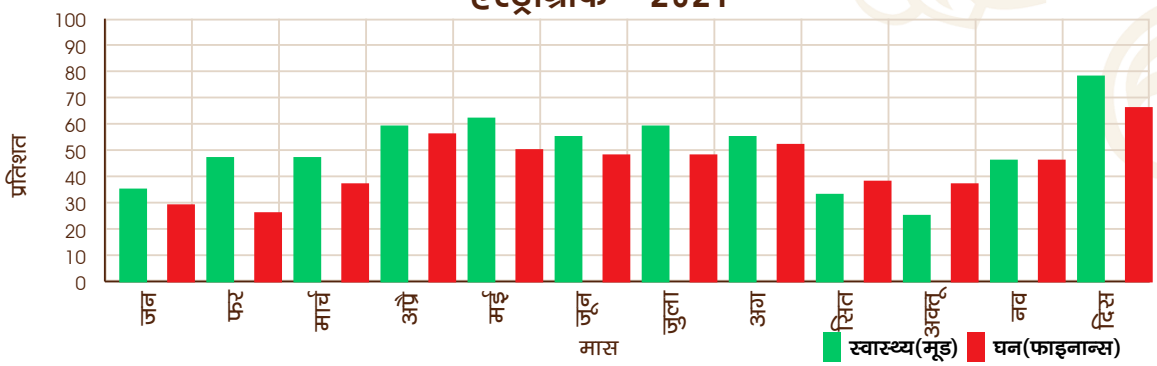

एस्ट्रोग्राफ - 2022

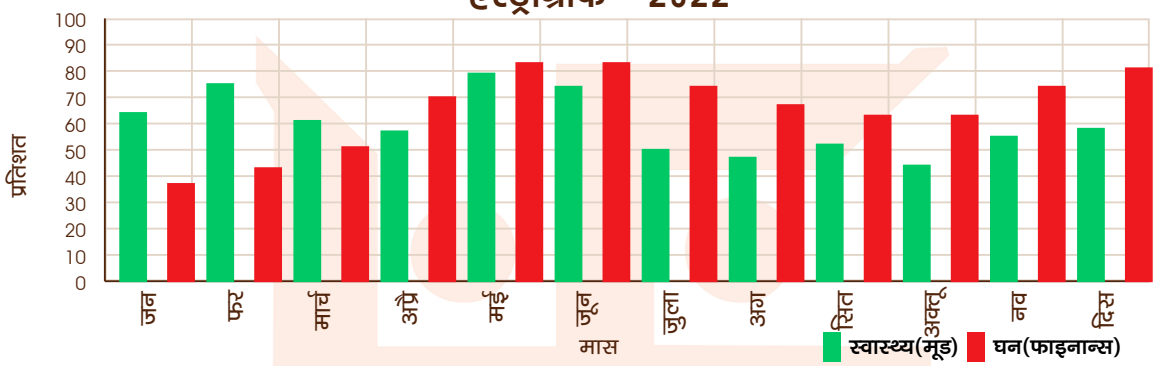

एस्ट्रोग्राफ - 2023

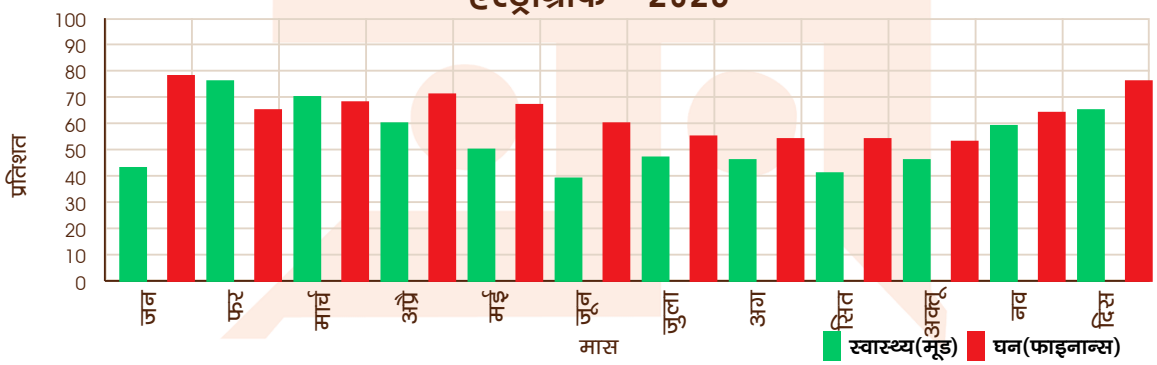

एस्ट्रोग्राफ - 2024

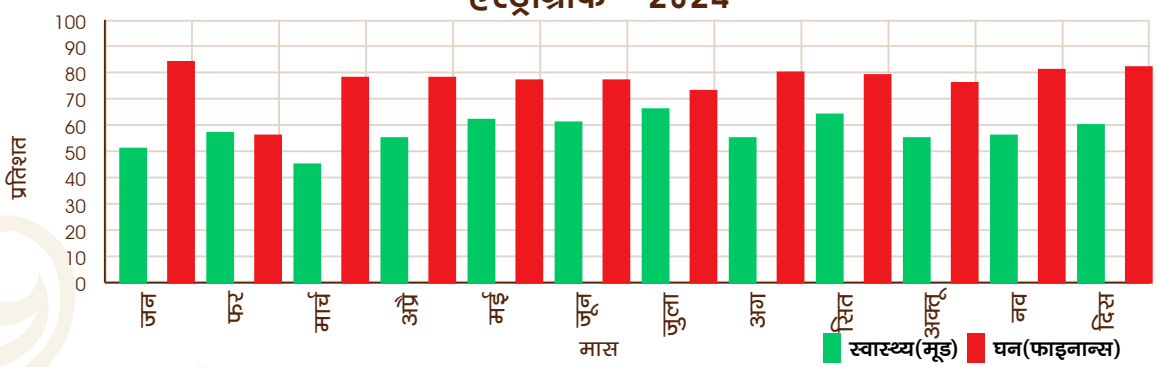

एस्ट्रोग्राफ - 2025

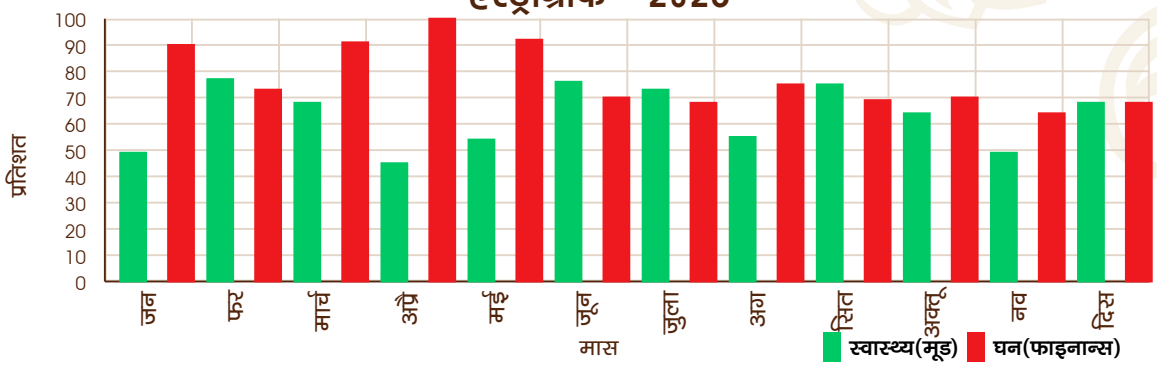

एस्ट्रोग्राफ - 2026

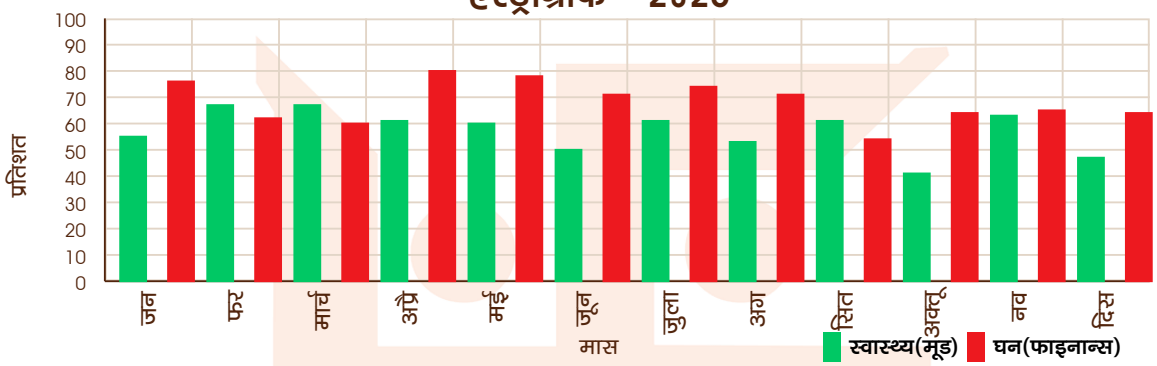

एस्ट्रोग्राफ - 2027

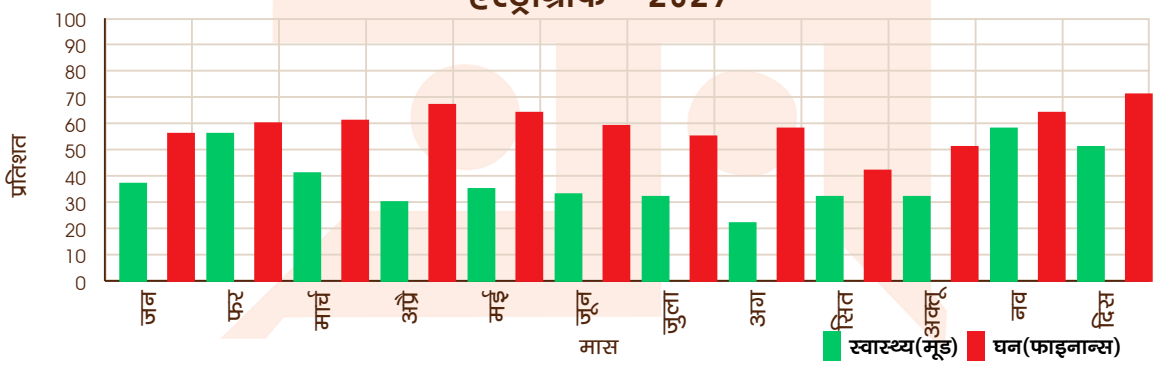

एस्ट्रोग्राफ - 2028

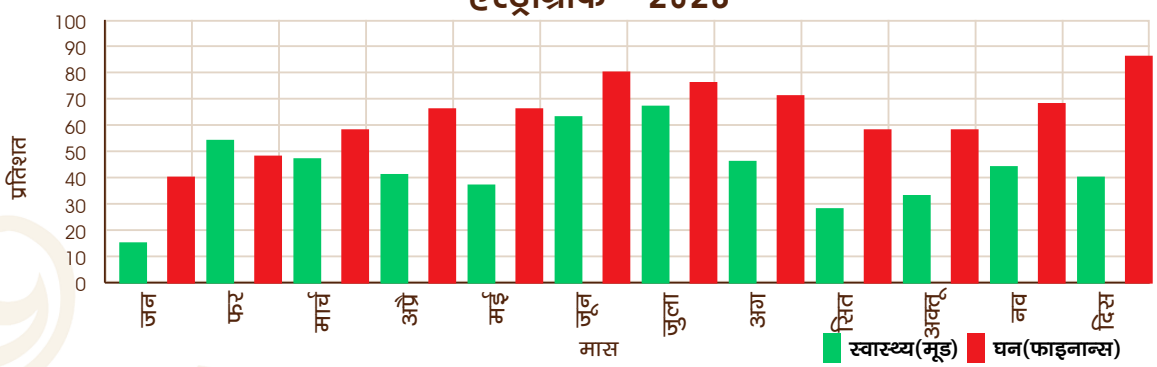

योग

जन्मकुंडली में मौजूद शुभ अथवा अशुभ योग किसी भी व्यक्ति के भाग्य निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

जन्मकुंडली में योग का निर्माण उस परिस्थिति में होता है जब किसी ग्रह, राशि अथवा भाव का संबंध किसी अन्य ग्रह, राशि अथवा भाव से खास रूप में स्थिति, दृष्टि अथवा युति के रूप में बनता है। इन योगों के शुभत्व अथवा अशुभत्व के कारण विभिन्न प्रकार की शुभाशुभ घटनाएं हमारे जीवन में घटित होती हैं। प्रत्येक कुंडली में योग का बनना 9 ग्रहों, 12 भावों, 12 राशियों एवं 27 नक्षत्रों के कारण अवश्यंभावी होता है। इन योगों का प्रभाव हर कुंडली में अलग-अलग उनकी उपलब्धता के अनुसार होता है। दुर्लभ योगों का जीवन में विशेष प्रभाव होता है।

योग

अर्द्धचंद्रयोग

सप्तर्क्षगैर्ग्रहेन्द्रैः केन्द्रादन्यत्र कीर्तितोऽर्धशशी।
सुभगाः सेनापतयः कान्तशरीरा नृपप्रिया बलिनः।
मणिकनकभूषणयुता भवन्ति योगेऽर्धचन्द्राख्ये।।
।। सारावली ।। अ. 21/श्लोक 13, 25 ।।

यदि जन्मपत्रिका में कर्मभाव एवं लग्न को छोड़कर सभी ग्रह अष्टम (मृत्यु) भाव से द्वितीय (धन) स्थान तक स्थित हों तो पंचम प्रकार के अर्द्धचंद्र योग की प्रतिष्ठा होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,चंद्र,मंगल,बुध,गुरु,शुक्र,२ योग की संभावना : 256 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में पंचम प्रकार के अर्द्धचन्द्र योग की स्थापना होती है। फलतः आप दीर्घायु दुर्घटनाओं से बंचित, भाग्यशाली, धार्मिक, तीर्थ यात्री, कई प्रकार से लाभ प्राप्त करने वाले सन्यासी प्रवृत्ति के पैतृक धन-संपत्ति से युक्त एवं बृहत परिवार के सदस्य होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्व्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

धेनु योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सान्नपान्नविभवोऽखिलविद्यापुष्कलोऽधिककुटुम्बविभूतिः।
हेमरत्नधनधान्यसमृद्धो राजराज इवराजति धेनौ।।
।। फलदीपिका।। अ.6/श्लोक 44, 46।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हों या दूसरे भाव को शुभ ग्रह देखते हों और दूसरे भाव का स्वामी उदित होकर स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होता हुआ सुस्थान में बैठा हो तो धेनु योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सुवर्ण, धन, धान्य और रत्न से समृद्ध, राजराज के समान होंगे। यहां पर राजराज के दो अर्थ हैं। 1. राजओं का राजा, 2. कुबेर के समान भाव यह है कि आप धनवान होंगे। आप विद्या, कुटुम्ब, उत्तम भोजन आदि से युक्त होंगे।

सुपारिजात योग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
नित्यमङ्गलयुतः पृथिवीशः संचितार्थनिचयः सुकुटुम्बी।
सत्कथाश्रवणभक्तिरभिज्ञो पारिजातजननः शिवतातिः।।
।। फलदीपिका।। अ. 6/श्लोक 44, 55।।

यदि जन्मपत्रिका में एकादश भाव में शुभ ग्रह बैठे हों। इस भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही हो और लाभेश अस्त न हो तथा स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बलवान बैठा हो तो सुपारिजात योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अच्छे कुटुम्ब वाले, अर्थसंचय करने से धनवान्, नित्यशुभ कार्यो में भाग लेने वाले, पुण्य कथाओं के श्रवण, भक्ति में समय प्रदान कराने वाले, विद्वान और सत्कर्म करने वाले होंगे।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

भवन नाश योग

गेहेशसंयुक्तनवांशनाथे नाशस्थिते स्यादपि गेहनाशः ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव का स्वामी जिस ग्रह के नवांश में हो और वह ग्रह द्वादश भावस्थ हो तो भवन नष्ट हो जाता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भवन का नाश हो ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु,सूर्य,शनि,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

दन्त रोग योग

वाक्स्थानपे षष्ठगते सराहौ राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा।
दन्तस्य रोगं पतनं च तेषां भुक्तौ तयोर्वा प्रवदन्ति तज्ज्ञाः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.- 3/श्लो.-113।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीयेश राहु के साथ षष्ठ स्थान में हो अथवा राहु जिस राशि में है उसके स्वामी से युक्त हो तो उसकी दशान्तर्दशा में दातों का रोग होता है तथा दन्तहीन हो जाता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जब राहु स्थित भावस्वामी की दशान्तर्दशा आएगी तब दन्त रोग होकर आपको दन्तहीन कर देगा। ऐसा प्रतीत होता है।

तालु रोग योग

तदीश्वरेणापि युतेन्दुपुत्रे सराहुकेतावरिभायुक्ते।
राहुस्थितर्क्षाधिपसंयुते वा भुक्तौ तदा तालुभवः स रोगः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-3/श्लो.-116।।

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश से युक्त बुध राहु या केतु सहित षष्ठस्थान में हो अथवा जिस राशि में राहु है उसके स्वामी से युक्त हो तो तालु स्थान में रोग द्वितीयेश की दशा में होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,गुरु योग की संभावना : 864 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उपर्युक्त ग्रहों की दशा का काल में तालु स्थान में रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : शनि,बुध,सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या

दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः।
।। जातकपारिजात ।। अ.-14/श्लो.-3।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 302-6 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश सप्तमेश और राशीश द्विस्वभाव राशि में हों तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,गुरु,सूर्य योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका दो विवाह संभाव्य है।

देश विदेश यात्रा योग

व्ययेशे पापसंयुक्ते व्यये पापसमन्विते ।
पापग्रहेण संदृष्टे देशाद्देशान्तरं गतः ।।

।। बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् ।। अ.12/श्लो.-246

यदि जन्मकुंडली में व्ययेश पाप ग्रह से युक्त हो और व्यय भाव में पाप ग्रह हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि व्यय भाव पर हो तो जातक देश विदेश में जाने वाला होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप देश विदेश में भ्रमण करने वाले होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

शुभकर्त्तरी योग

व्ययस्वगैः शुभैर्विलग्नात्सौम्यग्रहकर्त्तरी च ।।
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 5 ।।

यदि लग्न से द्वादश एवं द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हों तो शुभकर्त्तरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में शुभकर्त्तरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान, रूप, शील और गुण से सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ।।

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।

उभयचारिक योग

''व्ययधनयुतखेटै दिनेशादुभयचारिकयोगः।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्म काल सूर्य से द्वादश और द्वितीय भाव में ग्रह स्थित हो तो "उभयचारिक" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र,गुरु,राहु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "उभयचारिक" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप सहनशील, स्थिर बुद्धिवाले, समृद्धिशाली, बलशाली, एकहरा शरीरवाले, मध्यमकद के सीधी दृष्टिवाले, धन-धान्य एवं लक्ष्मी से युक्त होंगे।